गुजराती स्वरव्यंजनप्रक्रिया

[लंडननी रॉयल एशियाटिक सोसायटी'ना सने १९२१ ना ३-४
अंकमांना प्रो. आर. एल. टर्नरना Gujarati Phonology
नामना निबंधनो अनुवाद]

अनुवादक

केशवराम काशीराम शास्त्री

[गुजराती भाषाना प्राध्यापक – उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग –
गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी – अमदावाद]

["भारतीय विद्या", भाग ३, अंक १ नी अनुपूर्ति]

भारतीय विद्याभवन

मुंबई

वि. सं. २०००] [मूल्य १-४-०

प्रकाशक – जयन्तकृष्ण ह. दवे. ऑनररी रजिष्ट्रार भा. वि. भवन, हार्वे रोड, मुंबई. ७.
मुद्रक – रामचंद्र येसु शेडगे, निर्णयसागर प्रेस. २६।२८ कोलभाट स्ट्रीट, मुंबई. २.

गुजराती स्वरव्यंजनप्रक्रिया

[जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटीना सने १९२१ ना १-२ अंकमांना प्रो. आर. एल. टर्नरना Gujarati Phonology नामना निबंधनो अनुवाद]

अनुवादक

केशवराम काशीराम शास्त्री

[गुजराती भाषाना प्राध्यापक — उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग — गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी — अमदाबाद]

["भारतीय विद्या", भाग ३, अंक १ नी अनुपूर्ति]

भारतीय विद्याभवन

बंबई

वि. सं. २०००] [मूल्य १-४-०

गुजराती स्वरव्यंजनप्रक्रिया

[लंडननी 'रोयल एशियाटिक सोसायटी'ना सने १९२१ ना ३-४
अंकमांना प्रो. आर. एल. टर्नरना Gujarati Phonology
नामना निबंधनो अनुवाद]

अनुवादक

केशवराम काशीराम शास्त्री

[गुजराती भाषाना प्राध्यापक – उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग –
गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी – अमदाबाद]

["भारतीय विद्या", भाग ३, अंक १ नी अनुपूर्ति]

भारतीय विद्याभवन

बंबई

वि. सं. २०००]

[मूल्य १-४-०

बे बोल

नेपाळी शब्दकोशथी हिंदुस्तानना भाषाशास्त्रीओमां उच्च स्थान अने मान पामी चूकेला, लंडन युनिवर्सिटीना पौरस्त्यभाषाओना अध्यापक प्रो. आर. एल. टर्नरे गुजराती भाषाना जीवंत स्वरूपनो अभ्यास करी लखेला Gujarati Phonology नामना निबंधनो आ अनुवाद, ए विद्वाने गुजराती भाषानी साची अने सबळ रीते करेली शास्त्रीय मीमांसानो गुजराती विद्वानोने परिचय कराववा मारा तरफथी करवामां आव्यो छे. आ रीते पण गुजराती भाषानी करेली तेमनी सेवानुं ऋण हुं चूकवी शकतो होउं तो ते मारे माटे आनंदनो विषय छे. आ निबंधमां ए विद्वाननी महेनतनो खंडे खंडे परिचय मळशे. गुजराती भाषा आवा विद्वाननी मातृभाषा होय अने तेने गुजराती भाषाना जीवंत स्वरूपनो प्रत्येक पळे परिचय होय तो? जे कांई क्वचित् समझफेर थयेली छे, ते भाग्ये ज रहेवा पामत.

एमणे बतावेली दिशा गुजरातना विद्वानो सामे प्रत्यक्ष थाय छे. ए राजमार्ग उपर मातृभाषाना जीवंत स्वरूपनो अभ्यास करवानी सुविधा मळी छे; मने तो जरूर घणो लाभ थयो छे. मने नवी नजर मळी छे. ए नजरे काम करवानो मारो अभिलाष प्रभु पूरो पाडशे, एवी मने संपूर्ण श्रद्धा छे.

आ अनुवाद लडाईने कारणे स्वतंत्र पुस्तकारे छापी शकाय तेम नथी. ए माटे प्रो. टर्नरनी रजा मेळववानुं बनी शक्युं नथी. लडाई पछी ए आशा परिपूर्ण थशे.

आ अनुवाद 'भारतीय-विद्या'मां छापवानी अनुकूळता करी आपवा माटे आचार्य मुनि श्री जिनविजयजीनो उपकार थयो छे. आ विषयपरत्वे गुजरातीभाषा उपर पहेलुं ऋण प्रो. टर्नरनुं अने बीजुं आ रीते आ० मुनि श्री जिनविजयजीनुं छे. ए बंने व्यक्त करतां हुं कृतकृत्यता अनुभवुं छुं.

मीठाखळी, अमदावाद
ता. ६–९–४४

केशवराम का. शास्त्री

अनुक्रम

*

गुज़राती स्वरव्यंजनप्रक्रिया*

मूळ-इंग्रेजी-लेखक—प्रो. आर. एल. टर्नर

[अनुवादक—श्रीयुत केशवराम का० शास्त्री]

*

उपोद्‌घात

§१. भाषाने लगता कोई पण क्षेत्रमां होई शके तेटला ज प्रमाणमां कदाच हिंदमां पण घणा जूना समयथी बोलीओनो† बहोळा प्रमाणमां भेळ-सेळ आपणी नजरे पडे छे. एवी परिस्थिति क्वचित ज ऊभी थई छे के जे स्पष्ट रीते जुदी पडती संख्याबंध भाषाओने पोते वारंवारनी चढाईओ, ज्ञबरां लश्करोनी हिलचाल, दूर-दूरना भागोमांथी धार्मिक तीर्थस्थानोमां यात्राळुओनां टोळेटोळांनुं आकर्षण, असंख्य साधु संन्यासीओनुं दूरदूर सुधी पर्यटन, अहींतहीं फरता भाटचारणोनी अजाण लोको उपर असर, उत्तर दिशानां मोटां मेदानोमां चोख्खी दोरी शकाय तेवी कुदरती हदनो अभाव, राज्योनी परस्पर अविरत अथडामण, एक वार एक प्रांत आ राजकीय विभागमां होय तो बीजी वार ते पेला राजकीय विभागमां होय—आ बधी परिस्थितिओए भाषामां बहोळा प्रमाणमां बहारना शब्दोने दाखल करवानुं, बहोळा प्रदेशमां भाषाने लगता सर्वसामान्य फेरफारो लंबाववानुं अने सर्वसामान्य मिश्र भाषाओने जन्म आपवानुं कार्य कर्युं छे; ते भाषाओमांनी उत्तर अने मध्य हिंदना समग्र भागमां भिन्न भिन्न अंशोमां बोलाती अने समझाती हालनी हिंदुस्तानी भाषा एनुं अदलोअदल उदाहरण छे.

अमुक चोक्कस समये अमुक चोक्कस प्रजा बोलती होय ते भाषानुं तादृश चित्र मेळवी आपे तेवा कोई पण लिखित पुरावा उपर विश्वास राखवानुं आ प्रकारनी परिस्थिति अशक्य बनावी मूके छे. तेनुं ध्यान डॉ. जे. ब्लॉके अत्यंत स्पष्ट रीते आप्युं छे.[१] आनुं परिणाम ए आव्युं के वेदमां घणा के थोडा अंशे रजू थयेली मूलगत भाषाथी अर्वाचीन भारतीय आर्य भाषाओनो मुख्यत्वे तफावत बतावनारा वाग्विकारो (Sound-changes) देशना वधु मोटा भागोमां सामान्य रीते मळी आवता हता; अने ऋ अथवा तो क्ष ना भिन्न भिन्न विकासो जेवा तफावतो शब्दोनी

[* लंडननी 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी'ना 'जर्नल'ना सने १९२१ ना ३-४ अंकमां GUJARATI PHONOLOGY ए मथाळे लखेला महत्त्वना लेखनो आ अनुवाद, गुजराती भाषानी स्वरव्यंजनप्रक्रियानो अभिनव रीते ख्याल आवे ए उद्देशे, करवामां आव्यो छे. मूळ लेखके लेखननी भाषाने बदले बोलाती जीवती भाषानो परिचय आपवा प्रयत्न कर्यो छे, ए एनी विशिष्टता छे. एमां मतभेदने अवकाश छे. तेवां आवश्यक स्थानो तरफ क्वचित् लक्ष्य दोरवानो प्रयत्न थशे. विशेष तो स्वतंत्र प्रयत्न वखते थशे. —अनुवादक]

† आ अनुवादमां dialect ने स्थळे सर्वत्र "बोली" शब्द प्रयोज्यो छे, जे कोई पण एक भाषा (language)नी पेटाबोलीनो ज अर्थ बतावे छे. —अनुवादक

परस्परनी लेवडदेवडथी, जेम वहेला युगमां तेम छेक आ युगमां पण, एवा गोटे चडी गया छे के घणा दाखलाओमां एना इतिहासने उकेली शकवानुं ज तद्दन अशक्य बनी गयुं छे.

§ २. गुजरातीनी वात करिये तो ते एक भाषा छे एटलुं तो आपणे जोई शकिये छिये; अने पोतानी ए भाषा छे, एवुं तेना बोलनाराओने छेल्लां केटलांक सैकांओथी लाग्युं छे ज; अने स्पष्ट हदवाळा चोक्कस प्रदेशमां ध्यानमां आवी शके तेटला समयने माटे ए बोलाती आवी छे. साथोसाथ आ प्रदेशे तेवा चोक्कस समय माटे राजकीय एकतानो पण अनुभव कर्यो छे.[२] गुजराती एनी उत्तर सरहदे अत्यंत निकट जोडायेली मारवाडी भाषानी साथे एकरूप बनी जाय छे, तेम छतां तेनी वायव्य सरहद उपर ओछी वस्तीवाळुं कच्छनुं रण सिंधी भाषा साथेना मोटा समागममांथी गुजरातीने जुदी पाडी नाखे छे. एनी नीचे दक्षिणमां जतां समुद्र आवे छे. पूर्वमां, निकट रीते जोडायेली भीली बोलीओ बोलनारी जंगली प्रजा पासेथी गुजरातनी वधु संस्कारी प्रजाए बहोळा प्रमाणमां शब्दभंडोळ लीधुं होय तेम लागतुं नथी. अने दक्षिणमां भाषाने लगती सारी रीते स्पष्ट थती रेखा गुजरातीने पडोशनी मराठीथी जुदी पाडी बतावे छे.[३]

§ ३. गुजरातीना वधु आ बाजू आवता इतिहास माटेना लिखित पुरावाओ जूनानी साथे तुलना करतां संपूर्ण छे. बहोळुं काव्यसाहित्य नरसिंह महेता (जन्म सने १४१३)-ना समय सुधी जाय छे,[४] ज्यारे डॉ. टेस्सिटोरीए आपणने जाणीती करेल, ते जेने **जूनी पश्चिम राजस्थानी** कहे छे ते अने ते जेने गुजराती अने मारवाडी ए बेउनी माता माने छे, ते भाषामां लखेला ग्रंथो आपणने इ. स. १३०० सुधी लई जाय छे. एथी पूर्वे जतां, "शौरसेन अपभ्रंश" नामनी एक साहित्यकीय भाषानुं आ० हेमचंद्र वर्णन आपे छे, जे भाषा गुजराती भाषाना प्रदेशमां केटलांक सैकांओ पूर्वे बोलाती भाषा उपरथी कदाच स्थापित थई होय.[६] तेणे देशी शब्दो (एटले के

१ La formation de la langue marathe पृ. १-३७

२ बॉम्बे गेझेटियर, ग्रं. १, भा. १

३ भारतीय भाषा-समीक्षा (ग्रियर्सन ग्रं. ९, भा. ३, पृ. ३२४)

४ इन्डियन एन्टिक्वरी, ग्रं. २४, पृ. ७४. नरसिंहना ग्रंथोनी भाषा मोटा प्रमाणमां अर्वाचीन बनी गई छे.

५ एजन, ग्रं. ४३-४४

६. प्रो. टर्नर अहीं ब्लोकना La formation de la langue marathe-पृ. ३१ ना निर्देशने अनुसरी आ० हेमचंद्र जे अपभ्रंशनुं व्याकरण आपे छे ते अपभ्रंश शौरसेन अपभ्रंश छे एम अहीं कहे छे. ग्रियर्सन वगेरेनी पण तेवी ज मान्यता छे. पण खुद आ० हेमचंद्रे पोताना अपभ्रंशने ए शौरसेन अपभ्रंश छे, एवुं कह्युं नथी. ए मात्र एटलुं कहे छे के-

प्रायोग्रहणाद्यस्यापभ्रंशे विशेषो वक्ष्यते तस्यापि क्वचित् प्राकृतवत् शौरसेनीवच्च कार्यं भवति।

जेमांथी तरी तो ए आवे छे के १ अपभ्रंश, तेनां विकल्पे २ प्राकृत अने ३ शौरसेनी जेवां रूपो, मळी ३ रूपो थाय. अपभ्रंश व्याकरणने अंते पण अपभ्रंशना विशेषनुं निरूपण कर्या पछी **'शौरसेनीवत्'** ए ४४५ मुं सूत्र जणावी तेणे **'अपभ्रंशे प्रायः शौरसेनीवत् कार्यं भवति'** कह्युं

सामान्य नियमोथी संस्कृत भाषामांथी प्राकृत शब्दो व्युत्पन्न थया समझावी न शकाय तेवा शब्दो) एकठा कर्या, जेमांना घणा खरा शब्दो निःशंक रीते ते प्रदेशनी लोकसामान्य भाषाना हता. ते पूर्वे गुजराती भाषाना विकासमां पूर्वना रूपनी छाया शौरसेनी प्राकृतमां पडेली मळे छे; जोके अहीं पोतानी पाछळ साहित्यकीय भाषा तरीके विशाळ इतिहास धरावती अने तेथी ज कोई पण बोलाती बोली उपर जेनी स्थापना भाग्ये ज करी शकाय तेवां उछीनां तत्त्वोथी भरेली भाषा साथे आपणे काम लेवानुं छे.

§४. सर जी. ए. ग्रियर्सन एम कहे छे के गुजराती भाषा तरीकेनी जे केटलीक लाक्षणिक विशिष्टताओ धरावे छे, तेना जवाबदार इ. स. ४००–६०० आसपास चडी आवेला गुर्जरो छे; केम के ए कहे छे के–"ए घणी रसप्रद वात छे के पंजाब (के ज्यां तेओना नाम उपरथी गुजरात अने गुजरानवाळा ए नामे बे परगणां आवेलां छे, त्यां)नी भूमिमां जे प्रमाणे एकरूप थई चूक्या छे, ते प्रमाणे ज्यां ज्यां तेओ ते ते देशनी बाकीनी प्रजा साथे एकरूप नथी थया, त्यां त्यां तेओ पूर्व राजस्थानी अने गुजराती भाषानी साथे गाढ संबंधवाळी एक ज भाषानी कोई प्रांतीय बोली बोलता सदैव मालूम पडे छे. स्वातना गुजरोनुं व्याकरण जेपुरना राजपूतोना व्याकरण जेवुं ज लगभग छे."

आगळ चालतां, गुजरो गुजरातमां घणी सारी संख्यामां आवी वस्या देखाय छे. पं. भगवानलाल इंद्रजी लखे छे–"गुजरातनी समग्र हिंदु प्रजामांनी लगभग चोथा भागनी प्रजा लेउवा अने कडवा कणबी (गुजर जात) छे, अने छट्ठी सातमी तेम ज आठमी सदीओमां त्रण गुजर राजाओए आखा प्रांतने पोतामां वहेंची लीधो हतो; आ वात ए चोख्खुं करी आपे छे के गुजरात प्रांते पोतानुं नाम केवी रीते गुजर जाति उपरथी मेळव्युं."[८]

छे. आनो अर्थ ए स्पष्ट छे के जे विशेषो तेणे कह्या ते बाद करतां बाकीनुं कार्य शौरसेनी जेवुं थाय; एटले के मुख्यत्वे त नो अ न थाय तेवे प्रसंगे त नो द थाय. आ एक मुख्य विकार माटे समग्र अपभ्रंशने **शौरसेन** न कही शकाय; तेम "शौरसेन अपभ्रंश" नाम कोई अपभ्रंशनुं कदी जाणवामां आव्युं नथी. आ० हेमचंद्रनो "विशेष"वाळो अपभ्रंश "शौरसेन" करतां पोताना देशनो एटले के **"गौर्जर"** वधु संभवे छे; अने सोलंकीओना शत्रु भोजे सरस्वतीकंठाभरणमां **अपभ्रंशेन तुष्यन्ति स्वेन नान्येन गौर्जराः'** ए रीते जे टकोर करी छे ते सोलंकीओना गुरु आ० हेमचंद्रना अपभ्रंशनुं शुं नाम होई शके तेनो ख्याल आपे छे. एटले के आ० हेमचंद्रनो अपभ्रंश **गौर्जर अपभ्रंश** छे, नहि के **"शौरसेन अपभ्रंश."** अने शौरसेन अपभ्रंश ए नाम ज साचुं नथी. जे उद्देश लक्ष्यमां लई शूरसेन प्रदेशना अपभ्रंशने ते नाम आपवामां आवे छे ते तो "आभीर अपभ्रंश" होवानी शक्यता छे. समग्र प्राकृतोना मूळमां शौरसेनी छे, एने वळी एकलो अपभ्रंश क्यां होय? एटलुं खरुं के गौर्जर अने आभीर अपभ्रंशोमां खूब ज साम्य छे, जेमांथी गुजराती अने व्रज ए बोली अनुक्रमे ऊतरी आवी छे. –अनुवादक

७ भारतीय भाषा–समीक्षा–ग्रं. ९, भा. १, पृ.–३२३ सरखावो. बेइलीनो Himalayan Dilacts.

८ बोम्बे गेझेटियर, ग्रं. १, भा. १, पृ. ५

गिरनारना अशोकना उत्कीर्ण लेखोनी परीक्षा उपरथी पण ते ज निर्णय उपर आवी शकाय छे के ते समये आ प्रदेशनी भाषा गुजराती भाषानी सीधी पूर्वज नहोती. आजनी दृष्टिए देखाता बोलीने लगता तफावतो आपणे ज्यां ओळखी लइये तेवां बे स्थानो–ऋ नी अने क्ष नी प्रक्रिया–मां आ शिलालेखनी भाषा गुजराती करतां मराठी साथे वधु मेळ खाय छे; मुख्यत्वे ऋ ने स्थाने अ मळी आवे छे (अछा भति वढि भतक दढ कत कच मग मगव्या सुहृदय उसट विस्तत व्याहत, अपवादरूपे परिपुच्छा वुत मां उ); क्ष ने स्थाने ओछा चोक्कसपणे च्छ (अछाति छनति छुदक संछाय अछा; ज्यारे इथीझखमहामाता खमितवे संखितेन मां ख).[९] त्यारे ऊलटुं गुजराती ऋ >इ, उ अने क्ष > क्ख एवी मुख्य प्रक्रिया आपे छे.

तेथी एवुं बन्युं होय के ते जमानामां मराठीनी पूर्वज बोली उत्तर प्रदेशमां वधु ऊंचे प्रसारमां होय अने पछीथी तेने गुजरातीनी पूर्वज बोली बोलनाराओए नीचेना प्रदेशमां (दक्षिण बाजू) धकेली मूकी होय. पं. भगवानलाल कहे छे के–"इ. स. ८८८ ना राष्ट्रकूट ताम्रपत्र प्रमाणे उत्तरमां छेक तापीने कांठे वरियाव सुधी कोंकणनो प्रदेश हतो, तेथी एम लागे छे के महीनी दक्षिणे आवेला लाट प्रदेशने (पण) गुजरात नाम लागु पाडवामां आव्युं ते मुसलमान राज्यकाळमां."[१०]

छेल्ले, गुजरो रतलाम–दाहोदने मार्गे पूर्व तरफथी गुजरातमां दाखल थयेला धारवामां आवे छे ए जोतां ए खास नोंधवा जेवी वात छे के उत्तर तरफनी गुजराती बोली च छ, ज झ ए तालव्य वर्णोने स अने ज़ (z)थी रजू करे छे, जे मराठीमांना छ >स ना विकासनी याद आपे छे.

व्याख्याओ

§५. भाषामां उत्क्रमणनो क्रम चालु होय छे छतां अनुसंधान रहे, ए खातर तेने जुदा जुदा युग प्रमाणे विभक्त करवो, ए सगवड भरेलुं थई पडे छे. हिंदनी अर्वाचीन संस्कृतजन्य भाषाओना विकासने लगता जुदा जुदा युगोनी, नीचे वात करती वेळा, नीचे मुजबना संकेतो वापरवामां आवशे.

Indo European–**भारत-युरोपीय (भायु.)** आपणा समग्र भाषामूळनी तुलनात्मक भाषाकीय एकताना समयनो ख्याल आपे छे;

Arya–**आर्य (आ.)** इरानी अने भारतीय (संस्कृतजन्य) शाखाओनी एकताना समयने बतावे छे.

Primitive Indian–**आदिम भारतीय (आभा.)** हिंदनी आर्य बोलीओनी एकताना एवा समयनो निर्देश करे छे के जे समये वाग्विकासनी भूमिका ऋग्वेदनी भाषामां सामान्य रीते निर्दिष्ट स्वरूपने पामी चूकी हती.

Middle Indian–**मध्यकालीन भारतीय (मभा.)** घणी खरी हिंदनी भाषाओमां व्यंजनसमूहोना पूर्व-परवर्ण-सादृश्य (assimilation)नो समय अने व्यंजनसमूहोनी जोडाक्षरहीन स्थिति(simplification)नो समय एटले के इ. स. १३००

---

९. सेनार्ट, ग्रं. २, पृ. ३३० अने ३३३

१० बॉम्बे गेझेटियर, ग्रं. १, पृ. ५

पूर्वेना कोई अवधि सुधीनो ते बे वच्चेनी भूमिकानो ख्याल आपे छे. ऋग्वेद, पालि ग्रंथो, अशोकना अने ते पछीना उत्कीर्ण लेखो, प्राकृत अने अपभ्रंशना अनेक ग्रंथो अने केटलेक अंशे साहित्यकीय संस्कृते बोलाती भाषाओनी असरने लीधे जे विकारो अपनाव्या तेमां दाखल थई गयेला संख्याबंध चलणी थई चूकेला शब्दोमां आ भूमिकाना अवशेषो मळी आवे छे.

Modern Indian -- **अर्वाचीनभारतीय** (**अर्वाभा.**) बेवडा व्यंजनो छूटा पडी जई एकनो लोप थये एकवडो (simplified) बनी चूक्या पछीनी भूमिकानो निर्देश करे छे, के जे स्थिति गुजरातीमां इ. स. १३०० लगभगथी थवा पामी छे.

Old Western Rājasthānī - **जूनी पश्चिम राजस्थानी** (**जूपरा.**) गुजराती अने राजस्थानीनी भाषाने लगती तुलनात्मक एकतानी भूमिकानो ख्याल आपे छे.

बीजा ज कुळनी हिंदनी बीजी भाषाओ-जेवी के द्राविड-थी हिंदनी आर्य भाषाओनो भेद बताववो आवश्यक हशे त्यां Indo Aryan - **भारतीय आर्य (भाआ)** संकेत वापरवामां आवशे.

आ भूमिकाओमांनी कोई पण भूमिका भाषाने लगती संपूर्ण अने चोक्स एकता बतावी शकती नथी, एथी आवा प्रकारनी विगतोमां खूब वजन आपी शकाय तेम नथी. जे प्रमाणे मोडेथी आर्य भूमिकामां बोलीना तफावतो होवा जोइये, ते ज प्रमाणे **भारत-युरोपीय** भूमिकामां बोलीना तफावतो हता. हिंदमां चडी आवेली आर्यप्रजा एक ज प्रकारनी भाषा बोलती एक ज यूथ तरीके हिंदमां दाखल थई न हती, पण जुदे जुदे गाळे जुदी जुदी बोलीओ (आपणा जूनामां जूना अवशिष्ट नमूनारूप-ऋग्वेद-मां आ बोलीओनुं मिश्रण जोवामां आवे छे.) बोलतां जुदां जुदां यूथोमां आवी हती; परंतु एटलुं खरुं के **आदिम भारतीय**ना सामान्य शीर्षक नीचे वर्गणी थई शके तेटली समानता धरावती बोलीओ ए हती. **मध्यकालीन भारतीय** ए संकेतमां, अलबत्त, समय अने स्थाननुं अंतर धरावती जुदी जुदी अनेक बोलीओनो समावेश थाय छे. **जूनी पश्चिम राजस्थानीना** ग्रंथोमां गण्य अंतरना बोलीने लगता तफावतनुं दर्शन करी शकाय छे; ज्यारे अनेक (प्रांतीय) बोलीओना मिश्रणथी ऊभी थयेली साहित्यकीय भाषा गुजरातीना प्रदेशमां बधे केळवायेला लोको प्रयोजे छे अने समजे छे, एनो अपवाद करिये तो, अर्वाचीन गुजरातीमां पण आपणे भाषाने लगती एकताने पामी शकता नथी.

उछीना शब्दो (Loan Words)

§ ६. मात्र वर्गणीनी सरळता खातर (एमां सिद्धांतने लगता भेदनो प्रश्न नथी), उछीना शब्दोने त्रण यूथमां विभक्त करी शकाय: (अ) समान काळे बोलाती हिंदनी बीजी भाषाओमांथी आवेला; (आ) साहित्यकीय भाषाओमांथी आवेला अने (इ) परभाषाओमांथी आवेला.

अ

§ ७. उपोद्‌घातमां बतावेलां कारणो प्रमाणे हिंदमां आर्यो आव्या त्यारथी मांडीने जुदी जुदी इन्डो भारतीय आर्य भाषाओ वच्चे खूब मोटा प्रमाणमां पारस्परिक शब्दविनिमय थतो आव्यो छे. अशोकना उत्कीर्ण लेखोमां आनी स्पष्ट छाप पडी छे, ज्यां ते राजभाषा सिवायनी बीजी भाषामां शासनो अशुद्ध रीते रजू थयां तेथी ज मात्र एम थयुं एवुं नथी; ए स्पष्ट छे के बोलीने लगता विभिन्न विकारोना आवा प्रकारना मिश्रणने रजू करता शब्दो एना ए उत्कीर्ण लेखमां मळी आवे छे; दाखला तरीके आभा. क्ष ने स्थाने क्ख अने छ बंने, अथवा आभा. ऋ ने स्थाने इ अने अ बंने. आ समयनी राजकीय परिस्थिति खास करीने लेखनगत धीरधार अने सामान्य भाषाओना अचानक ऊगमने अनुकूळ हती. बोलीओना एक यूथमां थयेला शब्द-रूपोना विस्तारनां दर्शन साहित्यकीय भाषाओमां थाय छे. दाखला तरीके, जाणीतुं छे ते प्रमाणे वेदना समयथी मांडी, साहित्यकीय भाषामां रहेला शब्दोना मुख्य देह करतां वधु आगळ वधेली वाग्‌विकासनी भूमिकामां संख्याबंध शब्दोए बोलचालनी भाषाओमांथी साहित्यकीय भाषामां रस्तो (प्रवेश) करी लीधो छे. सामान्य रीते बोलतां, बोलीने लगता आ शब्दो जेम जेम साहित्यकीय भाषाओमां वधु अने वधु प्रवेश करता जाय छे, तेम तेम बोलचालनी भाषाओमां तेओनुं विस्तरण मोटुं अने मोटुं सिद्ध थतुं जाय छे. आ प्रमाणे, दण्ड-(ऋग्वे.) अने घट-(उप.)-दंत्यना स्थानमां द्र अने ऋत् नो मूर्धन्य थवानी प्रक्रिया, कोठ (पालि.)—बेवडा व्यंजननुं आटलुं वहेलुं जतुं रहेवुं ए प्रक्रिया भारतीय आर्य भाषाओमांनुं सार्वत्रिक विस्तरण छे. बोलीने लगता अने तद्दन सामान्य आ भारतीय उक्तीना शब्दोना बीजा दाखला (नीचे) १८,४१,४२ ए खंडोमां मळी आवशे. पण (आ जातनुं) उक्तीना लेवानुं कार्य—परिस्थिति खूब अनुकूळ होय छे तेवा चोकस प्रसंगोए तो निःशंक वधु सामान्य रीते—भाषाने लगती दृष्टिए आवी रहेला हिंद जेवा प्रदेशमां कदी अटकतुं नथी. आ प्रमाणे आदि श्रुति उपर स्वरभार धरावनारी मराठी जेवी भाषामांथी गुजरातीमां आपणने शब्दो मळ्या छेः जेवा के अळतो (अलक्त-), तिरछुं (तिरश्च-), पालखी (पर्यङ्क-); जेमां छ नो स थयो छे तेवो ऊस (इक्षु)-शेरडी; हिंदी के एवी बीजी बोलीमांथी ज्यां व नो ब थाय छेः बचवुं (प्रा. वच्चइ), बचाव, बजवुं (वाद्य-), बजाव-वुं, बास (वास-), बिछानुं (विच्छादन-), चोबो (चतुर्वेद-); जेमां बेवडा व्यंजनो रहेवा पाम्या छे तेवी वायव्यप्रांतीय भाषामांथीः बच्चुं, मच्छी, मच्छर; जेमां म् नो वँ थाय छे तेवी भाषामांथीः गहुं (गोधूम-), गोसाइं (गोस्वामिन्-), भूइं साथोसाथ भूमी (भूमि-).

आ

§ ८. पोते साहित्यकीय भाषा थई त्यारथी मांडीने (अने खुद ऋग्वेदमां एवां केट-लांय सूचनो छे के तेनी भाषा ते वखतनी बोलचालनी भाषाओ करतां वधु जूनी उच्चारविषयक (phonetic) भूमिकाने व्यक्त करती हती ते अर्थमां साहित्यकीय भाषा थई चूकी हती,) संस्कृत भाषाए, साहित्यकीय लेटिन भाषाए पोतानी वंशज

रोमन्स भाषाओने पूरा पाड्या ते प्रमाणे, बोलचालनी भाषाओने विद्वत्ताभरेला शब्दो उछीना लई शकवाने अखूट जथ्थो पूरो पाड्या कर्यो. अने आम पोतानुं मूळ आवकनुं स्थान गमे ते होय, तेवो शब्द एकवार भाषामां चलणी थई चूक्यो पछी ते समग्रपणे भाषाने असर उपजावे तेवो उच्चारविषयक फेरफार पामे छे; अने तेथी जे समये साहित्यकीय अने बोलानी भाषामां उच्चारणनो तफावत हजी थोडो हतो ते समयना उछीना लीधेला साहित्यकीय शब्दोनो भेद अत्यारे पामवो तद्दन अशक्य छे.

आम छतां द्विश्रुतिमध्यगत (intervocalic) स्पर्श व्यंजनो धरावता शब्दो अने आभा. द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनो(stops)ना लुप्त थया पछी उछीना लेवा-येला शब्दो चोख्खा जुदा तरी आवे छे. आवा घीरधारना जूना दाखलाओ तेवा शब्दोमां देखाय छे के जेना प्राकृतमांना पूर्वजो संस्कृतमां एकवडो व्यंजन होय त्यां साथोसाथ बेवडा व्यंजन बतावे छे,[11] (अलबत्त, आ अपवाद के ज्यां बेवडो स्पर्श व्यंजन एकीभूत व्यंजनयूथ थाय छे, जेमके सं. लगति साथोसाथ प्रा. लग्गइ < सं. लग्यति) आ बेवडा व्यंजनो एम ऊभा थया के तेओ उछीना लेवाया ते समये भाषामां द्विश्रुतिमध्यगत एकवडा स्पर्श व्यंजनो नहोता; अने जे प्रमाणे उछीना लीधेला शब्दनो उच्चार करवामां तेनो (मूळ) उच्चार बरोबर मूर्त करवा पोतानी भाषामांनां ते उच्चारणो के जे तेने मूळ उच्चारण मूर्त करवामां वधुमां वधु नजीकमां लागे छे (अथवा, कदाच, खूब चोक्कसपणे बोलिये तो जे तेने एनी साथे एकरूप लागे छे) तेनो प्रयोग बोलनारो करे छे, ते प्रमाणे आ किस्सामां उछीना लीधेला संस्कृत शब्दमांना (पोतानी भाषामां अज्ञात) एकवडा व्यंजनने स्थाने (पोतानी भाषामां ते समये जेमां घणां जाणीतां उदाहरणो हतां ते) बेवडा स्पर्श व्यंजन बोलनाराओए प्रयोज्या हता. गुजरातीमां आवा शब्दोना दाखला आ छे: अेक (प्रा. अेक्क–सं. एक मांथी उछीनो लीधेलो–नेपाळीमां येक नी साथोसाथ येउटा तरीके सूचित थाय छे), जितवुं (प्रा. जित्त–सं. जित–), लाकड (प्रा. लक्कुड–, सं. लकुट–जे नेपाळीमां लउरां–लाकडी अने गुजरातीमां लोडां–शिश्न तरीके सूचित थाय छे), थोक (प्रा. थोक्क–,सं. स्तोक–, जे थोडुं मां सूचित छे).

ए शक्य छे के बेवडा व्यंजन साथे एकवडा व्यंजननी आ समानताना नमूनाए संस्कृतमां ल अने व जेवा एकवडा अस्पर्श (continuant) व्यंजनो बेवडा करी उछीना लेवामां आव्या हता. आवा शब्दो ते हिन्दी जोवन (प्रा.जोव्वण–, सं. यौवन– जेमांथी हिंदीमां तो *जोन शब्द ऊतरी आववो जोइये), तेल (प्रा. तेल्ल–, सं. तैल जेमांथी तो *तेळ ऊतरी आववुं जोइये.), अेहवुं (अप. अेहवउं–जे अेह उपरथी फरी रूपांतरित थयुं छे, प्रा. अेव्व–, सं. एव). छेल्ला बे शब्द (तेल अने अेहवुं) नुं बीजी रीते पण व्युत्क्रमण थई शके – जे कांईक ओछी शक्यताए *तैल्य–, *ऐव्य–उपरथी व्युत्पन्न थयेला समजावी शकाय.

---

११ Grammatic der Prakrit:-पिशल ९०,१९३; जोके कर्ता जुदो खुलासो आपे छे; ब्लोक: पृ. १०५

§९. जुदा अने पछीना थरना भगत, रगत (भक्त–, रक्त–)जेवा उछीना शब्दो छे. अहीं स्वरनुं द्वि-ह्रस्वस्वरमध्यगत प्रक्षेप (anaptytic insertion) (के जेनाथी वक्ता ते वखतना अज्ञात व्यंजन-यूथने रजू करवा मागतो हतो)–ते उमेरणे द्विश्रुति-मध्यगत अघोष (breathed) स्पर्श व्यंजनना अस्तित्वने व्यक्त कर्युं. वधु वहेला समयमां आवा बधा द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श-व्यंजनोने असर करी हती ते द्विश्रुति मध्यगत अघोष स्पर्श व्यंजनोने घोष करवानुं वलण हालमां पण प्रचलित होवाने कारणे आवा उछीना शब्दो (के जेमां मात्र आवा स्पर्श व्यंजनो ज टकी शके, ते)-मांना अघोष द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनो घोष थया. बेवडा व्यंजनो एकवडा थई चूक्या (जोके, दाखला तरीके) नेपाळीमां हजी ते प्रचारमां छे, त्यारथी आ वलण-नो अंत आवी चूक्यो छे.

संज्ञाए तत्सम (तरीकेना वर्गनो) शब्द (अथवा संस्कृत भाषामांथी उछीनो लीधेलो शब्द) संस्कृतथी स्वरूपे ए माटे विभिन्न न थवो जोइये के ए शब्द भूत-काळमां उछीनो लेवायो हतो अने तेथी तेमां फेरफार थई गयो छे. संस्कृत नमूना पछी अमुक अंशे फेरवाई जतां ए तद्‌भव (के तज्जन्य शब्द)नुं परिणाम होई शके. गुजराती उदाहरण शोहवुं छे, के जेमां तद्‌भव सोहवुं उपर शोभंत (तत्सम शोभवुं)नी असर थवा पामी छे.

छेल्ले, उछीनो लेवातो होय ते समये पण तत्सम शब्द सदाने माटे पोतानुं रूप राखी ज मूके तेवुं होतुं नथी, कारण के उपर बताव्युं ते प्रमाणे, ते शब्दने पोतानी भाषाना भाग तरीके करी लेता बोलनाराओ पोतानी भाषामांना उच्चारणनी नजीकना उच्चारणथी तेनो उच्चार रजू करे छे. आ प्रमाणे क्ष के आदि व धरावनारा हिंदी सं. शब्दो आजे छ अथवा ब थी तत्सम तरीके ज रजू थवाना.

§१०. उछीना शब्दो लेवामां आव्या हता तेवी संस्कृत ज मात्र साहित्यकीय भाषा नहोती. बौद्धधर्मेनी साहित्यकीय भाषा तरीके रहेली पालिए बौद्धोनी चडतीना समयमां बोलचालनी भाषाओ उपर निःशंक रीते असर करी हती; परंतु अत्यारे उछीना पालि शब्दोथी उछीना संस्कृत शब्दोनो भेद पाडी शकाय तेम नथी.

जैनधर्मेनी प्राकृत भाषाए पण असर करी होवी जोइये. कदाच आ ज मथाळा नीचे रेण (जै. प्रा. रयणी, सं. रजनी), वेण (प्रा. वयण–, सं. वचन) मुकावा जोइये, के जे मूळ तद्‌भवो तरीके *राण, *वाण तरीके व्यक्त थवा जोइये.

अंतमां, भाट-चारणोनी साहित्यकीय अने परंपराथी उतरी आवेली भाषा पण तेना श्रोताओनी भाषाने रूप आपवामां केटलोक भाग भजव्या विना रही शकी नहि होय.

इ

§११ जे प्रजा उपर पोते विजय मेळव्यो तेओनी भाषाओमांथी पण आर्य आक्रमण-कारीओए उछीना शब्दो लीधा हशे अने पोताना विजेताओनी भाषाओ अपनावतां जितायेली प्रजाए पोताना केटलाक शब्दो राखी मूक्या हशे, एवुं पण बन्युं हशे, पण ए विशे हजी सुधी कांई पण माहिती मळी नथी. आ विषयमां डॉ. ब्लोके जे सूचना

करी छे के भारतीय-आर्य भाषाओमां द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजनोनी वात छे तेमां तो द्राविडी जेवी ज हकीकत छे,' ते सूचक छे.[१२]

मोडेथी मुस्लिम राज्यकर्ताओनी असर नीचे फारसी अने अरबी भाषामांथी मोटो शब्दसमूह उछीनो लेवामां आव्यो हतो; कांईक थोडेरो फ्रेंच अने फिरंगी वेपारीओ पासेथी; अने नजीकनां वर्षोमां हाल संख्याबंध शब्दो अंग्रेजीमांथी. फारसी अने अरबी शब्दो आ थरना जूनामां जूना होवाथी तेओए खास करीने अस्वरित ह्रस्व स्वरोनी सामान्य सरलता (निराडंबरता – decoloration) करी आपवामां भाग भजव्यो छे.

स्वरप्रक्रिया

§१२. आदिम भारतीय भाषामां नीचेना मूल स्वरो अने संधिस्वरो हता: अ आ, इ ई, उ ऊ, ए, ओ, ऐ, औ, ऋ, ऌ.

अ. मभा. भूमिकामां जूनामां जूना अवशिष्ट नमूनाओमां प्रायः फेरफार न पामेली एवी स्थितिमां सादा स्वरो रहेला मळी आवे छे. ऐ, औ ए संधिस्वरो अने अय, अव ए वर्णसमूहना अे ओ थया, जेनुं बंने दाखलाओमां आभा. ना ए ओ साथे एकीकरण थई गयुं. जोडाक्षरोनी पूर्वेना दीर्घ स्वरो ह्रस्व थई गया.

संस्कृतमां क्वचित ज जोवामां आवतो अने पछी तो मात्र एक ज क्रियापद (कॢप्)-नी रूपप्रक्रियामां भाग लेतो ऌ प्राकृतमां इलि तरीके आवी रह्यो: किलित्त–, किलित्ति (सं. कॢप्त–, कॢप्ति–).[१३] अप० कत्त छे ते कॢप्त – नहि पण *कल्प्त – ने स्थाने प्रयुक्त छे. मूल ऌ रहेवा पाम्यो होय एवो एक पण शब्द गुजरातीमां मळतो नथी.

घणे वहेलांथी ऋ ए अ, इ के उ तरीके आवी भिन्न भिन्न विकास बताव्यो छे. ऋग्वेदमां स्वीकारायेली प्राकृतभाषाविषयक प्रक्रियाओमां, प्रायः जो के अ तरीके छतां, ऋण स्वरूपे देखा दे छे ज.[१४]

आ विषयमां अशोकना उत्कीर्ण लेखो अने साहित्यकीय भाषाओनी परीक्षा कर्या पछी डॉ. ब्लोक एवो निर्णय आपे छे के ऋ कारनो व्यापक विकास नैर्ऋत्य प्रदेशमां अ हतो, ज्यारे उत्तर अने पूर्वमां इ अने उ हतो.[१५]

आ. मभा. भूमिकामां जे महत्त्वनो एक मात्र बीजो फेरफार थयो हतो ते अंत्य दीर्घ स्वरोने ह्रस्व करवानां वलणने लीधे हतो, के जे (सिंधी सिवायनी) अर्वाचीन भाषाओमां अंत्य ह्रस्व स्वरनी साथोसाथ सरखी रीते ज अदृश्य थई चूक्यो छे. अपभ्रंशमां अंत्य दीर्घ स्वरोने स्थाने ह्रस्व स्वरो जोवामां आवे छे – अने आ प्रक्रिया प्राकृत पिंगल सुधी चालु रहेवा पामी हती.[१६]

---

१२. इन्डियन एन्टिक्वेरी, ग्रं. ४८, पृ. १९१–४
१३. पिशल, खंड ५९
१४. वॅकरनागेल, खंड ९, १६, १९, १४६, १७२, २०८
१५. ब्लोक, खंड ३०
१६. पिशल, खंड १००

इ. जेमांथी गुजराती ऊतरी आवे छे ए भाषाए, मराठीनी पूर्वज भाषाथी भेद बतावतां, स्वरभार (stress accent)नो विकास साध्यो छे; आ स्वरभारना तत्त्वे अभा. स्वरप्रक्रियाना पछीथी थयेला विकासमां गण्य भाग भजव्यो छे. जो स्वर दीर्घ होय तो उपांत्य श्रुति उपर, उपांत्य श्रुति ह्रस्व होय तो तेनी पूर्वनी श्रुति उपर, अथवा उपांत्य अ ने ते पूर्वेनी श्रुति ह्रस्व होय तो अंत्य श्रुतिथी गणतां पूर्व बाजू चोथी श्रुति उपर (एटले के–बे श्रुतिना शब्दोमां पहेली श्रुति उपर) आ स्वरभार आवतो हतो.[१७] आ० हेमचंद्रे जे अपभ्रंशनुं विवरण आप्युं छे तेमां आ स्वरभारनी असर भाग्ये ज जोवामां आवे छे; परंतु–इ. स. १३०० अने पछी मां–तेणे स्वरप्रक्रियामां गण्य फेरफारो कर्या [जोवामां आवे] छे. जेवा के–अपत्यम्, अरण्यम्, जामातृ–> अवच्चउं, अरण्णं > जूपरा. बच्चुं, रान, जमाई.

ई. स्वरप्रक्रियाना विकासनुं बीजुं महत्त्वनुं पगलुं बेवडा व्यंजनोने स्थाने एकवडो व्यंजन (simplification) थवानी प्रक्रियाने लीधे थयुं हतुं. एकवडा थयेला व्यंजनयूथनी पूर्वना स्वरनो बदलामां दीर्घ थतो हतो.

उ. म. भा. समयना द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनोना लोपना परिणामे (शब्दोमां) पुष्कळ स्वरो सामसामा (संहितामां) आवी गया. आ छेक जूपरा.ना ग्रन्थोना समय सुधी मोटे भागे स्वतंत्र अस्तित्व धरावती हती; अने जूपरा.ना समयथी स्वरोनी संधि थवानी प्रक्रिया शरू थती जोवामां आवे छे: जेम के–

सं.	अप.	जूपरा.
राजा	राआ	रा
प्रतोली	पओली[१८]	पोलि
पिबति	पिअइ	पीइ
दिवसः	दिअसु	दीस
बीजम्	बीअं[१८]	बी
	घोडअह	घोडाह
	अण्णएरु	अनेरु

आम छतां अइ अने अउ हजी पण जळवाई रह्या हता: जेमके अप. पविसइ करंतउ, जूपरा. पइसइ करतउ.

ऊ. छतां अमुक शब्दोमां स्वरोनी निकट स्थिति (hiatus बे स्वरो सामसामा आवी रहे ने संधि न थाय तेवी दशा) य श्रुति दाखल करीने दूर करवामां आवी छे, जे य श्रुतिनी असर आजे (पण) श्रुतिगोचर छे: रजनी, वचनम्, नगरी; जूपरा. रयणी, वयण, नयरी; गु. रेंण, वेंण,-नेंर.

जूना द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनोना स्थानमां जैन प्राकृत हाथप्रतोमां य (लघुप्रयत्नतर यकार) लखेलो मळे छे. परंतु गुजरातीमांना आवा मोटा भागना शब्दो

---

१७. जुओ नीचे खंड १५.

१८. प्रो. टर्नरे अहीं भूल करी जणाय छे. अप. मां पओलि अने बीउं जोइये. –अनुवादक

उभय स्वरश्रुतिनी सादी संधि थयानुं बतावता होवाथी ए शक्य छे के जेओमां आवो य कार जोवामां आवे छे ते शब्दो स्वरोनी निकटमां आववानी स्थितिने नियमित आ रीते दूर करनारी बोलीमांथी कां तो उछीना शब्दो तरीके आवेला छे अथवा तो साहित्यकीय जैन प्राकृतमांथी मळ्या छे. स्वरोनी निकट स्थिति (hiatus) जेमांथी दूर करवामां आवी छे एवा वधु संख्याना शब्दो, नियम तरीके व श्रुति साथे, बताववानुं वलण मराठीमां छे.[१९]

ए. छेल्ले, अर्वाचीन गुजरातीमां वधा ज अंत्य अने अस्वरित ह्रस्व स्वरोनो लोप थयो छे,[२०] अने बाकी रहेला स्वरोनी निकटमां आवतां संधि थई चूकी छे : अइ > अॅ, अउ > ऑ. संधिमांथी थता दीर्घ स्वरो ज्यारे अस्वरित होय छे त्यारे ह्रस्व थई जाय छे. ई, ऊ ज्यारे अस्वरित होय छे के तेओनी पछी बे व्यंजनो (जोडाक्षर) आवेला होय छे त्यारे ह्रस्व बने छे.

ऐ. छेक ह्मणांना समयमां आई, आऊ ना अै, औ थया छे; जेम के भाई [भै], साहू [सौ].

§ १३. आम गुजराती प्रक्रियामां नीचे प्रमाणेना स्वरो आवी रहे छेः अ आ, इ ई, उ ऊ, अॅ (ह्रस्व), अे (दीर्घ), ऑ (ह्रस्व) ओ (दीर्घ), अॅ (ह्रस्व विवृत), अॅ (दीर्घ विवृत), ऑ (ह्रस्व विवृत), ऑ (दीर्घ विवृत), अै, औ, ऑ.[२१] ह्रस्व स्वरो पोताने लगता दीर्घ स्वरो करतां जरा वधु खुल्ला (open – व्यक्त) होय छे. अ [ह्रस्व] छे. प्रांतिक बोलीनी दृष्टिए जोतां, खास करीने उत्तरमां[२२] आ ने स्थाने ऑ (दीर्घ विवृत), इ ने स्थाने अॅ (ह्रस्व) अने उ ने स्थाने ऑ (ह्रस्व) जोवामां आवे छे.

---

१९ पिशल, खंड १८७; ब्लोक, खंड ५४,५५

२० प्रो. टर्नरनो आशय अहीं आ शब्दोथी स्फुट थाय छे ते ए छे के गुजराती शब्दो पर्यंते आपणे जेने लघुप्रयत्न अकार कहिये छिये, जेने शांत के द्रुत पण पूर्वे कहेवामां आव्यो छे, ते अकार लुप्त ज थयो छे. मने लागे छे के आ विधान बरोबर नथी. लुप्त अकार अने लघुप्रयत्न अकार वच्चे भेद छे; लुप्त अ सर्वथा लुप्त होय छे. "वस्ती"मां छे तेवो सकारमांनो अ; ज्यारे लघुप्रयत्न अकार पोतानुं अस्तित्व राखे छे "चोपडी"मां छे तेवो पकारमांनो अ. ए शब्दनुं ब. व. थतां चोपडियोमां प मांनो अकार पूर्णप्रयत्न छे. ते ज रीते अंत्य लघुप्रयत्न अ पूर्णप्रयत्न अमुक संयोगोमां बनी जाय छे; राम, पण राम ज : आ बंनेमां स्पष्ट थता म मांना अकारने सरखाववाथी आ वस्तु समजाशे.

प्रो. टर्नरे आ ग्रंथमां अकार नथी एम गणीने ज जोडणी करी छे. गुजराती जोडणी करतां ए ए व्यंजन आखो लखीने ज लख्यो छे. ज्यां तेवा प्रसंगमां मतभेद हशे ते अवश्य ते ते स्थळे बताववामां आवशे. —अनुवादक

२१ प्रो. टर्नरे स्वरोना विषयमां खूब आंच करी आपी ह्रस्व-दीर्घ सादा ए–ओ अने ह्रस्व-दीर्घ विवृत अॅ–ऑ नो ख्याल आप्यो छे. तेणे छेल्ले आपेली ऑ (ɔi) आ खास ध्यान खेंचे छे. आ केवी रीते लेखनमां व्यक्त करवो, ए अघरुं छे. एक ज स्वरचिह्ननी अपेक्षा होई अहीं ऑ बे अवळी मात्राथी बताववानो प्रयत्न करवामां आव्यो छे. —अनुवादक

२२ भारतीय–भाषा–समीक्षा–ग्रं. ९, भा. २, पृ. ३२९

स्वरारोह[२३]

§१४. वैदिक समयमां पण स्वरारोहनी माधु. प्रक्रियाने स्थाने आवती आभा. प्रक्रियाए अमुक आभाससाम्यमय जीवन (extention) मेळव्युं हतुं.[२४] मभा. उच्चारणना फेरफारोए गण्य प्रमाणमां आभा. प्रक्रियाना स्वरूपने फेरवी नाख्युं.

आभा. मां	मभा. मां
– अ आ	अ आ (ह्रस्व) के आ (दीर्घ)
इ ए ऐ	इ अॅ के अे
उ ओ औ	उ ऑ के ओ
ऋ अर् आर्	इ उ अ, अर् के अ + बेवडो व्यंजन, आर्

छतां, भाषाना बंधारणमां स्वरारोह हजी पण चालु (active – सजीव) तरीके रहेवा पाम्यो हतो; जो के तेना प्रयोग (applicatian) नी जीवितता (extent) गण्य रीते ओछी थवा पामी हती. ज्यां ए अत्यंत सामान्य रीते व्यक्त थतो हतो, त्यां ते सादां अने प्रेरक क्रियापदो वच्चे रहेला आरोहना तफावतमां हतो. आभा. नमूना अ : आ, उ : ओ आज दिवस सुधी जळवाई रह्या छे; जेवा के सरवुं (अकर्मक), पसरवुं (अकर्मक), मरवुं : सारवुं (सकर्मक), पसारवुं (सकर्मक), मारवुं; दुझवुं : दोहवुं. अ : आ – मालाने बे रीते मुश्केली ऊभी थवा पामी छे: (१) एक तो बे व्यंजनोनी पूर्वे आव्यो होय त्यारे आभा. अ दीर्घ थवाथी; दा. त. तापवुं (ताप्यति) : ताववुं (तापयति), फाटवुं (स्फाट्यते): फाडवुं (स्फाटयति), के ज्यां स्वरना फेरफारथी नहि, पण व्यंजनना फेरफारथी व्यवहारने अत्यारे असर थती मालूम पडे छे; (२) बीजुं, – आपय – ए प्रेरकना प्रत्ययने चालु राखवाथी; दा. त. करवुं (करोति) : करावबुं का॑रापयति, प्रा. का॑राविइ, जे रूप कारयति ने स्थाने छे), नासवुं (नश्यति) : नसाडवुं (वधु नवा प्रेरकना प्रत्ययवाळुं रूप).

आम छतां, आ व्यवहार सचेत बल तरीके रहेवा पाम्यो छे, एवी रीते के अकर्मक क्रियापदनी निशानी तरीके अ अने सकर्मक क्रियापद (थवा)नी निशानी तरीके आ गणवामां आव्यो छे; अने परिणामे सारवुं : सरवुं वगेरेना आभाससाम्यने अनुसरी पाळवुं (पालयति) ना सह्यार्थ प्रयोगे पळवुं जेवां नवां रूपाख्यानो ऊभां थयां छे.

शेल (धोवानो पथरो – शिला, शैल्य –), मोल (मूल, मौल्य –), मोती (मुक्ता, मौक्तिक –), सोई – दरजी (सूची, सौचिक –), कोढ (पालि. कोठ – : कुष्ठ – कौष्ठ –), पोथुं (पुस्तक –), मोथ (मुस्ता) जेवां नामोनो आधार कां तो आभा. मूलशब्दो उपर छे, कां तो तेओ बीजा शब्दोना आभाससाम्ये बंधायां छे. पछीना दाखलाओमां साहित्यकीय वृद्धिनां रूपो संस्कृतीकरण पामेला मभा. ना शब्दो थशे. शेल अने मोल (ल – वाळां, नहि के ळ – वाळां रूपो)नो आधार कोई पण रीते – ल्य – धरावतां रूपोना उपर छे.

---

२३ स्वरारोह ए गुण-वृद्धिनां रूपो बतावे छे. आभा. मां ए छे, ज्यारे मभा. मां ए शिथिल थई अन्य रूपे आवी रहे छे.

२४ वोकरनागेल, खंड ५५,६५

ऋकारने स्थाने अ, इ के उ थवाना फेरफारे अ : आ, इ : अे, उ : ओ ना नमूना प्रमाणे संध्याबंध नवां आभाससाम्ये थयेलां रूपो आप्यां छे.

अ : आ : –

भृत –> भट –: भाट – (भाड (स्त्री.) छिनाळाथी मळतो नफो)

वृत –> वट –: वाटि – (वाड (स्त्री.) कांटा वगेरेथी करेली वाड)

इ : अे : –

गृह –> प्रा. गिह –: गेह –.

गृह्णाति –> प्रा. गिण्हइ : प्रा. गेण्हइ. (घरण [ग्रहण –] जेवा शब्द जेम रकार धरावतां बीजां रूपोनी असरने लीधे णकारने स्थाने र आवतां घेरवुं ए रूप पण कदाच ऊतरी आवे.)

√ *स्खृत् – (: गोथिक स्किल्डस्) > खिट् : खेट गाम (खेड – खेती, जे खेट (क्षेत्र) नी साथे थयेली खोटी असरथी थयेल जणाय छे.)

उ : ओ : –

*स्फृत् – (जर्मन स्फाल्टॅन) > स्फुट्यते (फुटवुं): स्फोटयति (फोडवुं).

स्वरभार

§ १५. सामान्य रीते गुजराती भाषामां [स्वर] भार[१५] कां तो उपांत्य श्रुति उपर पडे छे, अथवा तो अंत्य श्रुति दीर्घ होय अने ते सं. दीर्घ श्रुति उपरथी ऊतरी आवी होय तो ते अंत्य श्रुति उपर पडे छे (– बे मभा. ह्रस्व स्वरोना जोडावाथी थयेला अंत्य आ, ई, ऊ, अे, ओ उपर स्वरभार होतो नथी; अने खरेखर आ स्वरो पूरेपूरा दीर्घ नथी), दा. त. संसर्ा, कमळ, कर्पूर, वखांण. उपर (खंड § १२ इ मां) बताववामां आवेला स्वरभार (stress accent)मांथी आ स्वरभार (accent) ऊतरी आव्यो छे, जे स्वरभार (stress accent) वैदिक समय अने ई. स. १३०० ए बेना गाळामां क्यांक अस्तित्वमां आव्यो होवो जोइये; केम के ई. स. १३०० थी स्पष्ट रीते तेनी असर जोई शकाय छे.

आभाससाम्यने लगती स्थानभ्रष्टताने कारणे एनो उद्भव थवानी संभावना छे.

(१) नाम के क्रियापदनां रूपाख्यानोमां ते एकनी एक श्रुति उपर रहे छे; जेम के जीवामि (जीवसि, जीवति ने अनुसरी) > जूपरा. जीवउं, गु. जीवुं; घोटकानाम् (घोटका : वगेरे > घोडआं, गु. घोडां अविकृत ब. व. नुं अंग,– ने अनुसरी). ए ज रीते अर्वाचीन गुजरातीमां पण जीवं वगेरेने अनुसरी जीवं छं; पहेलीना घोडां वगेरेने अनुसरी छट्ठी घोडानां.

(२) आ प्रमाणे स्वाभाविक रीते वर्णाक्षरां क्रियापदोमां आदि श्रुति उपर स्वरभार आवतो होवाने कारणे, दीर्घ मध्यश्रुति उपर स्वरभार धरावनारां केटलांक क्रियापदोमां

---

१५ आ स्वरभारना अस्तित्व अने मूळनी संपूर्ण हकीकत माटे जुओ टर्नर J R A S. एप्रिल १९१६,§§१८४१. सरखावो वळी रा. गो. भांडारकर स्मारक ग्रंथमां ब्लोकनो लेख: 'A propos de l'accent d' intensite en indo-aryen,' पृ. ३५९.

स्वरभार बदलीने आदि श्रुति उपर खस्यो छे; दा. त. विनश्यति > *वणार्स > वंणर्स (पछी कद्युप्रयत्न अकारवाळुं रूप) वंणर्स; ए प्रमाणे उपजवुं (उत्पद्यते), वळगवुं (विलग्यति), परखवुं (परीक्षते), ओळखवुं (अपलक्षते), ओळंबवुं (अपलम्ब–), पलटवुं (पलट्ट), एनाथी ऊलटुं अफाळवुं (आस्फालयति). आ फेरफार निःशंक रीते आगळ चालु रहेवा पाम्यो छे, ते ए रीते के (१) ओसरवुं (अपसरति), विसरवुं (विस्मरति), सांभरवुं (संस्मरति), उचरवुं (उच्चरति) वगेरे प्रकारनां उपसर्गवाळां क्रियापदोमां सामान्य प्रकारे उपसर्ग उपर स्वरभार आवतो हतो, अने (२) जे क्रियापदो स्वरभारनो स्थानपलटो (shift) बतावे छे ते अकर्मक बन्यां छे (सरखावो बीजी बाजूए अफाळवुं; आ सकर्मक छे अने मूळना स्वरभारने सांचवी राखे छे;) अने तेथी आ नो अ थई जाय छे ते प्रक्रिया सकर्मक अने अकर्मक क्रियापदोना सामान्य रचक सिद्धांतनी साथे शामेल बनी जाय छे.

(३) बांळप (बालत्व–), कांळप (*कालत्व–) ए शब्दो बाल–, काल–ना स्वरभारने सांचवी राखे छे. वंणज (वाणिज्य–) जो तत्सम न होय तो तेना उपर वांणियाँ (वाणिज–) ना स्वरभारनी असर थवा पामी छे. अंणछ (अणिच्छा), अंळख (अलक्ष्य) मां अंणसण (अनशन) वगेरेनो स्वरभार छे, अने ते उपरांत तेओने अर्थ सचवाई रहे ते माटे आदि श्रुति सांचवी राखवानी आवश्यकतानी पण असर थई छे.

एटलुं खरुं के गुजराती भाषानी पडोशी मराठीने जुदा ज प्रकारनी स्वरभारप्रक्रिया–प्रधानपणे आदि श्रुति उपर ज स्वरभारवाळी–हती. आवी ज कोई स्वरभारप्रक्रियावाळी भाषाओमांथी अंळतां (अलक्त–), तिंरछुं (तिरश्च–), कंडछाँ (हिं. द्र. कडुच्छआँ) जेवा शब्दो उछीना मळ्या हशे.

बे नामोना समासमां पहेला शब्दनो स्वरभार वधु प्रमाणमां सचवाई रह्यो होय छे. दा. त. रांठोड, जूपरा. राठउड (राष्ट्रकूट–), सिंहोत, जूपरा. सीहउत (सिंहपुत्र–), फळोंधी, जूपरा. फलवधी (फलवर्धिका), दंसोटो, जूपरा. दंसवटउ (देश-वृत्त).

आगंतुक अनुनासिकता

§१६. बहु वहेलाना समयथी स्वरोने कंठ बाजूनुं ताळवुं (के लाळी velum) अपूर्ण रीते ऊंचुं करीने उच्चारवानुं वलण जोवामां आवे छे, जेनुं परिणाम ए आवे छे के स्वर सानुनासिक बनी जाय छे. अशोकना शिलालेखोमां दीर्घ के ह्रस्व स्वर अनुस्वार साथे लखेलो मळे छे, ते आ वलणने बतावतो गणी शकाय. प्राकृत भाषाओमां "अनुस्वार+स्पर्शव्यंजन (stop)" ना घणा दाखलाओ मळे छे, जे व्यंजनसमूह अने खास करी "र+व्यंजन" सांधवता समूहोना परवर्णसादृश्य (assimilation) नुं प्रतिनिधित्व धरावे छे.

गुजराती भाषामां हाल प्रचलित छतां अनुनासिक करवा तरफनुं वलण बीजी न.भा. भाषाओ करतां ओछुं देखाय छे. सामान्य रीते कहिये तो तेवा ज शब्दोमां आ आगंतुक अनुनासिकता जोवामां आवे छे के जे शब्दो बीजी भाषाओमां तेवा स्वरूपवाळा मळे छे अने प्राकृतमां दाखल थयेला छे; ज्यारे बीजी बाजू गुजरातीमां तेवा संख्याबंध

शब्दोमां अनुनासिकतानो अभाव छे, जे शब्दोमां केटलीक अथवा बधी बीजी भाषाओमां अनुनासिकता छे.

आ प्रमाणे अनुनासिक साथे : मँजार (मार्जार –, प्रा. मंजार –), वांकुं (वक्र –, प्रा. वंक –), आंख (अक्षि –,) पांख (पक्ष –, प्रा. पंख –), आंसु (अश्रु –, प्रा. अंसु –), ऊंचुं (उच्च –), ऊंट (उष्ट्र –), छांडवुं (छर्दयति). आमांनो छेल्लो शब्द मात्र मराठी अने गुजरातीमां सानुनासिक छे.

अनुनासिक रहित : [२६]मागवुं (मार्गति), माजवुं (मार्जति): साप (सर्प –), काकडी (कर्कटिका), साचुं (सत्य –), ओठ (ओष्ठ –), ऊभुं (ऊर्ध्व –).

ए रीते सादा दीर्घ स्वरोमांनी आगंतुक अनुनासिकता गुजरातीमां ओछेरी प्रचलित जोवामां आवे छे; दा. त. भेंस (महिषी), बांह्य (बाहु –). मराठी विशेनो प्रश्न डॉ. ब्लोके विस्तारथी चर्च्यो छे.[२७]

स्वरित श्रुतिमांना स्वरो

आभा. सिवायनी अन्यत्र व्यक्त श्रुतिओमां ऐ, औ, ऋ आ स्वरोमां कांई पण फेरफार थतो नथी. ऐ औ ना अे ओ थाय छे, जे आभा. ना ए ओ साथे मेळ खाय छे.

अ

खण (क्षण –), गळुं (गल –), कमळ (कमल –), करवुं (करोति), ससरो (श्वशुर –), दहीं (दधि), सहियर (सखी), जळवुं अकर्मक (ज्वलति), जणवुं (जनयति), ससो (शश –).

जूपरा. ना शब्दोमां ज्यां डॉ. टेस्सिटोरी अ मांथी इ के उ थयानुं कहे छे त्यां गुजरातीमां अ देखाय छे. आ विकारवाळां घणां खरां जूपरा. नां उदाहरणोनुं अमुक खास परिस्थितिथी समाधान करी शकाय छे. तिजइ, धिन, क्षित्रि (त्यज –, धन्य –, क्षत्रिय –) तत्सम शब्दो छे; खिण ए तत्सम क्षण मांथी *क्षिण थई तेनी असरे आव्यो संभवे छे. गिउ < गइउ ए कदाच स्वरित उच्चारणने कारणे हशे (सरखावो : हिं. [गिअ] = गया); जिनिउ > जनिउ मां पछीनी श्रुतिना इ नुं कारण छे. मात्र इण्डउं (अण्ड –) अने गिणइ (गणयति) माटे कांई पण खुलासो मळी शकतो नथी. तेम छतां गिणइ मांनुं ध्वनीकरण हिं. गिनना (गु. गणवु, नेपाळी. गननु उपरांत) मां देखाय छे. डॉ. टेस्सिटोरी नोंधे छे के मारवाडीमां आ जूपरा. इ < अ सचवाई रह्यो छे. अ नी साथोसाथ इ नुं होवुं त्यारे बोलीओना मिश्रणने कारणे होई शके. ए ज रीते उ < अ ए ओष्ठ्य वर्णना अस्तित्वने कारणे होई शके. गुजराती भाषामां तो एकधारी रीते अ देखाय छे.

आ

मँजार (मार्जार –), नाम (नामन् –), जाणवुं (जानाति), नास (नाश –), वखाण (व्याख्यान –), भाई (भ्रातृ –), ताववुं (तापयति), वाळू (वालुका), पसाई (प्रसाद –).

---

२६ प्रो. टर्नर आ बे शब्दोमां निरनुनासिकता जुए छे, पण मागवुं–मांगवुं एम विकल्प हाल प्रचलित छे, तो मांजवुं सानुनासिक ज मळे छे. —अनु०

२७ ब्लोक, § ६६

केटलांक क्रियापदोमां स्वरित श्रुतिमां आ (= सं. आ अथवा व्यंजनसमूह पूर्वनो अ) -ने स्थाने गु. अ मळे छे. मोटे भागे आ सकर्मक क्रियापदो होय छे अने सरखुं जेवा प्रकार उपरथी आ ने स्थाने अ थई संस्कार पामेलां छे : सारखुं (सारयति), दा. त. चखवुं (चक्षति), घसवुं अकर्मक (घर्षति), घसवुं (घर्षति) आ क्रियापदो कर्मणि घसावुं - नी असरथी कदाच थयां हशे. अकर्मक क्रियापदोमां अ ने स्थाने आ मुकावानुं मराठी भाषामां बहु सामान्य छे.[२८]

डॉ. टेस्सिटोरी[२९] अ < आ बतावता जूपरा. ना शब्दो नोंधे छे : बिमणउं (*द्विमा, - नक -), वीनवइ (विज्ञापयति), सइं (शतानि); माप बतावनार बिमणउं मां इ क्यांकथी उछीनो मळवानो शक रहे छे. वीनवइ सं. विज्ञापयति मांथी आव्यो छे, अने सआइं ने स्थाने आवतो सइं ए तेना ए. व. ना रूप सउं (शतम्) ने लीधे छे.

इ

सिर (शिरस् -), [३०]छिणवुं (छिनत्ति), [३०]विणवुं (विनयति), चिर (चिर -), चिणवुं (चिनोति), ठिलों (तिलक -), विमळ (विमल -), विण (विना), पिसवुं (पिनष्टि, पिंषति).

लिखवुं (लिखति) तत्समने स्थाने लखवुं ए कदाच, जेमां प्रथम श्रुति अस्वरित होय छे तेवां रूपोनी असरने लीधे होय.

ई

बी (बीज -), हीण (हीन -), शीळ (शील -), खीर (क्षीर -), दीवों (दीप -), कीडों (कीट -), अहीर (आभीर -), नीलुं (नील -), पीडवुं (पीडयति), जीरुं (जीर -), शीम (सीमा).

उ

कुळ (कुल -), क्षुणवुं अकर्मक (क्षुनोति), उर (उरस् -), खुर (खुर -), मुसळुं (मुसल -), पुडी (पुटिका -), [३१]सुववुं (*सुपति, प्रा. सुवइ).

ऊ

धूळ (धूलि -), मूळ (मूल -), जू (यूका), ऊर्णु (ऊन -), ऊस (ऊष -), कपूर (कर्पूर -), मजूस (मञ्जूषा), सूरुं (शूर -), रूडुं (रूप -), जूवुं (युत).

ए

= आभा. ए : मेह (मेघ -), नेह (स्नेह -), मेळवुं (मेलयति), तेर्णः जूपरा. तेणइं (तेन), छेदों (छेद -), देस (देश -), भेव (भेद -).

= आभा. ऐ : गेरु (गैरिक -), केशुडां (कैंशुक -). ई इ < अे जेवां के फेण उपरांत फीण (फेन -), दिअर (देवर -), एनो खुलासो मळी शकतो नथी.

---

२८ प्रो. टर्नर : JRAS., एप्रिल, १९१६, पृ. ३१८

२९ इन्डियन एन्टिकेरी, ग्रं. ४३, पृ. ५

३० टर्नरे आपेल छिणवुं अत्यारे छणवुं तरीके व्यापक छे; ज्यारे विणवुं ए विनयति मांथी नहि पण विचिनोति मांथी योग्य छे.

३१ सुववुं नहि पण आपणे त्यां सूवुं छे.

ओ

=आभा. ओ : बोळवुं (बोलयति), रोवुं (रोदति), सोस (शोष–), दोहवुं (दोहयति), घो (गोधा), कोही (कोहित–), गोरस गोरसी (गोरस–), मोहवुं (मोहयति), कोस (क्रोश), गोळ (गोल–), घोडो (घोटक–), छोडवुं (छोटयति), थोडुं (स्तोक–), दोर (दोरक–).

=आभा. औ : गोरुं (गौर–), धोवुं (धौति), कोळी (कौलिक–), पोळी (पौलि–), चोर (चौर–), ओसड (औषध). § १४ ना शब्दो पण अहीं सरखावो.

ऋ

§ १८. आपणे त्यां मळतां जूनामां जूनां लिखित साधनोना[३२] समयथी आभा. ऋ स्वरनो विकास गूंचवायेलो छे. मभा. मां ए अ इ के उ रूपे देखा दे छे. डॉ. ब्लोक प्रमाणे मोटे भागे आवी विक्रिया हती : नैर्ऋत्यमां ऋ > अ; उत्तर अने ईशानमां ऋ > इ, अथवा ओष्ठ्य वर्णनी हाजरीमां उ. जूना समयथी, आम छतां चालु लेवडदेवड थवा पामी छे, अने बधी हालनी भाषाओमां आ त्रणे प्रकारना विकासना दाखलाओ मळी आवे छे. परंतु आ विषयमां गुजराती नैर्ऋत्य यूथमां समाविष्ट थाय छे एम सिद्ध करवामां डो. ब्लोकनी कदाच भूल थाय छे. प्रधानपणे अ–प्रक्रियाने बतावती गिरनारमांना अशोकना उत्कीर्ण लेखोनी भाषा एमना मतने टेको नहि आपी शके; केमके उपर (§ ४ मां) बताव्या प्रमाणे शक्यता छे त्यांसुधी[३३] ए भाषा गुजरातीनी पूर्वज भाषानुं प्रतिनिधित्व आपती नथी.

एथी ऊलटुं (निःशंक रीते शौरसेनी प्राकृतनी जेम) गुजरातीमां प्रधान प्रक्रिया ऋ > इ, उ नी छे; दा. त. वीछी (वृश्चिक–) : जेमांथी मराठी विंचू अवतरेलो मानवामां आवे छे, तेमां वायव्य सरहदनी बोलीओमां प्रा. विंछुअ–ने मळतो प्रत्यय तरीके उ देखाय छे; जेने लीधे ए स्पष्ट थाय छे के गुजराती वीछी शब्द तो वायव्य सरहदनी बोलीमांथी लेवामां आव्यो नथी; लाध– (लब्ध–) ने पडछे –ध सहित कीधुं (कृत–), महीरुं (*मातृगर्हकम् > *माइहरउं), आ वायव्य सरहदनी बोलीओमां मळता नथी; दीठुं (दृष्ट–); वुठवुं (वृष्ट–); हैयुं, हैडुं, जूपरा. हईडउं (हृदय–) ए अप. हिअअ–मांना अ अने इ ना व्यत्ययथी वधारे जूना हइअ–ड–ने स्थाने छे.

अ–प्रक्रिया बतावता संख्याबंध शब्दो अमुक खास अर्थथी प्रयोजाय छे, ज्यारे इ उ बतावता शब्दो पोतानो सामान्य रीते मूळ अर्थ वधु प्रमाणमां सांचवी राखे छे. आ बीजा वर्गमांथी लेवामां आव्या होय तेना करतां प्रथम वर्गमांथी लेवामां आव्या होय तेवुं वधु बतावे छे; दा. त. मडदुं (मृत–), पण मुओ (मुडदुं ए अर्थसंकोचनुं परिणाम छे); पाठुं (पृष्ठ–), पण पूठ.

संख्याबंध अन्य शब्दोमां, अस्वरित श्रुतिवाळा स्वरनी स्थिति आपणने निर्णय करवामां मुश्केली ऊभी करे छे के प्रक्रिया इ नी हती के अ नी; दा. त. निवडवुं (वृत–),

---

३२ ब्लोक, §§ १३,३१, अने त्यां निर्दिष्ट साहित्य.

३३ सेनार्ट, २, पृ. ३३०
३.१.३.

देवड (वृति –), वडं (वृत –). **छेल्ले, संख्याबंध शब्दोमां** अ ए अर् – **स्थाने आव्यो होय, नहि के** ऋ ने **स्थाने. आ भिन्न सत्यने लीधे स्पष्ट छे के वायव्य सरहदनी बोलीओमां** अ **पण जोवामां आवे छे; दा. त.** घसवुं (घर्षति), **पण** घीट (घृष्ट –), मौ (मृदु –), पोहळुं (पृथुल –) **मां बे ओष्ठ्य वर्णो वच्चे** उ नी अ **तरफ अविक्रिया (dissimilation)नुं सामान्य हिंदी तत्त्व देखाय छे.**

शब्दारंभे आवेला ऋ **ने स्थाने** रि **देखाय छे.** अ, इ, उ < ऋ **आभा. ना** अ, इ, उ- **मां ऐक्य साधी ले छे.**

रि : रिझवुं (ऋध्यति), पारधी (*पाप-ऋद्धि – : पाप-र्द्धि –), **उछीनो शब्द** रींछ (ऋक्ष –).

इ : वीछी (वृश्चिक –), दीठुं (दृष्ट –), दिशवुं (दृश्यते), महीरुं (*मातृगर्हकम्), शियाळ (शृगाल –), भीगार्गा (भृङ्ग –), मीठुं (मृष्ट –), शींग (शृङ्ग –), गीध (गृध्र –), हैडुं (हृदय –), घी (घृत –).

उ : वुठवुं (वृष्ट –), मुआं (मृत –), पूठ (पृष्ठ –), भुजवुं (भृज्जति), मूठुं (मृष्ट –), गुंथवुं (ग्रथ्नाति), घुंटवुं (घृष्ट –), पुछवुं (पृच्छति), सुणवुं (शृणोति), मोसाळ (मातृ-शाला).

अ : मौ (मृदु –) पोहळुं (पृथुल –), माटी (मृत्ति –), [३४]तणखलुं (तृण –), मडदुं (मृत –), पाठुं (पृष्ठ –).

संहित–श्रुतिगत स्वरो

§ १९. मभा. भूमिकामां जोडाक्षर पूर्वेना दीर्घ स्वरो ह्रस्व थई जता हता. आ ह्रस्व स्वरो पोताने लगता आभा. ना ह्रस्व स्वरोमां एकरूप थई जाय छे. मोडेथी जूपरा. नी हाथप्रतोनी पूर्वेना समयमां, ज्यारे बेवडो वर्ण एकरूपे आवी रहेतो हतो, अथवा तो "वर्गीय अनुनासिक + व्यंजन"ना विषयमां ज्यारे स्वरोनी साथे एकसमयावच्छेदे अनुनासिकता उत्पन्न थती हती, त्यारे मुख्य स्वरित श्रुतिमांनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थतो हतो.

मभा. अ

< अ : काम (कर्मन् –), आज (अद्य), साचुं (सत्य –), कान (कर्ण –), माखण (म्रक्षण –), हाथ (हस्त –), वांझ (वन्ध्या), रांड (रण्डा), सांझ (सन्ध्या), चाक (चक्र –), वान (वर्ण –).

< आ : राणी (राज्ञी), मागवुं (मार्गयति), माजवुं (मार्जति), आप (आत्मा).

< ऋ : माटी (मृत्ति –), पाठुं (पृष्ठ –).

मभा. इ

< इ : पीठ (पिष्ट –), चील (चिल्ल –), शीख (शिक्षा), शीधुं (सिद्ध –), शीकुं (शिक्य –), वीज (विद्युत् –).

< ई : शीश (शीर्ष –), जीणुं (जीर्ण –), तीणुं, तीखुं (तीक्ष्ण –).

< ऋ : मीठुं (मृष्ट –), दीठुं (दृष्ट –), घीट (घृष्ट –), शींग (शृङ्ग –).

---

३४ प्रो. टर्नरे जोडणीमां ण मांनो अकार शांत गण्यो छे, ए भूल छे; आजे तो ख मांनो अकार सर्वत्र लघुप्रयत्न छे. —अनुवादक

मभा. उ

<उ: बूध (बुद्ध-), फूल (फुल्ल-), दूध (दुग्ध-), सूखुं (शुष्क-), पूत (पुत्र-), सूध (शुद्धि-), ऊंबी (उम्बिका), पून (पुण्य-), मूठी (मुष्टि-).

<ऊ: ऊन (ऊर्ण-), ऊभुं (ऊर्ध्व-), सूनुं (शून्य-), कूचो (कूर्च-).

<ऋ: पूठ (पृष्ठ-), भूंठुं (भृष्ट-).

मभा. ए

<ए: खेत (क्षेत्र-), जेठ (ज्येष्ठ-), पेखवुं (प्रेक्षते), शेठ (श्रेष्ठिन्-).

<ऐ: शेल (शैल्य-), तेल (*तैल्य- : तैल-).

मभा. ओ

<ओ: गोत (गोत्र-), कोठी (कोष्ठ-), गोठी (गोष्ठ-), जोध (योद्धृ-), रोपवुं (रोप्यते), पोंखवुं (प्रोक्षते), जोग (योग्य-), चोखुं (चोक्ष-).

<औ: मोती (मौक्तिक-), पोथुं (पौस्तक-).

गुजराती ई ऊ नो विकास

§२०. **(व्यंजनसमूहनी पूर्वे आवेला मभा. ई ऊ के इ उ मांथी आवेला) स्वरित ई ऊ बे रीते ह्रस्व बनी जाय छे: (१) जेनी वच्चे मभा. नो ह्रस्व स्वर लुप्त थयो होय तेवा बे गुजराती व्यंजनोनी पूर्वे आव्यो होय; अथवा (२) बे के वधारे अस्वरित श्रुतिओनी पूर्वे आव्यो होय. प्रथम कारणमां पछी आवती श्रुतिनो लोप थयाने कारणे मोटे भागे ह्रस्वीकरण थयुं हतुं; परंतु ए फेरफार क्यारे थयो तेनो निश्चित समय कहेवानुं शक्य नथी, केमके लिखित भाषा एवुं कांई बतावती नथी के श्रुतिनो लोप थयो हतो के नहि; ज्यारे सामान्य बोलीमां ए श्रुतिओ लुप्त थई गई हशे ते पछी लांबा गाळा सुधी ते कवितानी भाषामां जळवायेली मळे छे.**

ई

(१) जिवतुं (जीवति), इछवुं (इच्छति), चिभडी (चिर्भटिका), पिपळो (पिप्पल-), दिशवुं (दृश्यते), धिकवुं (धिक्षते), पिंजवुं (पिञ्जा), खिजवुं (खिद्यते), खिलडी, विजळी, खिचडी; **आ उदाहरणो** दीठुं, मीठुं, शीधुं **वगेरे,** खीज, खीली, वीज, खीच **(जुवारनो लोट) थी विरुद्ध रीते आवेलां छे.**

ऊ

चुसवुं (चूषति), उजळुं (उज्ज्वल-), कुकडी (कुक्कुटी), कुटणी (कुट्टिनी), पुछडी (पुच्छ-), तुटवुं (त्रुट्यति), उडवुं (उड्डयते), उगवुं (उद्गत-), कुटवुं (कुट्टयति), **ए उदाहरणो** सूखुं, मूठी, ऊभुं, सूनुं, भूंठुं, दूध, भूख (बुभुक्षा), फूल, पूठ **वगेरेनी विरुद्ध रीते आवेलां छे.**

(२) उपणवुं (उत्पुनाति), उघडवुं (उद्घट-), [३५]उगमणुं (उद्गमन-).

क्रियावाचक रूप (paradigm) मां पूर्ण श्रुति साथेनां द्वि-श्रुत्यात्मक रूपोनी संख्या खूब नानी छे. वर्तमानकाळ छुं वगेरेना उमेरणथी त्रिश्रुत्यात्मक थाय छे. (दा. त.

---

३५ प्रो. टर्नरे आ शब्दमां ग मां अकार शांत मान्यो छे, पण म मां जोइये. -अनुवादक

चूसुंछुं > चुसुंछुं वगेरे); ज्यारे भूत अने वर्तमान कृदंतोमांथी थयेला बधा काळोमां पहेली श्रुति संकोच पामे छे (दा. त. चुसतो, चुस्यो). तेथी करीने समग्र क्रियापदमां ह्रस्व स्वर करी नाखवानुं अने दीठुं: दिशवुं, मूठुं: मुजवुं, जेवां एकलां अटूलां रूपोमां ज दीर्घ स्वर राखी मूकवानुं वलण जणाय छे; पण अहींये केटलीक वार ह्रस्व स्वरनुं प्राधान्य रहे छे; दा. त. सुववुं[३६] पछी सुतुं (सुप्त –).

पूर्ण ई ऊ धरावता द्विश्रुत्यात्मक शब्दोमां पण पोताने लगतां एक-श्रुत्यात्मक (monosyllables) करतां, स्वर वधु टूंको होय छे; अने आ ह्रस्वीकरण केटलीक वार लेखनमां पण बताववामां आवे छे; दा. त. चुडो के चूडो, दुरुं के दूरुं, जुनुं के जूनुं, कुकर के कूकर, वगेरे.

केटलाक शब्दो के ज्यां पण इ अने उनी अपेक्षा राखवामां आवे, त्यां, साहित्यकीय भाषामां तो खरुं ज, पोताने लगता संस्कृत शब्दमांना दीर्घ ई ऊ नी असर दीर्घ स्वरने राखी शकवा, पूरती नीवडी छे; दा. त. दीपवुं, जीववुं, चीरवुं.

[३७]एक-श्रुत्यात्मक दूध, जूत ने, केटलीक वार ह्रस्व उ थी पण लखवामां आवे छे, छतां में दीर्घ ऊ धरावता ज सदा सांभळ्या छे.

द्वैतीयिक स्वरित स्वरो

§ २१. शब्दमांना मुख्य स्वर उपर पडता स्वरभार सिवायनो बीजो स्वरभार स्वर उपर पडतो होय छे त्यारे ह्रस्व स्वरोमां कांई फेर पडतो नथी, दीर्घ स्वरो ह्रस्व बने छे, अने पूर्वना ह्रस्व स्वरना नियम-प्राप्त दीर्घीभवन विना ज व्यंजनसमूह सादा बनी जाय छे.

अ: परजाळवुं (परिज्वालयति), परणवुं (परिणयति), परसेव (*परिष्वेद –).

उ: उजळाई (उज्वल –).

आ: चकवा (चक्रवाक –), पखवाज (पक्ष-वाद्य –), कठियारो (काष्ठिक-कार –), अगियारी (अग्नि-आगार –),

ई: किडियारुं (कीटक –).

ऊ: कुकवा (*कुक्क-वाद –).

ओ: कोठार (कोष्ठागार –).

अस्वरित स्वरो

§ २२. पछी आवता बे व्यंजनथी रक्षण पामेला न होय तेवा बधा स्वरो. अस्वरित स्वरोनो कांतो अ बने छे, कां लोप थई जाय छे. दीर्घ स्वरो जळवाई तो रहे छे, पण ते ह्रस्व बनीने.

ढीली स्थितिनां स्थानो आ छे: (१) शब्दना आरंभमां ज आव्यो होय तेवो, अने मुख्य तथा द्वैतीयिक स्वरित के द्वैतीयिक तथा मुख्य स्वरित स्वरो वच्चे आव्यो होय तेवो. आ बंने स्थितिमां ह्रस्व स्वरोनो लोप ज थई जाय छे. ढीली स्थितिनां बीजां

---

३६. सुववुं नहि, पण गु. मां सूवुं छे. –अनुवादक

३७ प्रो. टर्नर आ शब्दोने एकश्रुत्यात्मक कहे छे. एमणे अंत्य लघुप्रयत्न अकार क्यांय बताव्यो नथी. पण आपणे त्यां अना अभाव अने लघुप्रयत्न वच्चे स्पष्ट अंतर वाणीमां जणाय छे. –अनुवादक

स्थानो आ छे: (१) मुख्य स्वरित स्वरनी पूर्वेनी श्रुति; अने (२) मूळना त्रि-श्रुत्यात्मक शब्दोमांना मुख्य स्वरित स्वर पछीनी श्रुति. आ बंने स्थितिमां ह्रस्व स्वर पोतानुं लाक्षणिक वजन गुमावे छे, अने दीर्घ स्वरो पोतानी दीर्घता गुमावे छे.

स्वरित श्रुतिनी पूर्वेना स्वरो

§२३. (१) आदि श्रुतिरूप अ उ **नो लोप थाय छे.**

अ: रान (अरण्य–), रीठी (अरिष्ट–), लाई (अलात–), झाझुं जूपरा. झाझउं (*अध्यध्यक–), झांख (अध्यक्ष–).

उ: वाखरां (उपस्कर–), वायणुं (उपायन–).

बेसवुं, बेठुं, जूपरा. बइसइ, बइठउं (उपविशति, उपविष्ट–) **ए शब्दोने,** वाखरां **नी समक्ष राखतां तेओनी** ब–<व –**प्रक्रियानी हकीकते उछीना शब्दोना प्रकारमां गणवा जोइये.**

बे व्यंजन पूर्वेनो, स्वरित श्रुति पहेलांनो स्वर उंछळवुं, उंघडवुं, उंचरवुं **वगेरेनी असर द्वारा** उछाळवुं, उघाडवुं, उगामवुं (उच्छालयति, उद्घाटित–, उद्गामयति) **मां रही जवा पामे छे (लुप्त थतो नथी.)**

(२) तद्दन शब्दारंभे न होय त्यारे अ इ उ **नां** अ **तरीके दर्शन थाय छे.**

अ: पवार्डा (प्रवाद–), जळो (जलौका), कहाणी (कथानक–), वहालुं < *वभलक– (वल्लभ–), कराळ (कराल–).

इ: वहाणुं (*विमान–, हि. विहाणम्), चणोठी (हिं.द्र. चिणोठी), वणसवुं (विनश्यति), वळगवुं (विलग्यति), वरवुं (विरूप–), वसमुं (सम–१ **पछी विषम उपरथी.)**

उ: दवे (*दुवेद–), धराळ (धुरालु–), सहेलुं (हिं.द्र. सुहेल्ली).

उंव < उम **रहेवा पामे छे:** कुंवारो (कुमार–).

इ अने उ **रहेवा पामे छे, (अ) ज्यारे तेना पछी तरत** ज **मभा. स्वर आव्यो होय छे:** चितारां (चित्रकार–), निसासां (निःश्वास–), दुभावां (दुर्भाव–); **जुओ** §२३ **(२):** वळगवुं, वणसवुं **वगेरेना आभाससाम्ये** वछांडवुं (*विच्छोटयति).

विसरवुं, निवडवुं **मां स्वरभारवाळा** ई (विंस्सरति, निर्वृत–) **नुं** इ **प्रतिनिधित्व राखे छे.** बिलाडी (बिडाली), कुहाडां (कुठार–). **ए कदाच उछीना शब्दो छे.**

(३) मूळ गमे ते होय तेवा, स्वरित श्रुतिनी पूर्वेना जू. गु. आ, ई, ऊ, अे, ओ **ह्रस्व बनी जाय छे.**

आ: अबास (आवास–), अवाद (आवाद–), अहीर (आभीर–), चमार (चर्मकार–), कपूर (कर्पूर–), नठारां (*नष्ट-कार–), मँजार (मार्जार–), वखाण (व्याख्यान–), कपास (कार्पास–), पखाळवुं (प्रक्षालयति), पठाववुं (प्रस्थापयति), जनोई (यज्ञोपवीत–).

कधान (का+धान), कपूत, कठाम (का–), लगाडवुं (: लागवुं), धवाडवुं (: धाववुं), न्हवाडवुं (: न्हावुं) **अने तेवां** –आववुं, –आडवुं **धरावतां प्रेरक बधां रूपो.**

ई: शियाळो (शीतकाल–), दिवेल (*दीपतैल्य–), भिखारी (भिक्षाकार–), निसासो (निःश्वास–), चितारो (चित्रकार–), पिंजारो (*पिञ्ज-कार–), शिखावबुं (*शिक्षापयति).

ऊ: जुगार (द्यूत-उद्गार–), सुता(था)र (सूत्रधार–), चुनारो (चूर्णकार–), धुतारो (धूर्त–), उछाळवुं (उच्छालयति), उघाडवुं (उद्‌घाटयति), उगामवुं (उद्गामयति), उभा (चोखा, उद्धात–), दुभावो (दुर्भाव–).

ऐ: शेवाळ (शेवाल–), जेठाणी (: जेठ), पेटारो (: पेट), वेहवाई (वैवाहिक–).

ओ: गोवाळ (गोपाल–), घोडार (घोट-अगार–), सोहाग (सौभाग्य–).

स्वरित श्रुतिनी पछीना स्वरो

§२४. ज्यां आभाससाम्यने कारणे के कोई बीजां कारणे स्वरभारनुं खसवुं (shift) थन्युं होय, तेवां स्थानोने बाद करिये तो, स्वरित श्रुतिनी पछीना स्वरोनी वात करतां मात्र ह्रस्व स्वरो ज गणना पात्र बने छे. नीचे अन्यत्र स्वतंत्र रीते जेनुं वर्णन करवामां आवशे तेवी अंत्य श्रुतिने बाजूए राखतां ⊥ ◡ ≚, ⊥ ◡ ⊍ ≚, ≚ ◡ ⊥ ≚ आवी त्रण प्रकारनी स्थिति स्वरित श्रुति पछीना स्वरोनी छे. पहेली स्थितिमां श्रुति रहेवा पामे छे, पण स्वर पोतानुं वजन गुमावे छे अने सदा अ तरीके देखाय छे; बीजी बे स्थितिओमां (§ ३८ मां नीचे स्पष्टता थशे तेने बाद करतां) समूळगो स्वर ज नष्ट थाय छे. अस्वरित ह्रस्व स्वरनो लोप (decoloration – क्षय) जूपरा. सुधी जूनो छे.

(१) ⊥ ◡ ≚ प्रकार.

अ: कमळ (कमल–), पाथर (पथरो – प्रस्तर–), काजळ (कज्जल–), मांजर (मञ्जर–), गागर (गर्गरी), थावर (स्थावर), कांकण (कङ्कण–), पाखर (प्रक्षर–), पापड (पर्पट–), झालर (झल्लरी).

इ: वेरण (वैरिणी), हरण (हरिणी), मागसर (मार्गशिर–), तीतर (तित्तिर–), कणस (कनिश–), परखवुं < *परिख– (परिक्षते), वण = विण (विना).[३८]

उ: माकण (मत्कुण), फागण (फाल्गुन–), माणस (मानुष–), गूगळ (गुल्गुलु–), लसण (लशुन–), आंगळ (अङ्गुलि), ऊंदर (उन्दुर–), लाकड (हिं.द्र. लक्कुड–).

पण (आनो जो पुनर् साथे संबंध होय तो) मांना उ नो अ थवानी प्रक्रिया पालि पन मां मळे ज छे.

(२) ⊥ ◡ ⊍ ≚ प्रकार.

अ: आगळी (अर्गलिका), पांचमुं (*पञ्चमक–), काकडी (कर्कटिका), आंगणुं (अङ्गन–), काबरुं (कर्बर–), जाजरो (जर्जर–), दुबळुं (दुर्बल–), आंजणी < *अञ्जनिका (अञ्जन–), मुसळुं (मुसल–).

इ: गाभणी (*गर्भिणिका), गरणी (*गर्हणिका), पडोस (प्रतिवास–), कुटणी (कुट्टिनी); मभा. इ तरसममां : फरसुं (स्परिश– : स्पर्श–), कारसुं (हिं.द्र. कारिम), उजागरुं (हिं.द्र. उजागिर–).

---

३८ स्वरभारना बदला विशे जुओ उपर § १५.

उ: ससरो (*श्वशुरक–), आंगळी (अङ्गुलि–), तांडला (तण्डुल–), कुकडी (कुक्कुटी), चोगणा[३९] (चतुर्गुण–), पांगळुं (पङ्गुल–), पांसरुं (*प्रांशुरक– : प्रांशु–), हिंगळुं (हिङ्गुल–), कडछो (हिं.द्र. कडुच्छुआं).

(३) ⏓ ⏑ – ⏓ प्रकार.

अ: चकवा कुकवा पखवाज (जुओ § २१).

इ: परजाळवुं परसेव (जुओ § २१).

अंत्य स्वरो

§ २५. आभा. –अ:, –इ:, उ: ए मभा. –ओ, –ई, –ऊ तरीके देखा दे छे. बीजा अंत्य स्वरो एम ने एम रह्या छे. छतां, अंतर्गत (internal) श्रुतिओना ते तेने मळता स्वरोना करतां अंत्य स्वरो वधु ह्रस्वतावाळा होय छे ए सत्यनी संगति जोतां, एना भावी विकासने बतावनारी त्रण भूमिकाओ मळी आवे छे.

(१) –ओ, –ए ना –उ, –इ थया; बीजा दीर्घ स्वरो –आ, –ई, –ऊ ह्रस्व बन्या. अंत्य –आ नुं ह्रस्वीभवन अशोकना उत्कीर्ण लेखोमां मळी ज आवे छे; दा. त. गिरनारना लेखमां–राज तद तथ यथ.[४०]

(२) जूपरा. मां (मभा. व्यंजनने अनुसरी) बधा अंत्य स्वरो लुप्त थवाना मंडाणमां होय छे. उपर बताववामां आवेलां कारणोए, कहेवुं अशक्य छे, के ए स्वरो तद्दन लुप्त थई गया छे या पोतानुं वजन गुमाववाने कारणे सादा –अ ना स्वरूपमां आवी गया छे.

(३) अर्वा. गु. मां बधा ज अंत्य स्वरोनो लोप थई गयो छे.[४१] दा. त. सं. हस्त:, प्रा. हत्थो, अप. हत्थु, जूपरा. हाथु, हाथ, गु. हाथ.

अंत्य स्वरोना इतिहासनो विचार करतां हत्थो मां छे तेवा, मभा. व्यंजननी पछी लागला ज आवेला स्वर अने (आभा. व्यंजननो लोप थवाने कारणे) प्रा. घोडओ (घोटक:) मां छे तेवा मभा. स्वरनी पछी आवेला स्वर बन्नेनो भेद राखवो जोइये. पाछला घोडओ मां जूपरा. समयमां अंत्य स्वर रह्यो हतो अने पछी पूर्वना स्वरमां एकरूप थई गयो हतो. दा. त. जूपरा. घोडउ, गु. घोडो. आ पाछला वर्ग विशे नीचे § २६ मां वर्णन आपवामां आवशे.

मभा. अनुस्वार (? ओष्ठ्य अनुनासिक व्यंजन)–रूपे थयेला –म्– पूर्वे आभा. दीर्घ स्वरो मभा. मां ह्रस्व थता हता; दा. त. जिह्वाम्–जिब्भं. व्यंजनथी शरू थता पछीना शब्दने कारणे जे शब्दसमूहमां स्वरनी पछी बे के वधु व्यंजनो आवता हता, ते शब्दमां, पहेलां तो, ऊभी थती संधिनी असरने कारणे आ ह्रस्वीकरण घणुं करी हतुं. पछी तो अनुनासिक व्यंजननो लोप थयो अने अनुनासिकता स्वरमां अर्पाई गई. आम छतां अनुस्वारनी ओष्ठ्यता अं ना इतिहासमां प्रतिबिंबित थती रही. मभा. व्यंजननी

---

३९ प्रो. टर्नर आ शब्दमां ग मां शांत अ गणे छे, पण मने ए बरोबर नथी लागतुं. चो+गणुं स्पष्ट छे. –अनुवादक

४० सेनार्ट, २, पृ० ३२९

४१ प्रो. टर्नर अंत्य अकारनो लोप गणे छे; वस्तुस्थितिए ते लघुप्रयत्न छे. –अनुवादक

पछी आवतो अं अपभ्रंशमां छे तेम उ[४२] रूपे देखायो, अने गुजरातीमां तो लोप पाम्यो छे. मभा. स्वर पछी आवता अनुस्वारे अउं (जूपरा. –अउं, गु. –उं) एम मात्र अनुनासिकता सांचवी राखी छे.

–अः संबोधन विभक्तिनुं पूत < पुत्र, वगेरे.

–इ : आंख < अक्षि.

–उ : वीज < पालि विज्जु, सं. विद्युत्.

–आ : खाट (खट्वा), जीभ (जिह्वा), सान (सञ्ज्ञा), वांझ (वन्ध्या), रांड (रण्डा), वगेरे.

–ई : = आभा. ई : धमण (धमनी), चोथ (चतुर्थी), वगेरे.

= आभा. इः : आग (अग्निः), आंच (अर्चिः), वगेरे.

–ओ : हाथ < हस्तः, दांत < दन्तः, वगेरे.

–अम् = आभा. –अम् : द्वितीया ए. व. नरजाति, हाथ < हस्तम्, वगेरे, दूध < दुग्धम्, काल < कल्यम्.

= आभा. –आम् : द्वितीया ए. व. नारीजाति जीभ < जिह्वाम्, वगेरे.

इम् : द्वितीया ए. व. नरजाति के नारीजाति आग < अग्निम्, वगेरे.

सामसामा आवेला स्वरो

§२६. आभा. ना द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजनोनो लोप थया पछी मभा. ना संख्याबंध स्वरो सामसामा आवी पड्या. अपभ्रंश–युगमांय मोटे भागे आ स्थिति चालु रही, अने मात्र जूपरा. मां सौथी प्रथम सामान्य रीते संधि (पूर्व-परभाव) थयेली स्थितिमां आपणे तेओने जोइये छिये.

बे जुदा स्वरोने एक श्रुतिमां संकुचित करीने सामसामां आवेली स्थिति दूर करवानी प्रक्रियानो आधार मोटे भागे बोलीना वेगमां रहेलो छे. केटलीक वार शब्दो तेना ए प्रमाणे संकोच पामेला स्वरूपमां वपराता हता अने केटलीक वार संकोच पाम्या विना ज (सामसामा स्वरो रहेवा पाम्या होय ते रीते) वपराता हता, आम आ बेउ स्थिति घणा लांबा समय सुधी चालु रही हती. निःशंक रीते आजुबाजुनी बोलाती बोलीओनी असर नीचे, साहित्यकीय प्राकृत भाषाओमां केटलेक दरजे आ स्थिति जोवामां आवे छे.[४३] आवां संकोच पामेलां शब्द स्वरूपोना संख्याबंध दाखला पिशल आपे छे. केटलाक दाखलाओमां आवा प्रकारनो स्वरसंकोच निःशंक रीते जूनो अने सामान्य हतो.

गुजरातीमां उदाहरणो : मोर (मयूर–); पालिमां मोर छे; प्राकृतमां मोर–, मोले, मोरय–उपरांत जे मऊर–रूप मळे छे ते संस्कृतीभूत छे. गु. मोर शब्द मऊर उपर नहि, पण मभा. मोर–उपर आधार राखे छे, ते मोर मांनो ओ दीर्घ छे अने, नहि के विवृत ऑ. मध्यकालीन अने अर्वाचीन भारतीय भाषाओमां –य्– ए तद्दन अस्थिर तत्त्व छे; अने ते –य्– लुप्त थवामां द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजनोमां मोखरे हतो. केळ (कदली), बोर (बदर–) मांना संवृत दीर्घ ऎ अने ओ प्राकृत (*कदली, *बदुरो ?) ना मभा. केली अने बोर–मांथी पोताना अवतरणनो ख्याल आपे छे.

---

४२ पिशल, §३५१–२

४३ पिशल, §§ १६६–७

जूगुरा. मां नीचेना स्वरो संधि पामी चूक्या छे :–

(१) सजातीय स्वरो : अ के आ + अ के आ, इ के ई + इ के ई, उ के ऊ + उ के ऊ : दा. त. ऊण्हालऊ < ऊण्हआलऊ (उष्णकाल–), रा < राआ (राजा).

(२) अ + अे > अै, अ + ओ > ओ : दा. त. अनेरु < अप. अण्णअेरु (*अन्यकार्य–), पोलि < पओलि (प्रतोली).

(३) इ + अ, इ + उ > ई, उ के ऊ + अ > ऊ : दा. त. दीवी < *दीविअ (दीपिका), दीस (दिवस–), पीइ < पिअइ (पिबति); अमी < *अमिउं (अमृत), जमाई < जामाइउ (जामातृक–); चूउ < चुअउ (च्युत–), मूउ < मुअउ (मृत–); जू < जूअ (यूका), रूडउ < रूअडउ (रूप–).

अ + इ, अ + उ ए बाकी रहेता सामसामा आवेला स्वरो (जूगुरा. मां) हजीए सचवायेला छे. गुजराती भाषामां आ स्वरयुग्म एकरूप थई जाय छे अने पूर्ण (दीर्घ) विवृत अॅ अने ऑ रूपे आवे छे.

गुजरातीमां स्वरित श्रुतिमां रहेला संधिप्राप्त दीर्घ स्वरो पोतानी दीर्घता टकावी राखे छे. अस्वरित (स्वरित श्रुतिनी पूर्वनी अने पछीनी) श्रुतिओमां दीर्घ स्वरो ह्रस्व बने छे, अने स्वरित श्रुति पछीनी श्रुतिमां तेओ वधु सांकडा बने छे. श्री. नरसिंहराव भो. दिवेटिया[४४] एवो दावो करे छे के सांकडा बनेला स्वरोमांथी गुणनी दृष्टिए तेवा स्वरो परखी शकाय तेवा होय छे; पण विवृत स्वरो करतां वधु सांकडा छे तेम स्वीकारे छे. अहीं हुं तेओने अॅ ऑ तरीके कहुं छुं.

(१) सजातीय स्वरो

§२७. अ के आ + अ के आ > आ : वाणुं (वचन–), छाण (छगण–), चमार (चर्मकार–), कुंभार (कुंभकार–), शियाळो (शीतकाल–), उनाळो (उष्णकाल–), फळार (फलाहार–), भँडार (भण्डागार–), मांग (मातंग–), छावण < *छादापन– (छादयति).

उ के ऊ + उ के ऊ > ऊ : भूख < बुहुक्खा (बुभुक्षा); गू < *गूउ *गूहों (गूथ–).

(२) ओ अने अे

(अ) अे + अ > अे : देहरुं < *देवगर्हकम्, नेडुं < नेहडउं (स्नेह–).

अे + उ > अे : बेहु < द्वे–उभौ. ज्यारे –उ (< –ओ) पदने अंते होय छे त्यारे गुजरातीमां तेनो –व् थाय छे; दा. त. भेव < भेओ (भेद–), परसेव < सेओ (स्वेद–). मेवलो ए मेव < मेहो (मेघ–) उपरथी.

ओ + अ > ओ : सोनुं < सोअण्ण–(सौवर्ण–), जनोई (यज्ञोपवीत–).

ओ + आ < ऑ : वौहरॉ (व्यवहार–), जो ते तत्सम न होय तो.

(आ) ओ + इ के ई : गुजरातीमां इ जो अंतर्गत (interior) श्रुतिमां होय छे तो ते नष्ट थई जाय छे : जोशी (ज्योतिषिन्–).

---

४४ इन्डियन एन्टिक्वेरी, ४४, पृ. १९
३.१.४.

(१) नहि तो इ वधु विवृत थतां ओ साथे संधिस्वर-रूपे भावी रहे छे : ऑं, **दा. त.** कोयल [कौंळ] < कोइल- (कोकिल-), सोयां < सोई+आं (सौचिक-), हों < होइ (भवति), नों < न होइ.

(२) ज्यां अंत्य – ई ए इअ के इआ, **अने** इउ **नुं प्रतिनिधित्व धरावे छे त्यां ते जुदी श्रुति तरीके रहे छे;** दा. त. दोई, छोई, फोई. **तेनो अपवाद** सोयां **ने कारणे आवेलो** सोय (सौचिक-) **छे.**

(३) अ+ए > ए : अनेरुं < अण्णएरउं (अन्यकार्य-).

अ+ओ > ओ : पोळ (प्रतोली).

(३) इ के ई+अ के उ

इ के ई+अ > ई : पीळुं (पीतल-), शीळुं (*शीतल-), वीमा (वियम-), नीम (नियम-); **प्रथमा ए. व. नारी जाति** –ई < –इअ, –इआ < –इका : माखी (मक्षिका), मूठी (मुष्टि-), **वगेरे.**

इ के ई+उ > ई : पही < *पहिउ, –इओ (पथिक-), धणी (धनिन्-), माळी (मल्लिक-) **वगेरे.**

पिउ (प्रिय-) **ए अनियम-प्राप्त (archaic) रूप छे.**

(४)–इअं, –इउं

तालुमूलना उच्चीभवन अने नासिका द्वारना संकोच तरफ जती जीभनी उच्च स्थाने स्थिति जे कारणे कदाच थता अनुनासिकताना लोपथी मभा. अंत्य इअं, –इउं **नो** –ई **थयो. बीजी बाजू मभा.** –अअं, **जूपरा.** –अउं, **स्वर तरीके नीचा स्थानमां पडता होवाथी, अनुनासिकताने सांचवी राखे छे. (जुओ नीचे §२८.)**

–इअं : अमी (अमृतम्), मोती (मौक्तिकम्), मही (मथितम्), खाई (खादितम्), घी (घृतम्).

दहीं **ए** दधिकम् **नुं नहि, पण** दधीनि, **प्रा.** दहीणि, दहीइं, दहीइँ **नुं प्रतिनिधित्व धरावे छे.**

–इउं : शकवुं **साथे वपरातां क्रियापदोमांनो** –ई **प्रत्यय (दा. त.** मारी शकें छे **) छे ते संबंधक भूतकृदंतनो प्रत्यय (प्रा.** इअ **) नथी, पण मूळे हेत्वर्थ कृदंतनो (< प्रा.** –इउं, **सं.** –इतुम् **) प्रत्यय छे.**

(५) उ+अ

उ+अ > ऊ : सूडो < *सुअडउ (शुक-); उखाण (उपाख्यान-); **प्रथमा ए. व. नारी जाति** ऊ < –उअ, –उआ < –उका : वहू (वधू-), सासू (श्वश्रू-), वाळू (वालुका).

(६) इ के ई+आं, इअउ

इ के ई+स्वरित आं > इया, या. **उपर आवेला इ के ई+अस्वरित** अ **थी आनो भेद स्पष्ट रीते लक्ष्यमां राखवो; दा. त.** शियाळ (शृगाल-), शियाळो (शीतकाल-), पियास (पिपासा), पियार (प्रियकार-).

मभा. –इअउ > –यों, **भूतकृदंत** –यों < –इअउ < * –इत-क–; **दा. त.** माग्यों **जूपरा.** मागिअउ.

अ+इ के उ

§२८. (१) शब्दांतर्गत द्विश्रुतिमध्यगत य् अने व् ना वहेलांना थयेला लोपने कारणे मभा. भूमिकामां बहु वहेलानो संकोच बन्यो अने अ अने इ अथवा अ अने उ सामसामा आवी रह्या.

अ+इ (कई स्थितिमां अहीं व् नो लोप थयो छे ते जाणवामां नथी आव्युं) > ऍ, पालि थेर – (स्थविर –).

अ+उ (य् नो लोप थये) : गु. मोर, पालि मोर – (मयूर –).

केळी (प्रा. केली < ? *कदिली : सं. कदली), बोरडुं (प्रा. बोर – < ? *बदुर – : सं. बदर –) नो इतिहास मळी शकतो नथी.

(२) द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजनोना लोपने कारणे, बीजी रीते, मभा. ना अइ के अई, अउ के अऊ अलग अलग रीते जूपरा. समय सुधी जळवाई रह्या छे. त्यार पछी ते ऐ औ एवा संधिस्वरोमां परिणम्या, जे केटलीक मभा. भाषाओमां जळवाई रह्या, पण आगळ आवतां गुजरातीमां ते पूर्णप्रयत्न ॲ ऑ ना रूपमां[४५] विकास पाम्या. आ ॲ नी पूर्वे अने पछी गुजराती स् अविकृत रहे छे.

(अ) अंइ : पेंसवुं (प्रविशति), बेंहर (बधिर –), छें (पालि अच्छति), सें (साइं ने स्थाने जूपरा. सइं, अप. सआइं, सं. शतानि. आ विकार सउं, सं. शतम् नी असरथी छे.) बेहन (भगिनी), भेंस (महिषी), पेहरवुं (जूपरा. पहिरइ), बेंसवुं (उपविशति).

अंइ : पेंठुं (प्रविष्ट –), बेंठुं (उपविष्ट –), पेहलुं (अप. पहिल्लउ), घेलुं < *गहिल्लउ (ग्रथिल –).

अई : घेरुं (गभीर –).

(आ) अंउ : नोंळियो (नकुल –). पोंहळुं (पृथुल –), बोंहळुं (बहुल –), लोंडो (लकुट –), होंण (आ वर्षे – अधुना), छों (भले – पालि अच्छतु), तों (ततः), भों (नर जाति – भय –), बोंह (वह –). सों (शत –), चोंबो (चतुर्वेद –) आ एक शब्द तेमांना व् ने कारणे उछीनो शब्द छे.

अंउ : चोंथ (चतुर्थी), चोंक (चतुष्क –), चोंमासुं (चतुर्मास –), अने चों – = सं. चतुर् साथेना बीजा शब्दो, पोंणुं (पाद-ऊन –), सोंफ (वळियारी – शतपुष्प –).

(इ) शंकास्पद व्युत्पत्ति (etymology) ना बीजा शब्दोमां एवी ज रीते गुजराती ॲ ऑ आ बे स्वरो मभा. ना ऐ औ ने लगता छे; दा. त. खेंचवुं (हिं. खैंचना), गेंडो (हिं. गैरा), थेली (हिं. थैली), बेंल (प्रा. बइल्ल –, हिं. बैल), मेलुं (हिं. मैला), वगेरे.

(ई) ऐ औ संधिस्वरवाळा उछीना शब्दो गुजरातीमां ॲ ऑ साथे बे रीते मालूम पडे छे : (१) तत्सम – दा. त. वेर (वैर –), वेराग (वैराग्य –), गोरव (गौरव –), सोभाग (सौभाग्य –); अथवा (२) अरबी, फारसी के अंग्रेजी उछीना शब्दो.[४६]

---

४५ "सर आशुतोष मुकरजी – ज्युबिली अंक" मां "गुजरातीमां ॲ अने ऑ" ए निबंधमां प्रो. टर्नरनो लेख, तेमां आ चर्चा विस्तारथी छे.

४६ उपर सूचवेला मारा लेखमांना दाखला जुओ.

(३) स्वरित श्रुति पछीनी अंत्य श्रुतिओमां आवेला अॆ ऑ टूंका बने छे अने अर्ध-विवृत अॅ ऑ कहेवाये, ह्रस्व अॅ ऑ ने बहु निकट आवी रहे छे.

(अ) –अइ : नॅं (अप. अण्णइ : अन्य–), त्रीजा पु. ए. व. नो प्रत्यय –अॅ (–अति) बीजा पु. ए. व. नो प्रत्यय –अॅ (अप. –अहि), त्रीजा पु. ब. व. नो प्रत्यय –अॅ (अप. अहिं), तृतीया ए. व. नो प्रत्यय –अॅ (अइं, प्रा. अएण = –अएं, सं. –अकेन), सप्तमी ए. व. नो प्रत्यय अॅ (अप. –अहिं, सं. –अस्मिन् अथवा प्रा. –अए, सं. –अके).

–अउ : त्रीजा पु. ए. व. ना आज्ञार्थ –ऑ (–अतु), बीजो पु. ब. व. वर्तमान –ऑ (अप. –अहु < * –अथः), प्रथमा ए. व. नर जाति –ऑ (अप. –अउ, सं. –अकः).

(आ) समासमां पहेला शब्दमांनो स्वरभार सांचववामां आवतो हतो. आ वस्तु जूना शब्दरूपोमां जोवामां आवे छे के ज्यां पछीनो शब्द दीर्घ स्वर के व्यंजन टूंकवातां टीको बन्यो होय छे; दा. त. राठउड (राष्ट्रकूट–), चीतउड (चित्रकूट–), सीहउत (सिंहपुत्र–).

आ प्रकारना शब्दो गुजरातीमां ऑ थी बताववामां आवे छे.

§ २९. इ के ई + गु. ओ के आ ना –इयो –इया बन्यो छे : वाणियॉ : *वाणी < वाणिजः, साथियॉ : *साथी < स्वस्तिकः, आगियॉ, गोबाळियॉ, काळियुं, घासियॉ, वगेरे; नोळियॉ : *नौळि < *नकुलिका (नकुल–).

ऊ + गु. ओ के आ ना –उवॉ उवा बन्या छे : कुवॉ < *कूअउ (कूप–), जळ जांबुवॉ : जांबू, जुवॉ : जू.

संप्रसारण

§ ३०. (१) पूर्वे आवता अव् के अय् थी संप्रसारण अथवा‍नुं वलण के ह्रस्व अकारनो लोप ए इन्डो-आर्य भाषाओना इतिहासमां जूना समयमां प्रचलित हतां; अने पालिमां तो सं. अय अने अव ने स्थाने ए ओ आवी चूक्या हता, जे एओना पछीना विकासमां, पछी ते आभा. ना ए ओ ना के ऐ औ ना प्रतिनिधि होय, मभा. ना ए ओ मां परिणत थया हता.

आभा. अय : देवुं (पालि. देति < *दयति : ददाति).

आभा. अव : होवुं (भवति), ओस (अवश्या), ओंशियाळुं (अवशिन्–), ओछुं (अवच्छिन्न–), कोळियुं (कवल–).

(२) पालि अने अशोकना उत्कीर्ण लेखोमांये हजु जळवाई रहेला, द्विश्रुतिमध्य-गत –प्– नो आखरे –व्– थई गयो ते पछी पण आ मभा. समयमां चालु जीवंत रह्यो हतो; दा. त. प्रा. ओसरइ (अपसरति), ओभास–(*अपवास–), ओहत्थ–(*अपहस्त–).

मभा. अव < आभा. अप : खोवुं (क्षपण–), ओट (अपवृत्ति–).

सं. अप केटलाक गुजराती शब्दोमां ओ तरीके जोवामां आवे छे. आ शब्दोमां अप अव मोडे मोडे साहित्यकीय उछीना तरीके फरी दाखल करवामां आवेला हता;

दा. त. ऑसरवुं (अपसर्पति); ज्यारे, कदाच आभा. अप नी पछी बे के वधु व्यंजनो आवतां तेवी स्थितिमां ते मभा. समयमां थई अव तरीके रह्यो हतो; दा. त. कोडी (जूपरा. कउडी, प्रा. कवड्डिआ, ऋग्वेदमांना कपर्दिन् ने अनुसरतो सं. कपर्द –).

(३) मोडाना मभा. समयमां नवी रीते आवेला अय अने अव ने ते ज सिद्धांतनी पण असर थई छे, पण जूपरा. मां गउरव, कसउटी, फलउघी, करउत साथोसाथ गवरव, कसवटी, फलवघी, करवत जेवां जे रूपो मळे छे तेमां शरू थयेली प्रक्रिया बहु आगळ वधी नहोती, अने मभा. अइ अउ ना किस्सामां बन्युं तेम तेमांथी ऊपजी आवेला ध्वनि ते हालना ॲ ऑ छे. ए ज रीते स्वरित श्रुति पछीनी श्रुतिमां ते ॲ ऑ रूपे थया छे.

(अ) मोडेना मभा. अय (अ – अ मांनी सामसामा बे स्वरो आववानी स्थितिने य् ना उमेरणथी दूर करवामां आवी हती तेवी कोई बोली द्वारा के संस्कृत, साहित्यकीय प्राकृत अने जैन प्राकृत द्वारा आवेला उछीना शब्दोमां) : तत्सम नॅण (नयन –), रॅण (जूपरा. रयणि, सं. रजनी), वॅण (जूपरा. वयण, सं. वचन –).

मोडेना मभा. अव < सं. अब : नव तरीके करी आवी रह्या पछी नॉम (नवमी).

< सं. अवा : गॉख (गवाक्ष –).

< सं. अप : ऑसरवुं (अपसरति), ऑगळवुं (*अपगलति), ऑर (अपर –), नॉखुं (अन्यपक्ष –), कॉण (जूपरा. कउण, कवण, सं. कः पुनः), कॉडी (कपर्द –).

< सं. अपा : ऑरुं (अपार –).

< सं. अर्म : सॉंघुं (समर्घ –), सॉंपवुं (समर्पयति), सॉंगुं (समाङ्ग –), सॉंधां (समगन्ध –).

सॉंघुं ने अनुसरी मॉंघुं. जॉळ (यमल –) स्वरित श्रुति पछीना – म् – नो लोप थवे आवेलो उछीनो शब्द छे.

(आ) समासनी, स्वरित श्रुति पछीनी श्रुतिमां (जुओ उपर § २८) मोडेनो मभा. अव : फलॉघी (जूपरा. फलवघी; < *फल-वर्धिका), कसॉटी (जूपरा. कसवटी < कस-पट्टिका), बारॉट (जूपरा. बरवट –), देशॉटो (जूपरा. देसवटउ), करॉत (जूपरा. करवत < कर - पत्र –).

स्वरभक्ति

§ ३१. यॅ प्रत्यय जाळवता शब्दो उपरांत – रिअ – अने – रिय – वाळां जोडकांओ पण हतां. आ ऋग्वेदमां,[४७] अने संख्याबंध शब्दोमां प्राकृतमां[४८] मळी आवे छे; दा. त. प्रा. कज्ज – के केर – (कार्य –), गु. काज अने अनेरुं (*अन्यकारिअ –). प्रत्यय तरीके गुजरातीमां एरुं पछी चालु रह्यो छे : दा. त. घणेरुं (घन –), भलेरुं (: भलुं) बळेरां (: वाळां).

४७ मेकडोनल : वेदिक व्याकरण, § ४८ अ, १

४८ पिशल, § १३४, १७६

सुरत अने भरूचमां र्य > इर : दा. त. मार्यां > माइरां. प्रधान गुजरातीमां व्य-क्ता यूथमां पण स्वरभक्ति मळे छे : दा. त. आव्यां > आइव्यां.[४९]

स्वरप्रक्षेप के विप्रकर्ष

§ ३२. संस्कृतमांना – र्ष् – धरावता संख्याबंध शब्दोमां, प्राकृतमां आवतां वच्चे प्रक्षेप तरीके स्वर, मोटे भागे इ, उमेरवामां आवे छे.[५०] लॅटिनना extempulo साथोसाथ extemplo वगैरे जेवां जोडकांओनुं आ प्रतिनिधित्व धरावे छे के साहित्य-कीय संस्कृतमांथी उछीना शब्दो छे, ते कही शकातुं नथी. कोई पण रीते, आ प्रक्रियानो आरंभ ऋग्वेदमां जोवामां आवे छे. र् अथवा अनुनासिक व्यंजन साथे व्यंजननुं जोडाण होय तेवी रीते अहीं स्वरभक्तिनो स्वर केटलीक वार विकास पाम्यो होय छे.[५१] प्राकृतना केटलाक शब्दो आ तत्त्व बतावे छे, ते जो मूळमां तत्सम होय तो ते कोई कारणे, र्ष् नो स्स (assimilation – क्रिया) थया पछी अने द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजन-नो लोप थया पछी संस्कृतमांथी उछीना मळ्या होवा जोइये; दा. त. आदर्श –, प्रा. आअरिस –, सर्षप –, प्रा. सरिसव –. गुजरातीमां आ शब्दो आरसा, सरसव तरीके देखाय छे. एज रीते अम्ल प्रा. अम्बिल (< *अम्ब्ल –), गु. आमलुं तरीके देखाय छे.

स्वरराग

§ ३३. अ < सं. अ धरावता गुजराती संख्याबंध शब्दोमां अ ने स्थाने स्वरित श्रुतिमां ॲ, अने अस्वरित श्रुतिमां ॲ. केटलाक दाखलाओमां मात्र ॲ वाळां रूपो ज वपराय छे; दा. त. घॅर < *घरि < *गर्हे.

आ शब्दोनो मोटो भाग नामोनो छे, जे बधां ज नारी जातिमां छे, अने ईकारांत संस्कृत रूपोने झाझे भागे मळतां छे. एम मालूम पडी आवे छे के जूपरा. समयमां मळी आवता आ ईकारे पूर्वना अ ना मानने, कोई एक गुजराती प्रांतिक बोलीमां तो चोक्कस, असर करी छे.

कॅड के कड (कटि –), मॅस (मशी), हॅड ("दिव्यावदान" मां हडि –), खॅळ (मराठी. खळ), चॅळ के चळ, पॅर (: नेपाळी परि), तॅड (तट –), नॅळ के नळ (नल –), सॅर के सर जेम के मोतीनी सॅर; आ बधा शब्दो नारी जातिना छे.

आ साथे तारिख साथोसाथ तॅरिख उच्चारण सरखावी जोवुं.

व्यंजनोनो इतिहास

§ ३४. आभा. ना व्यंजनोनो सामान्य विकास, तेओमांथी ऊठता प्रांतीय भेदोना खास प्रश्न साथे, डॉ. ब्लोके रजू कर्यो छे. गुजरातीने खास उद्देशीने ते विकासमांनी खास हकीकतोनी नोंध लेवानुं अहीं योग्य थई पडशे.

---

४९ भारतीय भाषा समीक्षा, ग्रियर्सन, ग्रंथ ९ मो, भाग २, पृ. ३३१

५० पिशल, §§ १३१ – ४०

५१ मॅक्डोनल, वै. व्या. § २१

विकासना गाळा दरमियान खास नोंधवा लायक हकीकत ते स्पर्श व्यंजनोना सांधाओ (articulation) नी वधती जती नबळाई ए छे. आ त्रण रीते जोवामां आवे छे: (१) अंत्य स्पर्श व्यंजननो लोप; (२) स्पर्श व्यंजनोना समूहमां पूर्वना व्यंजननो पछीना व्यंजनमां पूर्वपर वर्णसादृश्य (assimiation) [आ बंने तत्त्वोनुं मूळ स्पर्श व्यंजनोना आ स्थितिमां रहेला, धीमा (implosive) उच्चारणमां रहेलुं छे]; (३) द्विश्रुतिमध्यगत अघोष स्पर्श व्यंजनोनुं धीमेथी थतुं उच्चारण (sonorization) अने बधा ज द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनोनुं सहेतुक अदर्शन. महाप्राण व्यंजनोना विषयमां एवुं बन्युं के मात्र तेमांनुं ह् उच्चारण ज रहेवा पाम्युं. आ प्रक्रियानां जूनामां जूनां चिह्न ऋग्वेदनी भाषामां दृश्य थई चूक्यां हतां, के ज्यां तालव्य स्वर पूर्वे इयु. घ अने घ् (ǵh अने gụh), तथा कोई एक चोक्कस परिस्थितिमां इयु. ध ने स्थाने ह आवी जतो हतो.

आ विकास चालु रह्यो हतो; पण सगवडनी खातर प्रधान लिखित पुरावो आळवनारा चार युगने लगभग लगती चार भूमिकामां तेने विभक्त करी शकाय: (१) अशोकना उत्कीर्ण लेखोनी भाषा सुधीनी वहेलांनी मध्यकालीन भारतीय; (२) हेमचंद्रनी पूर्वेनी थोडी सदीओ सुधीनी साहित्यकीय प्राकृतो; (३) जूनी पश्चिम राजस्थानीना ग्रंथो सहित वहेलांनी अर्वाचीन भारतीय; (४) अर्वाचीन गुजराती.

§ ३५. पहेली भूमिकामां बधा अंत्य व्यंजनोनो लोप अने व्यंजनसमूहोनो पूर्वपरभाव (assimilation), नीचे बताववामां आवेला केटलाक अपवादो सिवाय, चालु रहेवा पाम्यो हतो. आभा. मां ज्यां नजीकना ष् नी असरने लीधे दंत्य व्यंजनोने स्थाने अथवा न् ना विषयमां नजीकना र् ने कारणे मूर्धन्य व्यंजन बन्यो होय छे, तेवा दाखलाओमां ज परिमित हता तेवा मूर्धन्य व्यंजनो संख्यामां खूब वध्या छे. आ वृद्धि कदाच द्रविड भाषा बोलनाराओनी असरने लीधे होय के जेओनी भाषामां ए बेउ स्थानना व्यंजनोनो स्पष्ट भेद रहेलो छे. ते आ स्थानोमां स्पष्ट छे: पूर्व-परभाव–प्रक्रियानां उदाहरणोनी वधती जती संख्यामां; दा. त. *दन्द्र–(: δένδρον) > द्रण्ड–> डण्ड–गु. डांड; (२) देखीती रीते दंत्यनो मूर्धन्यमां आगंतुक फेरफार: दा. त. दश–> डश–, गु. डसवुं; पत्–> पट्–, गु. पडवुं; (३) मोटी संख्याना नवा शब्दोमां आ युग दरमियान स्पष्ट जुदा तरी आवता बोलीने लगता भेदो जाणवामां आवे तेवा आवी रह्या छे, ते आ छे:–

(१) स्ट्, स्थ्, ह्, ह् अने स्पर्श व्यंजन र् एओ वायव्य सरहदनी भाषाओमां पूर्वपर-भाव पाम्या विना अबाधित (unassimilated) रहे छे. गुजरातीमां तेओ (पोतामांनां बेउ व्यंजनमांथी आदिनो व्यंजन) परभाव (assimilation) पामे छे.

(२) श्, ष्, स् नो पश्चिमना देशोमां स्, पूर्वना देशमां श् (पूर्वनी एक प्राकृतमां श् < श्, स् < ष् स्) अने वायव्य सरहदनी (पिशाच) भाषाओना जूथमां श् < श्, ष्, स् < स्, एम जुदा तरी आवे छे. गुजरातीमां मात्र स् छे [गुजराती श् ए पछीना नवा द्वैतीयिक विकासमां पाछो स्थान पामे छे].

(३) क्ष ने स्थाने नैर्ऋत्यना देशोमां च्छ्, पूर्वना अने उत्तरना देशोमां क्ख् होय छे; गुजरातीमां क्ख् छे.

(४) स्म्, ष्म् नो वायव्य सरहदनी बोलीओमां स्स्, ज्यारे अन्यत्र म्ह् होय छे; गुजरातीमां म्ह् छे.

(५) ऋ के र्+दंत्य व्यंजन होय तेवा संयोगमां दंत्यनो पूर्व देशमां मूर्धन्य थाय छे, ज्यारे पश्चिममां दंत्य ज रहेवा पामे छे. परंतु आ दाखलामां पारस्परिक फेरफार एटली जूनी अने लंबायेली छे के अर्वाचीन भाषाओनो एक रीते के अन्य रीते विकास थयो छे ते चोक्कस रीते नक्की करवानुं लगभग अशक्य छे. गुजरातीनी प्रधान प्रक्रिया तो दंत्यने लगती छे.

§ ३६. त्रीजी भूमिकामां द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनोनुं धीमेथी उच्चारण (sonorization) अने तेओनो लोप चालु ज रहेवा पाम्यो छे. पूरेपूरो लोप थया पूर्वे तेओने स्थाने य-श्रुति थयेली जणाय छे के जे य-श्रुति कां तो रहेवा पामी या तो त्यां हती तेवो ख्याल पण न आवे ते रीते लुप्त थई गई. मोटे भागे द्विश्रुतिमध्यगत –म्– ने स्थाने सानुनासिक ओष्ठ्य अंतस्थ –वँ– थयो. कदाच आरंभमां रहेलाना अपवादे न् नो ण् थयो के जे, हाल गुजरातीमां छे तेवा सानुनासिक मूर्धन्य – ँळ् – ने स्थाने आवी रह्यो होवो जोइये.

आ युगना प्रांतीय बोलीओने लगता भेद आ प्रमाणे छे :–

(१) केटलीक वायव्य सरहदनी (पिशाच) भाषाओमांना द्विश्रुतिमध्यगत दंत्य व्यंजनोने ळ् थयो छे. गुजरातीमां त्रीजा स्पर्श व्यंजनोनी साथोसाथ तेओनो लोप थयो छे.

(२) केटलीक परिस्थितिमां द्विश्रुतिमध्यगत –म्– गुजरातीमां रहेवा पाम्यो छे.

§ ३७. त्रीजी भूमिकामां, वहेलांना पूर्वापर वर्णसादृश्यने कारणे आवी रहेला बेवडा व्यंजनो ढीला पडे छे [एकनो लोप थाय छे] अने पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे. आनी आ प्रक्रिया, स्वरनी साथे अनुनासिकता एकरूप थई जाय छे तेवा वर्गीय अनुनासिक व्यंजन आव्या होय तेवामां देखाय छे, ज्यां पूर्वनो स्वर दीर्घ थाय छे. आ प्रक्रिया आभा. नी द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनोनी पद्धतिने फरी स्थापित करे छे.

आ युगना प्रांतीय बोलीओने लगता भेद आ छे :–

(१) पंजाबी अने बीजी वायव्य सरहदनी भाषाओमां बेवडा व्यंजनो रहेवा पामे छे. गुजरातीमां ते सादा बनी जाय छे.

(२) अनुनासिक व्यंजन पछी आवेला अघोष स्पर्श व्यंजनो (breathed) पंजाबीमां घोष बने छे (voiced). गुजरातीमां तेओमां कांई फेरफार थतो नथी.

(३) व्– अने –व्व्– पश्चिममां व् तरीके रहे छे, परंतु पूर्वमां तेओनो ब् थई जाय छे. गुजरातीमां व् ध्वनि छे.

(४) ण् नो पूर्वमां न् थाय छे, पण पश्चिममां (शब्दारंभे अथवा बेवडो ण होय ते सिवाय) एमने एम रहे छे. गुजराती ण् ने साचवी राखे छे.

(५) पश्चिम अने उत्तरमां द्विश्रुतिमध्यगत ल् नो ळ् थाय छे, पण ते पूर्वमां एम ने एम रहे छे. गुजरातीमां ळ् छे.

§ ३८. चोथी भूमिकामां मभा.भा अंत्य स्वरोना, अने व्यंजनो वच्चेना केटलाक ह्रस्व स्वरोना लोपे अंत्य स्पर्श व्यंजनोनी, पूर्वपर-वर्णसादृश्य न पामेला (unassimilated) व्यंजनसमूहोनी आभा. प्रक्रियानी फरी स्थापना करी छे; दा. त. गु. वात, नास, आग, आर, वगेरे; वातनां, आगनुं, करतां, लागतां, कातरी वगेरे.

§ ३९. आ फेरफारोने कारणे नीचेनी गुजराती व्यंजनपद्धति आवी रही छे:

स्पर्श व्यंजनो : क्, ख्, ग्, घ्, ट्, ठ्, ड्, ढ, त्, थ्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ्.

तालव्याभासी स्पर्श व्यंजनो : च्, छ्, ज्, झ्.

अस्पर्श व्यंजनो : स्, श्, य, व्, र्, ल्, ळ्, ह्.

अनुनासिक व्यंजनो : ङ्, ण्, न्, म्.

आमांनो कोई पण व्यंजन शब्दने अंते तेम आदिए अने स्वरोनी वच्चे आवी शके छे. अपवादरूपे ङ्, ण् अने ळ् कदी शब्दने आरंभे आवता नथी. उपर समझूती आप्या प्रमाणे आ व्यंजनो एकबीजा साथे संयुक्त बनी शके छे. नीचे ते ते व्यंजनोना विशिष्ट वर्गोने मथाळे तेओना उच्चारणना विषयमां नोंध मळशे.

अंत्य स्पर्श व्यंजनो धीमा उच्चारणवाळा (implosive) बनी चूक्या छे; अने जो के चालु बोलीमां व्यंजनसमूहोना आदि व्यंजनो केटलीक वार धीमा-जबरा संयोजन — (implosive – explosive articulation) ने पाम्या होय छे, जेम के आग-थी (āgəthī), तेम छतां ज्यारे घोष स्पर्श व्यंजन अघोष स्पर्श व्यंजन साथे परभाव पाम्यो होय छे, जेम के आगथी < [आकथी a·kthī], त्यारे तेओ बधु सामान्य रीते धीमा (implosive) उच्चाराय छे.

आ क्रिया (process) केटली आगळ वधेली छे ते अच्छेर < आद(ध)शेर, अद(ध)-शेर (: आध) तेवां छूटांछवायां रूपोमां जणाय छे, के ज्यां आगमां वगेरे साथोसाथ आगथी जेवा शब्दोमां बन्युं छे तेम परभाव (assimilation) नां परिणामने साथे साम्याभास (analogy) नुं फळ सतत (continually) स्थान पामी शकतुं नथी. तेथी, आ व बळो आज सुधी काम करतां चालु रह्यां छे, के जेने लीधे मूळनी आभा. व्यंजनपद्धतिमां सबळ सुधारणा थवा पामी.

महाप्राणता

§ ४०. गुजराती महाप्राण मुख्य स्वरूपमां संस्कृतने अनुरूप छे. परंतु तेमां केटलोक प्रकारभेद छे. आ बे प्रकारमां विभक्त करी शकाय :

अ. (महाप्राण गुमावनारी सिंहली भाषा सिवायनी) बधी अर्वाचीन भारतीय भाषाओमां सामान्य छे तेवा अने जेमां अर्वाचीन रूपो संस्कृत महाप्राणोना विरोधे प्राकृतमां सचवायेलां छे; अने (आ.) जेनां मूळ मात्र गुजरातीमां ज छे तेवा; आ पाछलो प्रकार एवो छे के बीजी भाषाओमां स्वतंत्र स्थान धरावतां वलणोथी असरे होई शके.

अ. डॉ. ब्लोके पहेला प्रकारनी चर्चा करी छे.[५२] तेमणे आपेलां मराठी उदाहरणो गुजरातीनां घणां खरां उदाहरणोनी साथे ऊभी शके तेवां छे; दा. त. खापरिंयुं[५३] (नाकनो रोग, कर्पर–), खीळो[५४] (कील–, खील–), फणस (पनस–), फरशी (परशु–), फांसो (पाश–), भुंसुं (बुष–), खेळवुं[५४] (क्रीड्–). सं. कुब्ज–, कुभ्र–ने बदले गुजरातीमां महाप्राणरहित मात्र कुबडुं (: मराठी. खुजा, खुबा, कुबडा), अने बदर–ने बदले बोर, बोरडुं (: मराठी. भेर) रूप छे.

स् अथवा तो र् ना अस्तित्वने कारणे संस्कृतमां ब् थयो छे तेवा आभा. भ् ने बताव-तो भ् सचवायो होय, पण बीजा दाखलाओमांनुं महाप्राणत्व एना ए शब्दमां रहेला स् अथवा र् नी हाजरीने कारणे अथवा तो बीजा धातु साथे थयेला मिश्रण जेवां बीजां खास कारणोए थयुं होय, एवा डॉ. ब्लोकना निर्णयमां हजी कांई पण उमेरवा जेवुं मळ्युं नथी.

शब्दमां अंदर म्भ् अने म्ब् बन्ने प्राचीनने लगतापणा जेवुं देखाय छे के जेनी छाप गुज. मां पडी छे. ऑळँबो(भो) (लम्बते). पालखी (पर्यङ्क–, मराठी. पालकी(खी)) आ बधाणु टका चोकस उक्तीनो शब्द छे.

आ. बीजा प्रकारमां महाप्राणना लोपना संख्याबंध दाखलाओ छे.

(१) अंत्य महाप्राण (खास करीने ज्यारे शब्दमां बीजो महाप्राण होय छे त्यारे) पोतानी महाप्राणता गुमावे छे. डॉ. ब्लोक कहे छे तेम, वर्णमाळा उपरथी धारवानुं मळे तेना करतां अर्वाचीन बधी भाषाओमां क्यांय वधु सामान्य छे. नेपाळीमां हुं जोई शक्यो छुं, तेना उपरथी हुं निर्णय उपर आव्यो छुं के लेखनमां व्यक्त करवामां आवता होय छतां पण शब्दने अंते आवेला होय या व्यंजन पछी लागला ज आवेला होय तो बधा महाप्राण व्यंजनो पोतानी महाप्राणता गुमावे छे. आ, लेखनमांनी चालु रूढि-प्रियताने कारणे अथवा तो आवी स्थितिमां जेमां महाप्राण न होय तेवा संलग्न रूपोनी असरने कारणे निर्विवाद वात छे. निर्महाप्राण रूपोनी संलग्न रूपोना अनन्त्य महाप्राणो उपर ऊलटी असर पण थाय छे. जोवानी तक मळी छे तेवी नेपाळी, गुजराती अने हिंदि ए त्रण भाषाओमांनी पहेली बे के जे ह् नी तद्दन उपेक्षा करे छे (नेपाळीमां तद्दन अने गुजरातीमां मोटे भागे द्विश्रुतिमध्यगत ह् लुप्त थयो छे) ते बेउ भाषाओ पण अंत्य व्यंजनोनी निर्महाप्राणताने बरोबर अमलमां मूके छे; ज्यारे द्विश्रुतिमध्यगत ह् साचवती हिंदी अंत्य महाप्राणने पण साचवी राखे छे. गमे ते रीते, गुजराती महाप्राणोनी महाप्राणता कोई पण स्थितिमां हिंदीमां छे तेना करतां खूब दुर्बळ छे.

गुजरातीमां अंत्य निर्महाप्राणताना दाखला आ छे: बूज (बुध्य–), दाज(झ) (दाह्य–), भीक(ख) (भिक्षा), भूक(ख) (बुभुक्षा), जांग(घ) (जङ्घा), गूज (गुह्य–),

---

५२ ब्लोक, § ८४

५३ आ शब्दमां प्रो. टर्नर प मां शांत अ गणे छे, केम के, p एकलो ज आप्यो छे, अ बरोबर नथी. –अनुवादक

५४ प्रो. टर्नर ळ आपे छे. गुजरातीमां ल ज छे. –अनुवादक

सांज (संध्या), ईंट (इष्टा), ऊंट (उष्ट्र–), काट(ठ) (वाणीआमांनी बोली काठी – प्रा. कट्ठि–), कोढ(ढ) (कुष्ठ–), पीठ (पृष्ट–), काट(ठ) (काष्ठ–), अद– : आध (अर्ध–).

(२) नेपाळीनी जेम गुजरातीमां पण बीजा व्यंजन पछी लागला ज आवेला महाप्राणनुं महाप्राणता गुमाववा तरफ वलण छे (जो के अंत्य व्यंजनोना विषयमां लेखनमां आ सदा बतावबामां नथी आवतुं); दा. त. बुजवुं (बुध्यते), पण बुझावबुं (समझावबुं); समजबुं (: हिं. समझना).

आ प्रकारे जे रूपोमां निर्महाप्राण व्यंजनो दाखल थयेला छे, तेवां रूपो उपरथी थतां रूपोमां एवो व्यंजन स्वरनी पूर्वे आव्यो होय तो उच्चारणनी दृष्टिए तेनी महाप्राणता नष्ट न थाय; दा. त. समजवुं उपरथी समझावुं, पलटवुं (? पर्यस्त–) उपरथी पाल्टो, शिकवुं (शिक्षते) उपरथी शिकाववुं.[५५]

कंठ्य व्यंजनो

§४१. आभा. ना कंठ्य व्यंजनोए गुजरातीमां उच्चारणक्रियानां प्रकार अने स्थान बदल्यां नथी; अने ज्यां ते शब्दारंभे आव्या छे अथवा तो व्यंजनसमूहोनुं ओगळाण (simplification) थयुं छे, त्यां क्, ख्, ग्, घ् रूपे आवी रह्या छे.

उत्तर गुजरातमां इ, ए के य् नी पूर्वे के पछी आवेला क्, ख्, ग् ना च्, छ्, ज् थाय छे; दा. त. दिचरो (दिकरो), छेतर (खेतर), नांखवुं साथे नांछ्या (नांख्या), लागवुं[५६] साथे लाज्यां (लाग्यां).

तालव्य व्यंजनो

§४२. द्विश्रुतिमध्यगत स्पर्श व्यंजनोनो य् नहोतो थयो त्यांसुधी, अत्यारे गुजरातीमां तालव्याभासी (affricates) [च्, छ्, ज्, झ्, ts, tsh, dz, dzh] वर्णोना स्वरूपमां आवी रहेला मूळना आभा. तालव्य वर्णो स्पर्श व्यंजनो [च् k'] तरीके चालु रह्या होवा जोइये. नहि तो, उष्माक्षरो रही जवा पाम्या छतां, द्विश्रुतिमध्यगत च् वगेरे [एटले के ts वगेरे] नष्ट थई गया तेनुं कारण मेळववुं मुश्केल छे. ग्रीक प्रजा भारतवर्ष साथे[५७] संपर्कमां आवी ते समयमां ते अर्धतालव्य थयां हता. सिंहलीमां –च्– ए स् तरीके अने –ज्– ए द् तरीके जळवाई रहेलो छे.

ख् जेवी रीते क् ने लगतो छे तेवो आभा. छ् च् ने लगतो नथी; पण ते व्यंजनसमूहना पूर्व-परसादृश्यने करनारा वलणना पहेला परिणामनुं प्रतिनिधित्व धरावे छे अने इयु. sk' ने स्थाने आवे छे. आने लीधे स्वरोनी वच्चे ए च्छ् ना रूपे बेवडो होय छे; दा. त. छिद्– : लॅटिन. स्किन्डो; गच्छति : बास्को. बीजुं ए के संस्कृतीकरण पामेला प्राकृत शब्दोमां छ् केटलीक वार आभा. ना क्ष् नुं प्रतिनिधित्व आपे छे; दा. त. छुर– : क्षुर–.[५८]

---

५५ आ शब्द शीखवुं, शिखाववुं व्यापक छे, जेमां महाप्राणता ज छे. समजावुं, पालटो मां सैद्धांतिक रीते झ, ठ थवा जोइये, ते नथी थता ते अहीं प्रो. टर्नरे बताव्युं छे. –अनुवादक

५६ भारतीय–भाषा–समीक्षा–ग्रं. ९, भा. २, पृ. ३३०

५७ वाकरनागेल, १, § ११९

५८ „ § १३१ ने पछीनां पानां

सं. ष् ए एम आभा. ध्वनि करतां मध्य. ध्वनि छे. केटलाक शब्दोमां ए ष् ने कलको छे अने, जेणे मूळना इयु. घोष कंठ्य महाप्राण + अस्पर्श (continuants) ने घोष-व्यंजन तरीके सांचवी राख्यो छे तेवी प्रांतीय बोलीमां प्रगति साची होय तेवो देखाय छे; प्रा. त. क्षरति साथोसाथ गु. झरवुं.[५९]

चरोतरमां गुजरातीमांना तालव्यना त्स्, द्ज़् अने उत्तरमां वधु आगळ चालतां स् ज़् थया छे.[६०]

मूर्धन्य अने दंत्य व्यंजनो

§४३. इयु. नी दंत्यवर्गीय व्यंजनावली भारतवर्षमां दंत्य अने मूर्धन्य एम बे प्रकारमां आवी रही छे.

आभा. मूर्धन्योनुं मूळ दंत्य व्यंजनोमां होवाने कारणे ते मूर्धन्यो श् अने झ् (ṣ – ẓ)[६१] साथेना संपर्कने कारणे थया हता. परंतु प्राचीनतम संस्कृत अवशेषोमां, निकटमां आवता र् अने ऋ नी असर नीचे दंत्योमांथी व्युत्पन्न थयेला मूर्धन्योने सांचवता शब्दो छे.[६२] आम छतां, ते ज शब्दो, के ते ज परिस्थितिमां दंत्यो सांचवता बीजा शब्दो आ ज उत्क्रांति (evolution) नुं सदा अनुसरण करता नहि होवाथी, प्रांतीय बोलीने लगता भेदो मालूम पडी आवे छे. एक समूहमां र् अथवा तो ऋ नी हाजरीए दंत्यनो मूर्धन्य बने छे; बीजामां ए एमनो एम रहे छे. परिस्थिति आनी माफक तेवी तद्दन साची तो नहोती ज, अने ऋ + दंत्य, र् + दंत्य, दंत्य + र्, र् + स्वर + दंत्यना जेवा भिन्न भिन्न समूहो माटे जुदा शब्दो हशे.

प्रांतीय बोलीने लगता भेदो गमे ते होय, संस्कृतमां दंत्यमांथी मूर्धन्य थवानुं बतावता शब्दो आ मूर्धन्यीभवनवाळी प्रक्रिया (development) सांचवती एक के अनेक प्रांतीय बोलीओमां उछीना मळेला संस्कृतीकरण पामेला शब्दो निःसंशय छे. ए नोंधवा जेवुं छे के आमांना मोटा भागना शब्दो अर्वा. भा. भाषाओनी सामान्य वाचिक सामग्रीनो भाग बनी चूक्या छे.

गुजराती एवा प्रकारना भाषायूथमांनी छे के जेमां र् नी हाजरीए दंत्य व्यंजन दंत्य व्यंजन तरीके ज रहेवा पाम्यो छे; अने आवी स्थितिमां मूर्धन्य थयेलो सांचवता शब्दोने वहेलांना के मोडेना उछीना गणवा जोइये.

अ. दंत्य एम ने एम रहेवा पामे छे :

ऋत्: मुओं (मृत –), अमी (अमृत –), कीधुं (कृत –), घी (घृत –).

ऋथ्: पोहळुं (पृथुल –).

ऋद्: मौ (मृदु –), हैयुं (हृदय –).

ऋध्: गीध (गृध्र –).

---

५९ वाकरनागेल, § १४१

६० भारतीय भाषा-समीक्षा, ग्रं. ९, भा. २, पृ. ३३०

६१ वाकरनागेल, १, § १४५ अ

६२ ,, §§ १४६ – ७

कृन्त्: कांतवुं (कृन्तति), गुँथवुं (ग्रथ्नाति).

र्त्: कातुं कातळी कातरॉ (क्रि. कर्त्–), कातर (कर्तरी), धुतारॉ (धूर्त–), वात (वार्त्ता).

र्थ्: चोथुं (चतुर्थ–), साथी (सार्थिन्–).

र्द्: पोंदवुं (प्रमर्दति), पादवुं (पर्दते), आदुं (अर्द्र–), दादर (दर्दुर–).

र्ध्: आध अद–(अर्ध–), वधवुं, वधारॉ, वधाई, वधाववुं (वर्ध–).

र् पूर्व श्रुतिमां : पेहलुं (प्रथम–), भाई (भ्रातृ–), गातडी (ग्रन्थ–).

त्र्: रात (रात्रि–), रतांधळुं (*रात्र्यन्ध–), खेट (क्षेत्र–), पूत (पुत्र–), सुतार (सूत्रधार–), तोडवुं (त्रोटयति).

द्र्: नींद (निद्रा), दाम (द्रम्म–), ऊडुं (वादळी–उद्र–).

ध्र्: गीध (गृध्र–), वाधर (वध्र–).

आ. दंत्यना मूर्धन्य थाय छे:

ऋत् वगेरे: सांकड (सङ्कट–: कृत–), नड (नट नट–: नृत्–), भड (भट–: भृत्–), सडवुं (शटति: शृणाति), कडवुं (कटुक: **लिथुआनियन.** कर्तुस्), कड (कटि: **ग्रीक.** कोले), जड (जड–: **लॅटिन.** गेलु), घडॉ (घट–: **जर्मन.** गॅर्ल्त), मडदुं (मृत–), निवडवुं (निर्वृत–), कडुं (**अप्रामाणिक** कूट–: **ग्रीक.** कुतॉस्), पुडॉ पडल (पुट–पटल–: **अं.** फॉल्ड), फुटवुं (स्फुट्यति: **जर्मन.** स्पाल्तॅन्).

ऋथ्: कुहाडॉ < ? *कुढार– (कुठार–: **लॅटिन.** चुल्तॅर).

ऋद्: गुड (गुड–: **जर्मन.** क्वॉल्त़्).

ऋध्: जड (जडु–: **लॅटिन.** गुर्दुस्).

ऋत्त्: आंटॉ (अट्टति: आर्त्त–), माटी (मृत्ति–), कुटवुं (कुट्टति: कृत्–), –वट (वृत्ति– **प्रत्यय**), **दा. त.** अथोटी (हस्तवृत्ति–), देवट (=**औदार्य**).

ऋन्द् के न्दं: मांडवुं (मण्ड–: मृदु–), खांडवुं (खण्ड–: **लिथु.** स्केल्देति), गांड (गण्ड–: **लॅटिन.** ग्लॅन्स्).

र्त्: भाट (भट्ट–: भर्तृ–), आटो (अट्ट–: **ग्रीक.** अेल्थो), वाट (वर्त्मन्–), वाट (वर्ति–).

र्द्: छांडवुं (छर्दयति).

र्ध्: वाढवुं (वर्धयति).

र् पूर्वनी श्रुतिमां: पड– (प्रति) **छे तेवा** पडछायॉ, पडथार, पडपूछ, पडवॉ **वगेरे;** पढवुं (पठति: प्रथति), गांठ (ग्रन्थ–), पिंडलॉ (पिण्ड–: **अं.** फ्लिन्ट्), तुटवुं (त्रुट्यति).

द्र्: डांडॉ (दण्ड–: **ग्रीक.** देन्द्रोन्), आंड (अण्ड–: **कदाच जूनो स्लाव.** जेद्रॉ **वृषण**).

वारंवार आवता नामिक प्रत्ययो –अड, –डॉ, डी, डुं ए कृत–, वृत– धृत **वगेरे** (**सरखावो सं.** विकट–, सङ्कट–), **जेवा सामान्य शब्दोमांना अथवा तो** शकृत्–,

अवट (< *अवृत– : अवर) ना प्रत्ययोमांना –ऋत्– > –अड नो कदाच विकार होय. सरखावो सं. कर्कटिका, मर्कट.

उपरनी बंने वर्गो (तवर्ग अने टवर्ग)नी सरखामणीथी एवुं मालूम पडी आवे छे के ज्यारे मूर्धन्य धरावता बधा शब्दो वधी अर्वाचीन भाषाओमां मळे छे (सिवाय के मराठीमांना मृत्ति– शब्दमांथी आवेला रूपमां दंत्य ज सचवायो छे), अने मोटे भागे साहित्यकीय संस्कृतमां मूर्धन्य प्रक्रियाथी आवे छे, एटले के ए शब्दो, तेओना प्राचीन सामान्य उछीना लेवानी स्थितिना बहोळा विस्तारने आभारी छे, त्यारे दंत्य धरावता शब्दो बधा कांई तेवा प्रकारना मळी नथी आवता, खास करीने वर्ध्– अने कर्त्–मांथी व्युत्पन्न थयेला शब्दो.

§४४. संस्कृतमांना बीजा प्रकारना शब्दोमां पकडी न शकाय तेवा कारण विना ज बधु वहेलांना दंत्य व्यंजनो मूर्धन्यना स्वरूपमां मालूम पडी आवे छे; दा. त. अतति, उदुम्बर– (गु. ऊंबर)[६३] साथोसाथ अटति, उडुम्बर–. आ यादी समय जतां वधती जाय छे अने आ मूर्धन्योनी संख्या मभा. अने अर्वा. भा. मां खूब वधी जाय छे. शब्दोनी यादी अने निराकरणनो प्रयत्न डो. ब्लोके बतावेलां छे.[६४] गुजरातीमां आवा शब्दो आ छे : उडवुं (उड्डयति), डसवुं (दशति), डाभ (दर्भ–), डांडो (दण्ड–), पडवुं (पतति), टोळुं (तोली), टुटवुं (त्रुट्यति).

केटलाक दाखलाओमां पछीना मूर्धन्यने कारणे पूर्व दंत्य व्यंजननुं परवर्णसादृश्य थयेलुं देखाय छे (टोळुं, अने तोडवुं साथोसाथ टुटवुं); पण आवुं परवर्णसादृश्य गुजरातीमां नियमित नथी; दा. त. तर्ळ, तोळ, दाढी, दीठुं, धीट, दळ वगेरे.

दंत्यना मूर्धन्य साथेना आ पारस्परिक विनिमयने लगती सर ज्योर्ज ए. ग्रियर्सननी त्रण सूचना नोंध करवा जेवी छे :

"उत्तर तरफनी गुजराती लोकभाषामां मूर्धन्य व्यंजनोने दंत्य करवानुं अने दंत्य व्यंजनोने मूर्धन्य करवानुं मजबूत वलण छे......खरुं जोतां आपणे कही शकिये के भाषाना आ स्वरूपमां दंत्य अने मूर्धन्य व्यंजनो परस्पर बदली शकाय तेवा छे."[६५]

"तेओ (अशिक्षित मुसलमानो)ने उच्चारणनी पण घणी विशिष्टताओ छे. एमांनी मुख्य, मूर्धन्य अने दंत्य व्यंजनो वच्चे भेद पाडवानी अशक्ति ए छे."

"एने बहु मळतुं आवे तेवुं ए छे के पारसीओ जे गुजराती बोले छे ते केटलीये वार मूर्धन्य व्यंजनोने दंत्य करी नाखतो फेरफार व्यक्त करे छे."[६६] एवो ज गुजराती सारी रीते मळती आवती नेपाळी भाषामां, अने वळी सर ज्योर्ज ए. ग्रियर्सनना कह्या प्रमाणे बदलामां नेपाळीने केटलोक संबंध छे ते वायव्य सरहदना भाषायूथ-(पिशाच[६७])मां दंत्यो अने मूर्धन्यो वच्चे भारे गोटाळो छे.

---

६३ ब्लोक, §११८

६४ एजन, §११९

६५ भा. भा. समीक्षा, ग्रं. ९, भा. २, पृ. ३२९

६६ एजन, पृ. ३३१

६७ एजन, पृ. ३३०

§४५. केटलाक शब्दोमां सं. ड् ने स्थाने ळ् आवेलो छे. आ प्रांतीयतादर्शक प्रक्रिया छेक ऋग्वेद छेटली जूनी छे, के जेमां ड् नो नियमित रीते ळ् थयेलो छे. गुजरातीमां आवा शब्दो उछीना शब्दो छे; अने घणा खरा दाखलाओमां तेओ सामान्य भारतीय वाचिक सामग्रीना अंगरूप छे; दा. त. सोळ (षोडश–), गोळ (गुड–), नळ (नड–, नल–), खेलवुं (प्रा. खेल्लइ : ? क्रीड्–). आ विकार पालि अने सिंहलीमां नियमित छे.

जेमां –द्– नो र् थयो होय; दा. त. बार (द्वादश–), तेवा संख्यावाचक शब्दो एक वायव्य सरहदी बोलीमांथी उछीना आवेला शब्दो मोटे भागे छे, जे बोलीमां आ प्रक्रिया सामान्य छे; संख्यावाचक शब्दोमां –स्– नो ह् थाय छे ते विकार पण ते ज मूल स्थाननो निर्देश करे छे.

§४६. द्विश्रुतिमध्यगत ड्–, के जेनो केटलीये वार ड़् थाय छे तेने बाद करिये तो मूर्धन्य अने दंत्य व्यंजनोनुं उच्चारण बदल्युं नथी. आम शिष्टोनी बोलीमां हाड लिमडी, पण गाड़ी (< गाडी) मळे छे.[६८]

उत्तर गुजरातमां ज्यां दंत्यो अने मूर्धन्यो वच्चेनो गोटाळो खूब मोटो छे, त्यां द्विश्रुतिमध्यगत –ड्– अने –ढ्– नो र् थई जाय छे.[६९]

ओष्ठ्य व्यंजनो

§४७. ओष्ठ्य व्यंजनोनुं उच्चारण बदल्युं नथी; अपवादरूपे फ् अघोष अर्ध ओष्ठ्य अस्पर्श बन्यो छे.

अनुनासिक व्यंजनो

§४८. (१) ङ् ज्यारे सानुनासिक स्वरनी पछी आव्यो होय त्यारे (अंते आवेला के बीजा व्यंजननी पूर्वे आवेला) ग् नो लोप थये स्वतंत्र अस्तित्वनो लाभ पाम्यो छे; दा. त. आंङ < आंग (अङ्ग–), आंङणुं < आंगणु (अङ्गन–). आ अंत्य –म्ब् ना –म् थवाना फेरफार साथे समान दाखला छे; दा. त. आम < आंब (प्रा. अम्ब–, सं. आम्र–).

(२) आभा. द्विश्रुतिमध्यगत –न्– मांथी मभा. नो ण् थयो (जो के घणी खरी प्राकृत भाषाओमां तेवो बताववामां आव्यो छे छतां ए शंकास्पद छे के आदि न्– नो ण् थयो छे के नहि).[७०] आ ण् पश्चिम अने वायव्य सरहदना भाषायूथमां रहेवा पाम्यो छे. (हिमालयमां कुमाओन जेवा छेक दूर पश्चिमना स्थान सुधी ते पथरायेलो छे), पण

---

६८ प्रो. टर्नरने मूर्धन्यतर ड़–ढ़ विशे अल्प माहिती जणाय छे. अहीं आपेलां त्रणे उदाहरणोमां शिष्ट बोलीमां शुद्ध मूर्धन्य ड नहि; पण मूर्धन्यतर वैदिक ड़ छे. हाड़, लीमड़ी, गाड़ी. एमनो ड़ ते ड़ ज छे. गुजरातीमां अमदावादथी नीचेना भागमां द्विश्रुतिमध्यगत ड–ढ एटलुं ज नहि पोचा अनुनासिक पछीनो ड पण मूर्धन्यतर छे. मात्र काठियावाडमां ढ सर्वत्र शुद्धमूर्धन्य छे, अने बेवडा ड्ड उपरथी ऊतरी आवेला ड शुद्ध मूर्धन्य छे. ए रीते काठियावाडमां कढी, लोढुं, पीढ, रीढुं, कोढ वगेरेमां शुद्ध मूर्धन्य ढ, अने हाड, गाडी, लाडी, पाडी, वगेरेमां शुद्धमूर्धन्य ड छे. –अनु०

६९ भा. भा. समीक्षा, पृ. ३३०

नोंध :–आमां पण कांईक समझफेर छे. उत्तर गुजरातना मात्र वोराओ ज मूर्धन्यतर ड–ढ ना र करी नाखे छे. मात्र ळ नो र सर्वत्र त्यां छे, चरोतरमां पण छे, सोरठमां पण छे. –अनुवादक

७० सरखावो ब्लोक, § १३२

मध्य अने पूर्वनां भाषायूथमां फरी तेनो न् बनी गयो छे. बीजी बाजू मभा. ना –ण्– नो सामान्य रीते –न् थयो छे. आभा. ना ण् नी गमे ते स्थिति (value) होय, पण गुजराती ण् तो सानुनासिक मूर्धन्य अस्पर्श व्यंजन छे (जेवी मभा. ना –ण् नी; त्यारथी न् नो ण् थवानी प्रक्रिया –म् ना वँ् थवानी क्रियानी साथे समान अने बुद्धिगम्य थई).

(३) सिंहली सिवायनी बीजी अर्वा. भा. भाषाओथी विशिष्टतामां गुजरातीए केटलीक ए परिस्थितिमां द्विश्रुतिमध्यगत –म्– ने सांचवी राख्यो छे.[७१]

य्

§४९. आभा. नो य् गुजरातीमां रहेवा पाम्यो नथी. शब्दारंभे तेनो ज्– थयो; व्यंजनयूथोमां पूर्वे आवेला व्यंजनने असर कर्या विना के करीने ते पूर्ववर्णसादृश्य पाम्यो हतो; स्वरोनी मध्यमां, पत्तो न लागे तेवी रीते ते लुप्त थयो; मात्र अपवादे अय जेवा समूहमां ते बच्यो हतो, जेमां मभा. नो अे आव्यो.

आम छतां ए ध्वनि गुजरातीमां पाछो देखायो छे. एनुं मूळ द्विविध छे :–

(१) मभा. मूळनो होय के अर्वा. भा. मूळनो होय, तेवा इ के ई नो केटलीक परिस्थितिमां य् थयो (जुओ उपर §§ २७ (४), २९).

(२) इ के ई नी पूर्वे के पछी आवती संहिता (hiatus) ने दूर करवाने माटे सरळ आडचना रूपमां ते विकास पाम्यो. आ य्–रूपी आडच, एवी ज व्–रूपी आडच, जो के लेखनमां चालु रीते व्यक्त थती नहि, छतां कोई पण विकासे (दा. त. द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजननो लोप के अंत्य ई के ऊ ने लागता उच्चारणानुकूल प्रत्ययनुं उमेरण) इ के ई या उ के ऊ ने संहित स्थितिमां जेवा मूक्या, के तरत ज, शक्य रीते तेनो जन्म थयो. ज्यां इ के ई उ के ऊ नो संकोच न थयो त्यां तेणे पोतानी स्थिति जमावी राखी; दा. त. पियास (पिपासा), शियाळ (शृगाल–), शियाळो (शीतकाल–), वाणियों (वाणिज–), आगियों (अग्नि–), कोयळ < *कोयिळ (कोकिल–). उतावळी वाणीमां, आम छतां, पेली आडचनो विकास साध्या विना इ के ई पोते ज (१) मां जणाव्या प्रमाणे य् नुं रूप धारण करे छे. केटलीक वार आने लेखनमां पण व्यक्त करवामां आवे छे; दा. त. प्यास, स्याळ.

व्

§५०. मराठी, सिंधी अने पंजाबी ए बीजी पश्चिमनी भाषाओ अने सिंहली अने काश्मीरीनी[७२] जेम गुजरातीए आदि व् तेम ज मभा. ना –व्व्–< वँ्, व्य् ने सांचवी राख्या छे. व् धरावता शब्दो मध्य अथवा तो पूर्वनी भाषाओमांथी उछीना शब्दो छे.

गुजराती व् नो उच्चार करवामां होठ चपटा बने छे, अने नहि के गोळ; तेथी ए युरोपिय डबल्यू (w) जेवुं उच्चारण होय तेना करतां ए सादो (v) छे.

---

७१ जुओ टर्नर, JRAS, 1915, पृ. २१

७२ ब्लोक, § १५०

दंत्य + व्

§५१. आ विषयमां गुजराती गिरनार उपरना अशोकना उत्कीर्ण लेखोनी भाषा साथे साम्य धरावे छे, के जेमां त्व् > त्प् स्थिति छे; ज्यां बीजे दंत्य प्रक्रिया हती;[७३] दा. त. बार (द्वार–), बे (द्वे), बीज (द्वितीय–), पण दुणुं (प्रा. दुगुण–, आभा. ? दुगुण–), ऊभुं (ऊर्ध्व–), प्रत्यय –पण (–त्वन–).

मृदु (= र् ल्)

§५२. इयु. र् अने ल् नी प्रक्रियामां भेद जेटली तो चोकस प्रांतीय बोलीओ हती. एकमां र् अने ल् नो स्पष्ट भेद हतो; बीजीमां ए बंनेनो र् मां गोटाळो हतो, अने त्रीजीमां ते बंनेनो ल् मां गोटाळो हतो.[७४] साहित्यकीय संस्कृतनी जेम गुजरातीए र् अने ल् बेउ सांचवी राख्या छे; परंतु उपरनी त्रण बोलीओ धरावती भाषाओमां थयेली लेवडदेवडने कारणे गुजरातीना र् अने ल् सदा कांई मूळ इयु. ना र् ल् अथवा तो साहित्यकीय संस्कृतना र् ल् ने पण मळता होता नथी.

गुजरातीनो ए भेद संस्कृतमांना भेद करतां नीचेना शब्दोमां व्यक्त थाय छे :–

(१) ल् = सं. र् : पलाण (पर्याण–), सांभरवुं साथोसाथ सांभळवुं (संस्मरति), निकळवुं, उकळवुं (निष्करोति, उत्करोति; वळी बेउ सं. मां –कल्– साथे पण), आलां-लीलुं (आर्द्र–), रोम (रोमन्–, लोमन्– बेउ ऋग्वेदमां) उपरांत लोम, चोळवुं (चूर्ण–), घोळवुं (घूर्ण–).

नीचेना शब्दो बहु मोडेथी आवेला उछीना शब्दो छे; जेवा के :–

अ. स्वरभारनो फेरफार : पालटो, मराठी. पालट (पर्यस्त–), पालख, मराठी. पालखी (पर्यङ्क–), हळद, मराठी. हळद (हरिद्रा).

आ. ङ्क् > ङ्ग् : पलङ्ग, पंजाबी. पलङ्ग (पर्यङ्क–).

इ. नियमप्राप्त दीर्घतानो अभाव : भलुं < भल्ल–(भद्र–).

(२) र् = सं. ल् : पीपर (पिप्पली पीपर), गळवुं (गलति) उपरांत गरवुं.

§५३. आभा. ना र् ए पोतानुं उच्चारण सांचवी राख्युं छे; पण स्वरो वच्चे आवेला ल् नो ळ् थयो छे, जे फेरफार –न्– ना –ण्– अने –म्– ना वँ् नो समान छे. ळ नुं उच्चारण करवामां जीभनी स्थिति ण् नुं उच्चारण करवामां जेवी होय छे तेवी होय छे; एटले के दांतनी उपली किनारीनी बरोबर पाछळ सतत ताळवाने अधडातां पाछली बाजूए जीभनुं टेरवुं गूंचळुं वाळी जाय छे; परंतु त्यां स्पर्श थतां ज कंठद्वारना तळियामां पटीनी जेम चोंटे छे. ताळवी ऊंची थाय छे. आ ळ् जूपरा. नी हाथप्रतोमां[७५] नोंधायेलो नथी मळतो, परंतु तेनो ल् थी भेद थई चूक्यो ज होवो जोइये; केम के बेवडा ल्ल् ना स्थाने एकवडो –ल्– आवी गयो ज हतो के जे गुजरातीमां अद्यापि छे.

---

७३ वॉकरनागेल, § १९१ अने पछीनां पानां

७४ „ § १२९

७५ टेस्सिटोरी, इन्डियन एन्टिक्वेरी, ४३, पृ. ५५

३.१.६.

उष्माक्षरो

§५४. वायव्य सरहद अने पूर्वनी बोलीओना यूथमां व्यक्त थाय छे ते रीते गुजरातीमां आभा. ना श्, ष्, स् नो भेद नथी. बधानो स् थाय छे. छतां आवो इ-अे नी पूर्वे के पछी श् थई जाय छे ते रीते गुजरातीमां भिन्नता पामे छे; दा. त. शीम (सीमा), करीश (करिष्यामि, प्रा. करिस्सं).

उत्तर गुजरातमां बधी स्थितिमां स् अने श् नो ह् बने छे.[७६]

संख्यावाचक शब्दोमां स् ने स्थाने ह् देखाय छे; दा. त. बार < बारह (द्वादश –). आ शक्य छे ते रीते वायव्य सरहदनी बोलीओनां रूप छे.

§५५. श्म्, ष्म्, स्म्.

उष्माक्षर + म् ना यूथना विकासमां मुख्य त्रण प्रकार छे :–

(१) म् परवर्णसादृश्यने पामे छे, ते कदाच व्यत्यय पछी; सरखावो पालि. रंसि (रश्मि –). आ वायव्य सरहदनी बोलीओना यूथमांनो विकास होवानुं मालूम पडे छे. गुजरातीमां छेक वहेलांना सामान्य उछीना शब्दो मळे छे, जेवा के रास (रश्मि –), विसरवुं (विस्मरति).

(२) उष्माक्षर + न् नी बाबतमां बने छे तेम उष्माक्षरनो ह् उत्पन्न थतां महाप्राण बने छे, जे ह् ना व्यत्ययथी म्ह् बने छे. शब्दना आरंभमां (ज्यारे स् के ह् नी पूर्वे आव्यो त्यारे तो) ह् नो लोप थतो हतो; दा. त. प्रा. मसाण –, गु. मसाण (श्मशान –), प्रा. मंसु (श्मश्रु), प्रा. णेह –, गु. नेह (स्नेह –). शब्दांतर्गत स्थितिमां ह् लांबा समय सुधी सचवायो हतो; दा. त. घिर्मल < गिम्ह – (ग्रीष्म –), प्रा. अम्हे (अस्मे), तुम्हे (युष्मे), जूपरा. अम्हे; परंतु तेनो अर्वा. गुजराती – अमे, तमे मां लोप थयो छे. नामिक प्रत्यय तरीके अप. –अ-हिँ, जूपरा. –अइँ अथवा अइ, गु. अँ (अन्यथा इयु. ना –धि थी समाहित) ना रूपमां आवेलो शक्य रीते – म्हिन् (– स्मिन्) हतो. शब्दना देहमां आवता, एनाथीये वधी जाय तेवा तेना जेवा उच्चारविषयक ह्रासने माटे –अकेम, –अकानाम्, –अकानि > प्रा. –अअण, –अआणं, –अआइं > अप. –अअँ, –अआं, –अआइं > गु. –अँ, –आं, –आं ए प्रत्ययोनो इतिहास सरखावो. प्रा. –अम्मि (–अस्मिन्) ए रूप, तो कदाच उछीना प्रकारनुं हशे, अने कदाच यहां, वहां ना गुजराती आं मां सचवाई रह्युं छे.

ज्यां ह् रहेवा पाम्यो त्यां (आभा. ह् मांथी म्ह् सहित जेम) यूथ –म्म्– बन्युं; दा. त. प्रा. सेम्म –, मराठी. शेंबा (श्लेष्मन् –). ०स्म् ए गुजराती सांभरवुं (संस्मरति) मां रही गयो छे.

(३) प्रा. भिप्फ – (भीष्म –), सेप्फ – (श्लेष्मन् –) मां छे तेवुं यूथ प्फ् बन्युं. संभव छे त्यांसुधी आ अघोष म्ह् मांथी थयेला म्फ् ने बतावे छे, त्यारे ते घोष म्ह्‌मांथी थयेला म्म् नी समान बने. गुजरातीमां ऊंफ (उष्मन् –) छे.

---

७६ भा. भा. समीक्षा, ग्रं. १, भा. २, पृ. ३३०

बेवडा व्यंजनोमांथी एकवडा थवानी प्रक्रिया

§५६. मभा. ना पूर्वपरवर्णसादृश्यना परिणामरूपे आवेला बेवडा व्यंजनोमांथी एकनो लोप थये एकवडो थवानी प्रक्रिया (simplification) देशी नाममालामां व्यक्त थती भाषाभूमिका अने जूपरा. नी सौथी प्रथम कृतिनी वच्चेनो समय मळ्यो त्यांसुधीमां सामान्य रीते अमलमां आवी नहोती.

परंतु मभा. ना जूनामां जूना अवशेषोमां एवा केटलाक शब्दो मळे छे के जेमां नियमप्राप्त पूर्वस्वरना दीर्घ थवानी साथे बेवडा व्यंजनमांथी एकनो लोप थये एकवडो बनी जवानी क्रिया जोवामां आवे छे. आने परिणामे एकवडा थता व्यंजनो आभा. ना द्विश्रुतिमध्यगत सादा व्यंजनोमां अनन्य थया छे. आवा शब्दो, जे कोई प्रांतीय बोलीमां एकवडा थवानी प्रक्रिया नियमित रीते चालु हती तेवीमां कदाच उछीना मळ्या हशे (प्राकृत वैयाकरणोना जणाव्या प्रमाणे अर्धमागधीमां आवा शब्दो वारंवार प्रयोजायेला छे),[७७] अने तेओ अर्वाचीन भाषाओने मळेला सामान्य वारसामां मालूम पडे छे. गुजरातीमां तेना दाखला :

कोढ (कौष्ठ–, पालि. कोठ–), दाढी (दंष्ट्रिका, शिलालेखोमां दाढिका), काढवुं (कृष्ट–), पिढियुं (पीठ– < *पिष्ठ–), वेढ (वेष्टते, प्रा. वेढइ).

बेवडा स्पर्श व्यंजनने स्थाने अनुनासिक व्यंजन + स्पर्श व्यंजननुं कारणवशात् आववुं थयुं छे, ते माटे जुओ उपर § १६.

शब्दारंभे आवता व्यंजनो

स्पर्श व्यंजनो

§५७. शब्दने आरंभे बधा ज स्पर्श व्यंजनो रहेवा पामे छे.

क् : कान (कर्ण–), काख (कक्ष–), काप (काननुं घरेणुं कल्प–), काम (कर्मन्–), काल (कल्यम्), कूख (कुक्षि–), काजळ (कज्जल–), कीडी (कीट–), कोण (क–).

ख् : खणवुं (खनति), खावुं (खादति), खीज (खिद्यते), खुर (क्षुर–), खेर (खदिर–), खांड (खण्ड–).

ग् : गाभणी (गर्भिणी), गाजवुं (गर्जति), गाजर (गर्जर–), गांध (गन्ध), गीध (गृध्र–), गू (गूथ–), गूगळ (गुल्गुलु–), गोठ (गोष्ठ–), गोख (गवाक्ष–), गावुं (गायति), गाल (गल्ल–), गळवुं (गलति), गयुं (गत–), गळुं (गल–).

घ् : घणुं (घन–), घाम (घर्म–), घास (घास–), घी (घृत–), घोळवुं (घूर्ण–), घाट (घटते), घुमवुं (घुमघुमायते), घाघरी (घर्घरी), घडो (घट–), घा (घात–), घोडो (घोटक–).

च् : चांपुं (चम्पक–), चाववुं (चर्वति), चौक (चतुष्क–), चितारो (चित्रकार–), चूनो (चूर्ण–), चांच (चञ्चु–), चिभडी (चिर्भटिका–), चिणवुं (चिनोति),

७७ पिशल, § ८७

चील (चिल्ल–), चूलो (चुल्लि–), चामडुं (चर्मन्–), चारवुं (चारयति), चिर (चिर–), चुसवुं (चूषति), चोर (चौर–).

छ् : छावुं (छादयति), छापा (छगण–), छिणवुं (छिनत्ति), छोडवुं (छोटयति), छींट (छित्ति–), छाल (छल्लि–), छाजवुं < छद्य– (योग्य होवुं–छदयति), छळ (छल–), छिकारडुं (हरण–छिक्कार–), छछूंदर (छुच्छुन्दर–), छुवुं (धातु छुपति, अंग्रेजी शोप्).

ज् : जणवुं (जनयति), जळ (जल–), जमवुं (जमति), जाचवुं[७८] (जर्चति), जांघ (जङ्घा), जीणुं (जीर्ण–), जूनुं (जूर्ण–), जाणवुं (जानाति), जायों (जात–), जाळ (जाल–), जीभ (जिह्वा).

झ् : झालर (झल्लरी), झाझर (झर्झर–), झरवुं (झरत्–); जुओ उपर § ४२.

त् : तळ (तल–), तातुं (तप्त–), तारो (तारक–), तारवुं (तारयति), ताक (तक्र–), ताकवुं (तर्कयति), तांबुं (ताम्र–), ताणवुं (तानयति), तीखुं (तीक्ष्ण–), तूरुं (तुवर–).

द् : दस (दश–), दमवुं (दमयति), दांत (दन्त–), दांडो (दण्ड–), दाण (दान–), दिशवुं (दृश्यते), दिपवुं (दीप्यते), दूध (दुग्ध–), दुबळुं (दुर्बल–).

ध् : धण (धन–), धरवुं (धरति), धान (धान्य–), धूळ (धूलि–), धुणवुं (धुनोति), धर (धोंसरी धुरा), धतूरो (धत्तूरक–), धमण (धमनि–).

प् : पही (पथिक–), पांच (पञ्च), पांत (पङ्क्ति–), पीळुं (पीतल–), पाकुं (पक्व–), पूठ (पृष्ठ–), पूत (पुत्र–), पोहळुं (पृथुल–), पडो (पटह–), पालव (पल्लव–).

फ् : फळ (फल–), फागण (फाल्गुन–), फूल (फुल्ल–).

ब् : बांध (बन्ध–बंध), बाझवुं (बध्यते), बोहळुं (बहुल–), बूध (बुद्ध–), बाळ (बाल–), बी (बीज–), बील (बिल्व–), बोळवुं (बोलयति), बोलवुं (बोल्लक–).

भ् : भांग (भांगेलुं भग्न–), भासवुं (भासयति), भीख (भिक्षा), भूठुं (भ्रष्ट–), भीगारो (भृङ्ग–), भसवुं (भषति), भँडार (भण्डागार–), भूमी (भूमि–).

अनुनासिक व्यंजनो

§ ५८. शब्दना आरंभमां आवेला न्– म्– एम ने एम रहे छे. मभा. ना न्– माटे जुओ § ४८.

न् : नवुं (नव–), नाठुं (नष्ट–), नास (नाश–), नाम (नामन्–), न (न), निसासो (निःश्वास–), नीम (निम्ब–), नामवुं (नामयति), नळ (नल–).

म् : माग (मार्ग–), मळ (मल–), मूळ (मूल–), माख (मक्षा), माथुं (मस्तक–), मीठुं (मृष्ट–), मरवुं (मद्–), मारवुं (मारयति), माजवुं (मार्जति), मातुं (मत्त–).

---

७८ सं. याच् उपरथी अर्वाचीन तद्भव छे ज; नवो जर्च् शा माटे मानवो ? –अनुवादक

य्, व्, र्, ल्

§५९. शब्दना आरंभमां आवता य् नो ज् थाय छे; व्, र्, ल् एम ने एम रहे छे.

य्: जाम (याम–), जूझवुं (युध्यते), जू (यूका), जुही (यूथिका), जव (यव–), जोग (योग्य–), जे (य–), जवुं (याति), जोध (योद्ध–).

र्: रात (रात्रि), राई (राजिका), राज (राज्य–), रोवुं (रोदति), रुठवुं (रुष्ट–), राचवुं (रच्यते), रास (राशि–), रांधवुं (रन्धयति), रांक (रङ्क–), रांड (रण्डा), रस (रस–), रुँधवुं (रुन्धति).

ल्: लाज (लज्जा), लाख (लक्ष–), लाधवुं (लब्ध–), लींपवुं (लिम्पति), लांबुं (लम्ब–), लाहवुं (लाभयति), लसण (लशुन–), लागवुं (लग्यति), लववुं (लपति), लांच (लञ्चा).

व्: वात (वार्त्ता), वीज (विद्युत्), वाळू (वालुका), वांझ (वन्ध्या), वहू (वधू–), वाक (वाक्य–), वाव (वापी), वान (वर्ण–), वायुं (वाय–).

ऊष्माक्षरो

§६०. श्, ष् नो मभा. स् थयो; स् एम ने एम रह्यो. ह्रस्व के दीर्घ इ अ पछी मभा. ना स् नो श् थाय छे.

श्: सोस (शोष–), साम (शम्ब–), सूध (शुद्धि–), साद (शब्द–), सूनुं (शून्य–) सूखुं (शुष्क–), ससलुं (शश–), शींग (शृङ्ग–), शिर (शिरस्–), शीश (शीर्ष–), शीख (शिक्षा–), शीळ (शील–), शीळुं (शीतल–), शेल (शैल्य–).

ष्: सांढ (षण्ड–), साठ (षष्टि–).

स्: साख (साक्ष्य–), सही (सखी), सांथ (पगार, संस्था), साज (सज्ज–), साव (सर्व–), साथी (सार्थिक–), शिववुं (सीव्यते), शीधुं (सिद्ध–), शीम (सीमा).

ह् एम ने एम रहे छे: हाथ (हस्त–), हसवुं (हसति), हीण (हीन–), हींग (हिङ्ग–), हिंगळो (हिङ्गुल–).

शब्दने अंते आवेला व्यंजनो

§६१. आभा. मां शब्दने अंते जे कोई पण व्यंजनो टकी शके तेवा हता ते अनुनासिक व्यंजनो, विसर्ग अने अल्पप्राण अघोष स्पर्श व्यंजनो.

शब्दने अंते स्पर्श व्यंजनो होय तेवा संस्कृत शब्दोनुं प्रतिबिम्बित करावता गुजराती शब्दोनी संख्या तद्दन स्वल्प छे. एवा संस्कृत शब्दो ते (१) केटलांक नामोनी प्रथमा विभक्तिनां एकवचन. गुजरातीमां आ रहेवा पामेल छे त्यां घणां खरां स्थानोमां अकारांत अंग थई गयेल छे; दा. त. वाणियो < *वाणिजक–(वणिज्–). (२) साधित (thematic) अंगवाळां ह्यस्तन अने अद्यतन कर्तरिनां त्रीजा पुरुष एकवचननां रूपो, अने संख्याबंध मूलधातुरूप (athematic) अंगवाळां वर्तमान ह्यस्तन अने

अद्यतन कर्तरि बीजा पुरुष अने त्रीजा पुरुष एकवचनना रूपो. मूळधातुरूप (athematic) अंगोने स्थाने साधित (thematic) अंगो आवी गयां छे अने कृदंतीय रचनाने मार्ग करी आपी भूतकाळ बतावनारां रूपो अदृश्य थई गयां छे. (३) केटलांक सर्वनामोनुं नान्यतरजाति प्रथमा विभक्तिनुं एकवचन. आने बदले नवां रूपो स्थानापन्न थयां छे (सरखावो : तत् ने बदले प्रा. तं वगेरे). (४) केटलांक अव्ययो, दा. त. यावत् चिद्.

–त् : वीज (विद्युत्).

मभा. मां विसर्गनो लोप थयो, पण ते साथे पूर्वनो स्वर दीर्घ थई गयो. संधिरूप –ओ (मागधी –ए) ना स्वरूपमां –अः आवी रह्यो. जुओ उपर § २५.

बधा अंत्य अनुनासिक व्यंजनोनो लोप थयो, पण ते साथे पूर्वनो स्वर अनुनासिक बन्यो या न बन्यो.

द्विश्रुतिमध्यगत व्यंजनो

§ ६२. द्विश्रुतिमध्यगत क्, ग्, च्, ज्, त्, द् नो लोप थयो छे.

–क्– : चमार (चर्मकार–), चितारो (चित्रकार–), जू (यूका), नोळियो (नकुल–), शियाळो (शीतकाल–), वेरवुं (व्याकिरति), सूडो (शुक–), नरजाति प्रथमा विभक्ति एकवचन –ओ < –अकः.

–ग्– : कोठार (कोष्ठागार–), सोंघा (समगन्ध–), शियाळ (शृगाल–), छाण (छगण–), महीरुं < *मातृगर्हकम् (गृह–), जोईए < *योगीयते (योग्यते), दूणुं (प्रा. दुगुण–), रोयुं (मांदुं, रोगिन्–).

–च्– : सोई (सौचिक–).

–ज्– : विआवुं (विजायते), बी (बीज–), राई (राजिका), भाणुं (भाजन–), भोई (भोजिन्–), वाणियो (वाणिज–).

–त्– : पीळुं (पीतल–), मा (मातृ–), चोगणुं (चतुर्गुण–), दिवेल < *दीपतैल्य–(तैल–), आखुं (अक्षत–), जूवुं (द्यूत–), मुओ (मृत–), घी (घृत–), अमी (अमृत–), कीधुं (कृत–), भूवो (भूत–).

–द्– : रोवुं (रोदति), मौ (मृदु–), पोणुं (पादऊन–), छावण < *छादापन–(छादयति), खावुं (खादति), खेर (खदिर–), अवाई (आवाद–), पा (पाद–).

§ ६३. द्विश्रुतिमध्यगत ब् अने प् नो मभा. –व्– बने छे, जे आभा. ना –व्– मां परिणत थई गयो.

–प्– : वावुं (वापयति), तावुं (तापयति), दीवो (दीप–), लववुं (लपति), गोवाळ (गोपाल–), पठाववुं (प्रस्थापयति), वाव (वापी), पडवो (प्रतिपद्–), पडवायो (लूला पगनी घोडी, प्रतिपाद–).

§ ६४. –ख्–, –घ्–, –थ्–, –ध्–, –फ्–, –भ्– ए महाप्राण वर्णोनो मभा. ह् थयो, जे आभा. ना ह् मां परिणत थयो.

–ख्–: सही (सखी), म्हो < *मोख–(मुख–), साम्हुं (सम्मुख–), सोहर सुखद < सौखकर–(सुख–).

–घ्–: मेह मेउडो (मेघ–).

–थ्–: घेलुं (ग्रथिल–), पेहलुं (प्रथम–), पोहळुं (पृथुल–), पही (पथिक–), जूही (यूथिका), कैंहवुं (कथयति), कहाणी (कथानक–), गू (गूथ–).

–ध्–: बेहरुं (बधिर–), दहीं (दधि–), वहू (वधू–), घो (गोधा), साहु (शाहसोदागर साधु–), नगोड (न्यग्रोध–). ओसड (औषधि–) मांनो ड् ए प्रत्यय –त– ने लगतो छे.

–भ्–: घेरुं (गभीर–), अहीर (आभीर–), सोहाग (सौभाग्य–), लाहवुं (लाभयति), भूख (बुभुक्षा), वहालुं (वल्लभ–), सोहवुं (शोभते), दूलुं (दुर्लभ–), दुखावा (दुःख-भाव–), पोह < *प्रभक–(प्रभा–).

§६५. उपर बताव्युं छे ते प्रमाणे (ज्यां –द्– –ध् मूळना अरबी –ज़्द्– –ज़्ध्– ना प्रतिनिधि होय ते सिवायना द्विश्रुतिमध्यगत मूर्धन्य वर्णो आभा. ध्वनि करतां वधु, खरेखरा मभा. ध्वनि छे. तेओमुं गमे ते मूळ हो, मभा. ना –ट्–, –ड्– नो गुजरातीमां ड् अने –ठ्– –ढ्– नो ढ् थाय छे.

–ट्–: सांकड (संकट–), कूडुं (कूट–), नड (नट–), भड (भट–), सडवुं (शटति), कडवुं (कटुक–), पुडो (पुट–), कड (कटि–), घडो (घट–) फोडवुं (स्फोटयति), वड (वट–), पडो (पटह–), कोड (कोट–), कीडो (कीट–), खड (खट–).

–ड्–: चूडो (चूड–), जड (जड–), लाड (लडति), दाडम (दाडिम–), गाडवुं (गडयति), बिलाडी (बिडाली).

–ठ्–: पढवुं (पठति), कुहाडो < *कुढारो ? (कुठार–), कोढ (पालि. कोठ–).

–ढ्–: जड (लुखुं जढ–).

–ण्–, –न्–, –म्–

§६६. द्विश्रुतिमध्यगत –ण्–, –न्– ना इतिहासनो आधार शब्दमांनी तेओनी स्थिति उपर होय छे.

(१) शब्दना देहमां ए बेउ मभा. ना –ण्– रूपे देखाव छे, जे गुजरातीमां तद्वत् रहेवा पामे छे.

–ण्–: खण (क्षण–), चोगणुं (चतुर्गुण–), घाण (घ्राण–), सुणवुं (शृणोति), ओखणवुं (अवक्षणोति), कणस (कणिश–).

–न्–: माणस (मानुष–), ताणवुं (तानयति), धणी (धनिन्–), हीण (हीन–), घणुं (घन–), ऊणुं (ऊन–), विण (विना), पाणी (पानीय–), वखाण (व्याख्यान–), आंगणुं (अङ्गन–).

रूपाख्यान बनावनारा प्रत्ययोमां –ण्–, –न्– नो मभा. अनुस्वार बन्यो अथवा तो आगळ पाछळ आवनारा स्वरो अनुनासिक बन्या. आ प्रक्रिया –आणि साथोसाथ आवी रहेला –आइं, –आंइं, –आइ एवी प्राकृत जोडणीमां जोवामां आवे ज छे. –एण

(अप. एं), –अमे पू बीजां रूपोमां –म् शब्द के आनुं अनुस्वारनुं प्रतिनिधित्व धरावतो हतो; परंतु जोडणीए उच्चारणना फेरफारने पाछळ राखी दीधो.

नान्य. प्रथमा ब. व. – अकानि > गु. आं

तृतीया ए. व. – अकेन > अप. – अएं, जूपरा. – अइं, गु. – अें

षष्ठी ब. व. – अकानाम् > जूपरा. – आं, गु. – आं

नान्य. प्रथमा ब. व. – ईनि > गु. ईं दहीं < दधीनि मां.

§ ६७. द्विश्रुतिमध्यगत – म् – ना इतिहासनो पण आधार शब्दमांनी तेनी स्थिति उपर होय छे.[७९] ते (अ) स्वरित स्वर पछी तरत ज, (आ) स्वरित श्रुति पछीनी श्रुति पछी अने (इ) ज्यारे स्वरित श्रुतिना पूर्वनी श्रुति दीर्घ स्वररूप होय त्यारे स्वरित स्वरनी पूर्वे अविकृत रह्यो छे. तेनो (अ) स्वरित श्रुति पूर्वनी श्रुतिमां अने (आ) रूपाख्यान करनारा प्रत्ययोमां – वँ् – बन्यो छे.

(१) – म् – एम ने एम रहे छे.

(अ) जमवुं (जमति), खमवुं (क्षमते), वाम (व्याम –), विमळ (विमल –), उगामवुं (उद्गामयति), कमळुं (कमल –), शीम (सीमा), धमण (धमनि –), नमवुं (नमति), नामवुं (नामयति), विसामो (विश्राम –), भमरो (भ्रमर –), सामळुं (श्यामल –), गाम (ग्राम –), लोम (लोमन् –), भूमी (भूमि –).

भूमी उपरांत भूई, जोळ (यमल –), गोसाई (गोस्वामिन् –), गहूं (गोधूम –) आ उछीना शब्दो छे.

(आ) पांचमुं (पञ्चम –), सातमुं (सप्तम –), उगमण (उद्गमन –), ऊगम (उद्गम –), ऊजम (उद्यम –).

कादव (कर्दम –) ए उछीनो शब्द छे. दाडम मांनो म् कदाच म्ब् नुं प्रतिनिधित्व अर्पे छे, केमके जेमां म् नो नियमित रीते – वँ् – थाय छे तेवी भाषाओ – म् बतावे छे.

(इ) जमाई (जामातृ –), समाणुं (सामान –).

(२) – म् – नो वँ् थयो, जेमांथी पछी अनुनासिकता पूर्वना स्वरमां आवी गई; आ – व् – आभा. ना – व् – – प् – द्वारा मभा. ना – व् – मां परिणत थयो.

(अ) कुँवारो (कुमार –), पोंदवुं (प्रमर्दति), सोंपवुं (समर्पयति), सोंघुं (समर्घ –), सोंग (समाङ्ग –), सोंधा (समगन्ध –).

(आ) वर्तमान. करुं मां १लो पु. ए. व. – आमि > जूपरा. – अउं, गु. – उं.

भविष्य. करीशुं मां १लो पु. ब. व. – आमः > – अउं, गु. – उं.

– य् –, – व् –

§ ६८. द्विश्रुतिमध्यगत – य् – नो लोप थयो हतो.

विआवुं (विजायते), नीम (नियम –), वीमो (वियम –), गावुं (गायते), समो (समय –), सांसो (संशय –), वलुं (वलय –), दाई (दायिन् – उदार) उतराण (उत्तरायण –), मोर (मयूर –).

अय > अे माटे जुओ उपर § ३० (१).

७९ टर्नर : JRAS. जान्यु. १९१५, पृ. ११ अने पछीनां

§६९. –अव–, वु के वू, उव् के ऊव्, ओव ए यूथो सिवायनामां द्विश्रुतिमध्यगत –व्– अविकृत रह्यो छे.

(१) चकवा (चक्रवाक–), जीववुं (जीवति), थावर (स्थावर–), शेववुं (सेवते), केवळ (केवल–), दुभार्वा (दुर्भाव–), देव (देव–), नवुं (नव–), नाव (नावा), निभाववुं (निर्भू–), रखावट (वृत्ति–), अवाई (आवाद–), अवास (आवास–), चीवर (चीवर–).

ओ, उ के ऊ पछी व् नो लोप थाय छे: जनोई (यज्ञोपवीत–), सोनुं (सौवर्ण–), अँबोई (अम्बा–उपवीत–), तूरुं (तुवर–), उखाणुं (*उपख्यान–).

ऊ नी पूर्वे –व्– < –व्व्– < –व्य्– नो लोप थाय छे: गाऊ (गव्यूति–).

–अव– > ओ माटे जुओ उपर § ३० (१).

प्यास (पिपासा), बेसवुं (उपविशति), पेसवुं (प्रविशति) मां –व्– नो लोप थाय छे ते पूर्वना ओष्ठ्य वर्णनी साथे थयेला सवर्णसामीप्ये-वर्णलोप (dissimilation) ने कारणे छे. जी (? जीवतु) ए संबोधनवाचक शब्द छे अने तेथी वधु फेरफारने पात्र छे.

–र्–, –ल्–

§७०. –र्– एम ने एम रहे छे; –ल्– नो ळ् थाय छे.

–र्–: पाथर (प्रस्तर–), मांजर (मज्जर–), रान (अरण्य–), बार (द्वार–), सुतार (सूत्रधार–), विसरवुं (विस्मरति), ससरो (श्वशुर–), भमरो (भ्रमर–), जाजरुं (जर्जर–), गागर (गर्गरी).

–ल्–: काळ (काल–), पीळुं (पीतल–), फळ (फल–), वाळ (वाल–), मूळ (मूल–), आंगळी (अङ्गुलि–), काजळ (कज्जल–), मेळववुं (मेलयति), आळसुं (आलस–), जळवुं (ज्वलति).

–श्–, –ष्–, –स्–

§७१. –श्–, –ष्–, –स्– नो मभा. स् थाय छे, जे, इ के ई, अं के अ नी पूर्वे अने पछी ज्यां तेनो स् बने छे, ए सिवाय गुजरातीमां एम ने एम रहे छे.

–श्–: कणस (कनिश–), लसण (लशुन–), नास (नाश–), कोस (क्रोश–), पांसरुं (प्रांशु–), दस (दश), मोसाळ (मातृ-शाला), कोस (कोश–).

–ष्–: माणस (मानुष–), कामस (छारी कल्मष–), रुसरुं (रुषति), चुसवुं (चूषति), मासो ('मासो' माप माष–), ऊस (ऊष–), भसवुं (भषति), कसवुं (कषति).

–स्–: भासवुं (भासयति), सास (श्वास–), हसवुं (हसति), चोमास (चतुर्मास–), कपास (कर्पास–), खस (खस–), मुसळुं (मुसल–), घास (घास–), गोरस गोरशी (गोरस–).

–ह्–

§७२. द्विश्रुतिमध्यगत ह् महाप्राण स्पर्श व्यंजनोमां थई मभा. ना ह् साथे एकरूप थाय छे. जूपरा. मां ए सचवाई रहे छे, पण अर्वाचीन गुजरातीमां केटलोक सुधारो पामे छे.

१.१.७.

(१) ए पूर्वना ग् मां मळे छे अने घ् रूपे थाय छे; अने पूर्वे जुदा पडेला बेउ स्वरो संधि पामे छे: घेरुं (गमीर–), घोर < *गहुर–(गह्वर–), वीघुं (विग्रह–), घो (गोधा).

ए प्रमाणे –ह्र– –म्ह्–मां ह् आगला ग् मां लागी जाय छे: घर < *गर्हम् (गृह–), घरण < *गर्हण अथवा तत्सम तरीके < *गरहण– (ग्रहण–) मांथी, घेरवुं < *गर्हयति (गृह्णाति); घिमेल (जिवात) < गिम्ह– (ग्रीष्म–).

(२) ज्यां जुदा पडेला स्वरो सवर्ण होय छे त्यां –ह्– पूर्वना स्पर्श व्यंजनमां लागी जाय छे अने बेउ स्वर संधि पामे छे: भूख < बुहुक्खा (बुभुक्षा).

धी दीकरी पालि. धीता एनो संबंध सामान्य रीते सं. दुहितृ साथे कहेवामां आवे छे.[८०] एम छतां ए एटलो जे वहेलो प्रचारमां आव्यो छे, ते ए संबंध विशे शंका उपजावे छे. एनो "धावुं (suckle)" अर्थना √धे धातु साथे संबंध जोडवो जोइये. (धीदा उपरांत) प्राकृत रूप धूदा छे ते दुहिता नी असरने लीधे छे.

(३) ज्यां –ह्– मूळना बे दीर्घ स्वरने जुदा पाडे छे, त्यां ते अविकृत रहे छे: सोहाग (सौभाग्य–), अहीर (आभीर–).

(४) बीजा बधा संयोगोमां –ह्– नो लघुप्रयत्न –ह्– बने छे (एटले के स्वर अने व्यंजन ह् बन्नेना मध्यवर्ती उच्चारणमां कंठनळी (larynx) थी उच्चारातो ह्). जुदा पडेला स्वरोनी संधि थाय छे, अने ह् नुं लघुप्रयत्न उच्चारण थाय छे, जेनी पूर्वे बहु टूंको स्वर, सामान्य रीते अ, आवे छे; परंतु आसपासना ध्वनिओने अनुसरी तेम ज बोलनाराओ प्रमाणे निःशंक रीते उच्चारणभेद मळे छे, अने वळी कदाच लघुप्रयत्न –ह्– जेम कंठनळी (larynx) थी खुलो पण बोलाय छे; दा. त. कर्हवुं ए कह्अवुं छे.

उतावळी बोलीमां अने अस्वरित स्थितिमां आ लघुप्रयत्न ह् नो लोप थाय छे, अने अशिक्षित लोकोनी बोलीमां आ लघुप्रयत्न हकार तद्दन अदृश्य थई गयो छे. लिखित भाषामां आ ध्वनिनी जोडणी गम्य रीते अनेक रीतनी छे; दा. त. कईवुंने माटे कर्हवुं केहवुं, कॅ'वुं, कवुं लखाय छे. ज्यां ह् सामान्य स्वरूपमां लिखित भाषामां बतावबामां आवे छे त्यां में स्वरनी पछी ह् तरीके जोडणी (अंग्रेजीमां) करी छे.

मोवुं (मोहयति), मोह् (मुख–), पीयर (*पितृ-गर्ह–), वाहण (वाहन–), देहरुं (*देव-गर्ह–), पोहळुं (पृथुल–), पेहलुं (प्रथम–), केहवुं (कथयति), काहणी (कथानक–), मौडो (मधु–), वाहलुं (वल्लभ–), वाहणुं (विभान–), लाहवुं (लाभयति).

ज्यां गुजरातीमां बीजो स्वर अंत्य अने दीर्घ होय छे, त्यां बेउ स्वरनी संधि थती नथी: वहू (वधू–), साहू (साधु–), पही (पथिक–), जुई (यूथिका), दहीं (दधि–), मही (मथित–).

---

८० पिशल, § १४८

निकटमां आवेला व्यंजनो

§ ७३. ज्यां बे के वधु व्यंजनो सामसामा आवे छे, त्यां पूर्वपरवर्णसादृश्य (assimilation) थाय छे. आ पूर्वपरवर्णसादृश्य अशोकना उत्कीर्ण लेखोना समयमां ज पूर्णताए पहोंच्युं हतुं. अपवादरूपे मात्र केटलीक प्रांतीय बोलीओमां ऊष्माक्षर अथवा तो र् जाळवतां केटलांक व्यंजनयूथोनो विषय हतो. व्यंजन समूहोमां पूर्णव्यक्त (explosive) व्यंजन अपूर्णव्यक्त (implosive) व्यंजनने गळी जतो हतो. एथी करी त्क् जेवा व्यंजन समूहमां परिणत ध्वनि क् हतो; दा. त. भक्तम् > भत्तं, ज्यां बंने ध्वनिओ पूर्णव्यक्त (explosive) हता, एटले के पछीना स्वरथी एवा बंने व्यंजनो श्रुति स्थापता हता, त्यारे जेमां संयोग (closure)नी मात्र वधतेरी हती तेनुं प्राधान्य थयुं हतुं; एथी करीने स्पर्श व्यंजन + र् अथवा स्पर्श व्यंजन + अनुनासिक व्यंजन जेवा व्यंजनसमूहोमां स्पर्श व्यंजन बेवडातो हतो; दा. त. तक्रम् > तक्कं, अग्निः > अग्गी. उष्माक्षर गळाई जवाने कारणे ए समूहने महाप्राणित करतो हतो.

केटलाक किस्सामां (कंठद्वारमां एक ध्वनिमांथी बीजा अमुक प्रकारनी स्थिति धारण करे ते वगेरेने कारणे) बे पूर्णव्यक्त (explosive) व्यंजनोनो वधु व्यक्त (open) व्यंजन वधु संकुचित (closed) के प्रधान व्यंजन उपर अमुक चोक्कस असर करतो हतो; दा. त. दंत्य + य् के दंत्य + स् मांथी बेवडो तालव्य; पूर्वनी बोलीओमां क्ष् मांथी च्छ्; दंत्य + व् के म् मांथी बेवडो ओष्ठ्य (केटलीक बोलीओमां बेवडो दंत्य).

ह्य्, ख्य् जेवा समूहमां य् नो ज् थतो अने तेथी य् नुं प्राधान्य थतुं.

आ बेवडा व्यंजनो हेमचंद्र अने जूपरा. ग्रंथोनी वच्चेनो समय नहोतो आव्यो त्यांसुधी जळवाई रह्या हता. आ हेमचंद्र अने जूपरा. ग्रंथोना वच्चेना समयमां, पूर्व वर्णना दीर्घ थवानी साथे बेवडा व्यंजनो बधा ज एकवडा थई गया छे; अपवादरूपे मात्र अस्वरित श्रुतिओमां स्वर ह्रस्व रह्यो (या दीर्घमांथी ह्रस्व बन्यो). अनुनासिक व्यंजन + व्यंजन ए समूहमां अनुनासिकता पूर्वना स्वरमां गई छे, अने ते पूर्वनो स्वर बेवडा व्यंजनना पूर्वना स्वर जेम दीर्घ बन्यो छे.

स्पर्श व्यंजन + स्पर्श व्यंजन

§ ७४. एकना एक (homorganic).

क्क्: कुकडी (कुक्कुटी), हीक (हिक्क–), चीक (चिक्कन–).

च्च्: ऊंचुं (उच्च–), खीची (खिच्चा), उचरवुं (उच्चरति), उचणवुं (उच्चिनोति), उचळवुं (उच्चलति).

च्छ्: पुछवुं (पृच्छति), इछवुं (इच्छति), छे (पालि. अच्छति), पुछडुं (पुच्छ–), पीछुं (पिच्छ–), अणछ (अनिच्छा), काछ (कच्छाः कक्ष–).

ज्ज्: लाज (लज्जा), साज (सज्ज–), भुजवुं (भृज्जति), काजळ (कज्जल–), उजागरो (HD उज्जागिरो).

ट्ट्: आटो (अट्ट–), कुटणी (कुट्टिनी), कूट (कुट्ट–), कोट (कोट्ट–), हाट (हट्ट–), पाट (पट्ट–).

ट्ठ्: उठवुं <*उट्ठित–(उत्थित–), उठाव (उत्थापक–).

ड्ड्: उडवुं (उड्डयति), हाड (हड्ड–), आड (अड्डति).

त्त्: छीत (छित्ति–), मातुं (मत्त–), वीत (पैसो वित्त–), तीतर (तित्तिर–). उतरवुं (उत्तरति), उतळुं (उत्तल–).

द्द्: कुदाळी (कुद्दाल–).

द्ध्: शीधुं (सिद्ध–), सूध (शुद्धि–), जोध (योद्ध–), बूध (बुद्ध–).

प्प्: पिपळो (पिप्पल–), पीपर (*पिप्परी).

§७५. विभिन्नवर्णीय (heterorganic) जोडाक्षरोना समूहमां पहेला स्पर्श व्यंजननुं परवर्णसादृश्य थाय छे:

त्क्: माकण (मत्कुण–). उकरडो (उत्कर–), उकळवुं (उत्कलयति).

त्ख्: उखणी (उत्खनति).

द्ग्: पाग (पद्ग–), उगामवुं (उद्गामयति), उगमण (उद्गमन–), उगरवुं (उद्गिरति), उगार (उद्गार–), मोगर (मुद्गर–).

द्घ्: उघाड (उद्घाट–).

क्त्: भात (भक्त–), रातुं (रक्त–), सातू (शक्तु–), मोती (मौक्तिक–).

प्त्: सात (सप्त–), तातुं (तप्त–), सुतो (सुप्त–).

ब्द्: साद (शब्द–).

ग्ध्: दूध (दुग्ध–), दाधेल (दग्ध–).

ब्ध्: लाधवुं (लब्ध–).

त्प्: उपजवुं (उत्पद्यते), उपणवुं (उत्पुनाति), उपाववुं (उत्पादयति), उपाडवुं (उत्पातयति).

द्भ्: उभरो (उद्भरति), उभा (उद्भात–).

अनुनासिक व्यंजन साथेना समूहो

§७६. स्पर्श व्यंजन+अनुनासिक व्यंजन

(१) कंठ्य+न् ना समूहमां न् नुं पूर्ववर्णसादृश्य थाय छे.

क्न्: मुकवुं (प्रा. मुक्क –<*मुक्न–: मुक्त–). डो. ब्लोक आ व्युत्पत्तिने नकारे छे.[८१] परंतु प्त् > ग्ग् ना, तेवी व्युत्पत्ति अने कृदंत प्रत्यय तरीके न नुं वारंवार आववुं ए पिशलना मतने अनुकूळ छे, अने तेथी तेणे *मुक्न रूप आगळ धर्युं छे.[८२]

ग्न्: नागुं (नग्न–), आग (अग्नि), भागुं (भग्न–).

---

८१ ब्लोक, §९४

८२ पिशल, §५६६

(२) ज्ञ् : ए समूहमां ज् नुं परवर्ण सादृश्य थयुं छे. परिणाम ञ्ञ् > ण्ण् > न् आव्युं छे.

ज्ञ् : राणी साथोसाथ रानी (राज्ञी), आन (आज्ञा), जनोई (यज्ञोपवीत), विनववुं (विज्ञपयति), नाणवुं (ज्ञान–)

(३) त्म् > प्प्, प्न् > म्म्

त्म् : आपण (आत्मन्–).

प्न् : पामवुं (प्राप्नोति); समणुं ए *साणुं (स्वप्न–) मांथी जोडकुं रूप छे अने *सिवणुं < प्रा. सिविण–, भायु. सुर्पर्ना.

§७७. पूर्वना स्वरना मानप्राप्त दीर्घीभवन साथे बेवडा अनुनासिक व्यंजनो एकवडा बन्या छे : मभा. ण्ण् > न् आ पाछलो फेरफार जूपरा. मां थयो छे.

ण्ण् : कान < कण्ण– (कर्ण–), पान < पण्ण– (पर्ण–).

न्न् : छानुं (छन्न–), आन (अन्न–), भीनुं (भिन्न–), किनरी (किन्नर–), अनाज (अन्नाद्य–).

म्म् ; दाम (द्रम्म–), समारवुं (*सम्मारयति).

§७८. अनुनासिक व्यंजन + स्पर्श व्यंजन के उष्माक्षरना समूहमां अनुनासिक व्यंजननो लोप थाय छे अने पूर्वनो स्वर सानुनासिक बने छे; अने जो ते स्वर स्वरित श्रुतिमां होय छे तो दीर्घ थाय छे.

आम छतां, ज्यारे अर्वा. गुजरातीमां घोष व्यंजन शब्दने अंते आव्यो होय छे त्यारे स्वर + अनुनासिक व्यंजन + स्पर्श व्यंजनना समूहनुं ए व्यंजन बीजा व्यंजन के स्वरनी पूर्वे आव्यो होय ते प्रमाणे संधिना तफावतने कारणे बे जातनुं परिणाम आवे छे. आ म्ब् ना विषयमां बहु ज सामान्य छे; परंतु, लखवामां नथी आवतुं, छतां – ङ्ग् अने न्द् ना विषयमां पण केटलीये वार संभळाय छे; दा. त. आंग के आण, चांद के चान, सांब के साम, आंबा साथोसाथ आम, लूम (HD लुम्बी), खाम के खांब(भ).

ङ्क् : आंकडी (अङ्क–), कांकण (कङ्कन–), रांक (रङ्क–).

ङ्ख् : सांक(ख)ळ (शृङ्खला).

ङ्ग् : आंग (अङ्ग–), आंगळ (अङ्गुलि–), भांगवुं (*भज्ञ्यते), शींग (शृङ्ग), आंगणुं (अङ्गन–), कांग (कङ्गु–), पांगळुं (पङ्गुल–), रांगडुं (बीजुं चालतुं रङ्गति), अँगूठो (अङ्गुष्ठ–), भिँगारी (भृङ्ग–), अँगारो (अङ्गार–).

ङ्घ् : जांघ (जङ्घा), लांघवुं (लङ्घति).

ञ्च् : पांच (पञ्च–), चांच (चञ्चु–), आंचळ (अञ्चल–), लांच (लञ्चा), कांचळी (कञ्चुकी), कूंची (कुञ्चिका), सांचरवुं (सञ्चरति), सांचवुं (सञ्चय–).

ञ्ज् : आंजणी (अञ्जन–), भांजवुं (*भञ्जति), पांजरुं (पञ्जर–), लांजो (ज्ञचडो लज्जति), पिंजवुं (पिञ्जा), मँजीठ (मञ्जिष्ठा).

न्ध् : जुओ सांझ (सन्ध्या), वांझ (वन्ध्या).

ण्ट् : कांटो (कण्ट–), वांटो (वण्ट–), घूंटी (घुण्टक–), चुँटवुं (चुण्टति), लुँटवुं (लुण्टति).

ण्ठ्: सूंठ (शुण्ठि–), चुँठवुं (कचकावबुं चुण्ठयति), लूंटं (लुण्ठति).

ण्ड्: दांडी (दण्ड–), खांडवुं (खण्डते), आंड (अण्ड–), मांडवुं (मण्डते), तांडळा (ताण्डुल–), भांड (भण्ड–), मूंडन (मुण्डन–), रांड (रण्डा), मांडवाँ (मण्डप–).

न्त्: दांत (दन्त–), कांत (कान्त–), सांत (श्रान्त–), आंतरडी (अन्त्र–), तांत (तन्तु–), सांतवुं (शान्त–), वांतरवुं (व्यन्तर–).

न्द्: फांदो (स्पन्द–), चांद (चन्द्र–), खुँदवुं (*क्षुन्दति), नांदियाँ (नन्द–), कांदो (कन्द–), शिँदूर (सिन्दूर–).

न्ध्: आंधी (अन्धिक–), खांद(ध) (स्कन्ध–), गांधी (गन्धिक–), बांध (बन्ध–), सांध (सन्धि–), आंधलुं (अन्ध–), रुँधवुं (रुन्धति).

म्प्: कांप (कम्प–), चांपुं (चम्पक–), लिँपवुं (लिम्पति), सांपडवुं (सम्पतति).

म्ब्: लांबुं (लम्ब–), कांबळी (कम्बल–), ऊँबी (उम्बिका), जांबु (जम्बू–), ऊंबर (उदुम्बर–), साम (शम्ब–), लूम (HD लुम्बी), आम (प्रा. अम्ब– < आम्र).

म्भ्: लांभुं (लम्भ–), कूंभ (कुम्भ–), कुँभार (कुम्भकार–), खाम (स्कम्भ–).

ह्म् > म्ह् > म्भ्, सरखावो सांभरवुं (संस्मरति).

ंश्: वांस (वंश–), सांसो (संशय–), पांसरुं (प्रांशु–).

ंस्: कांसां (कांस्य–), कांस (कंस–), हांस (हंस–).

§७९. स्वरित श्रुति पछीनी श्रुतिओमां अनुनासिकता लुप्त थई छे. आ प्रक्रिया जूगुरा. ना ग्रंथोमां चालु हती, ज्यां वर्तमान कृदंतोने अंते –अन्तउ, –अंतउ, –अतउ (गु. –तो) आवता हता; दा. त. पुछतो, जूगुरा. पुछतउ, पुछंतउ < प्रा. पुच्छन्तओ. ए रीते एक पचास पछी पचास (पञ्चाशत्) वगेरे. सरखावो कादव < *कांदँव (कर्दम–).

य्–वाळां यूथ

§८०. 'कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य के ओष्ठ्य + य' एवां यूथमां य् नुं पूर्ववर्णसादृश्य थई जाय छे.

क्य्: वाक (वाक्य–), शीकुं (शीक्य–).

ख्य्: वखाण (व्याख्यान–), उखाण (*उपख्यान–).

ग्य्: लागवुं (लग्यति), भागवुं (भग्यते), सोहाग (सौभाग्य–), भाग (भाग्य–), जोग (योग्य–).

च्य्: राचवुं (रच्यते), रुचवुं (*रुच्यति : रोचते), चुवुं (च्युत–).

नीचुं ए *नीच्य– मांथी नथी, पण उच्च– ने अनुसरी –च्च्– वाळा प्रा. निच्च– मांथी छे. काच– ए जूनो तत्सम छे; सं. काच– मांथी प्रा. कच्च– छे (जुओ § ८).

ज्य्: राज (राज्य–), वणज (वाणिज्य–), जेठ (ज्येष्ठ–).

ट्य्: तुटवुं (त्रुट्यति), फुटवुं (स्फुट्यते), फाटवुं (*स्फाट्यति : स्फटते), घाट (*घट्य–: घटते).

ढ्य् : जाडुं (जाढ्य –).

प्य् : दिपवुं (दीप्यते), रोपवुं (रोप्यते), लोपवुं (लोप्य – : लोपयति), माप (माप्य –).

भ्य् : लाभवुं (लभ्यते).

§ ८१. दंत्य + य् ना यूथनो बेवडो तालव्य थाय छे.

त्य् : साचुं (सत्य –), नाच (*नर्त्य – के नृत्य –).

बीजुं < *द्विय ए *द्वित्य – मांथी पूर्ववर्णसादृश्य (assimilation) थये थयुं छे.

द्य् : खीज (खिद्यते), खाज (खाद्य –), सिजवुं (खिद्यति), आज (अद्य), वाजुं (वाद्य –), वीज (विद्युत्), अनाज (अन्नाद्य –), निजवुं (ऊंघवुं) < *निद्यति (निद्रा), मोजी (मोद्यते), छाजवुं < *छाद्यति (छादयति), ऊजम (उद्यम –).

ध्य् : सिझवुं (सिध्यति), रिझवुं (ऋध्यति), जुझवुं (युध्यते), सुझवुं (शुध्यति), झाझुं < *अध्यध्यक – (अध्यधि), सांझ (सन्ध्या), वांझ (वन्ध्या), झांख (अध्यक्ष –).

§ ८२. 'अनुनासिक, ल्, व् के उष्माक्षर + य्' एवा यूथमां य् नुं पूर्णवर्णसादृश्य (assimilation) थाय छे.

ण्य् : पून (पुण्य –), रान (अरण्य –).

न्य् : सूनुं (शून्य –), धान (धान्य –), मानवुं (मन्यते), आन (अन्य –), नाखवुं (न्यक्ष –), नगोड (न्यग्रोध –).

म्य् : समावुं (शाम्यति), घुमवुं (HD घुम्मइ < *घुम्य –).

ल्य् : काल (कल्यम्), मूल (मूल्य –), शेल (शैल्य –), तेल < *तैल्य – (तैल –), पलाण (पल्याण –).

व्य् : सिववुं (सीव्यते), अवावरुं (अ + व्यापार –), भाववुं (भाव्यते), वाघ (व्याघ्र –), वेरवुं (व्याकिरति), वाम (व्याम –).

गाऊ (गव्यूति –) ने माटे जुओ § ६९ (२)

श्य् : नासवुं (नश्यति), दिशवुं (दृश्यते), सामळुं (श्यामल –).

ष्य् : भविष्यकाळनो – इष्यामि > प्रा. – इस्सं, गु. – ईश.

स्य् : साळो < स्याल –).

§ ८३. र्य्, ह्य्, ना यूथमां र् अने ह् नुं परवर्णसादृश्य (assimilation) थाय छे अने परिणत य्य् य्ह् ना ज् ज्झ् थाय छे.

र्य् : काज (कार्य –), आर्जा (मानो बाप आर्य –), थिजवुं < *स्थिर्यति (स्थिर –), धीज (धीर्य –).

ह्य् : दाझवुं (दह्यते), दुझवुं (दुह्यते), मुझावुं (मुह्यति).

य्य् : सेज प्रा. सेज्जा (शय्या), एमां शेते नी असरे ऍ आव्यो छे.

र् वाळां यूथ

§८४. र् धरावनारां यूथोमां र् नुं पूर्वपरवर्णसादृश्य (assimilation) थाय छे. म्र्, अने कदाच न्र्, धरावनार यूथमां, लगतो घोष व्यंजन अनुनासिक अने र् नी वच्चे विकास पाम्यो, जेथी करी आ यूथनुं म्ब्र्? न्द्र् थयुं, जेनो प्रा. म्ब् न्द् मां अंतर्भाव थयो.

क्र्: ताक (तक्र–), चकवा (चक्रवाक–), वांक (वक्र–), कोस (क्रोश), चाक (चक्र–).

र्क्: ताकवुं (तर्कयति), माकडी (मर्कट–), आकडो (अर्क–), काकडी (कर्कट–), साकर (शर्करा), काकर (कर्कर– करवतना आंका).

ग्र्: आगुं (अग्र–), वीघुं (विग्रह–), जागवुं (जाग्र–), गाम (ग्राम–), गांठ (ग्रन्थ–).

र्ग्: मागवुं[८३] (मार्गति), माग (मार्ग–), आगळी (अर्गली), चोगणुं[८४] (चतुर्गुण–), मागसर (मार्गशिर–), गागर (गर्गरी–).

घ्र्: वाघ (व्याघ्र–), घाण (घ्राण–).

र्घ्: सोंघुं (समर्घ–), मोंघुं (महार्घ–), घाघरी (घर्घरी).

र्च्: आंच (अर्चिस्–), जाचवुं (जर्चति), कूर्चो (कूर्च–).

र्ज्: माजवुं[८३] (मार्जति), गाजवुं (गर्जति), गाजर (गर्जर–), जाजरो (जर्जर–), गुजरी (गुर्जर–), भोजाई (भ्रातुर्जाया), मँजार (मार्जार–).

र्झ्: झाझर (झर्झर–).

प्र्: प्यार (प्रियकार–), पथारो (प्रस्तार–), पाखर (प्रक्षर–), पाथरवुं (प्रस्तरति), पामवुं (प्राप्नोति), पोखवुं (प्रोक्षते), पोण (प्रवचन–), पेखवुं (प्रेक्षते), पखाळवुं (प्रक्षालयति), पांसरुं (प्रांशु–).

र्प्: साप (सर्प–), आपवुं (अर्पयति), सोंपवुं (समर्पयति), पापड (पर्पट–), कापड (कर्पट–), कोपरियुं[८४] (कोणी कोर्पर–).

र्ब्: दुबळुं (दुर्बल–), साबर (शबर–), काबरुं (कर्बुर–), आबू (अर्बुद–).

भ्र्: आभ (अभ्र–), भमवुं (भ्रमति), भाई (भ्रातृ–), भाजियुं[८५] (*भ्रजित).

र्भ्: गाभ (गर्भ–), गाभणी (गर्भिणी), चिभडी (चिर्भटिका), दुभावो (दुर्भाव–), डाभ (दर्भ–), निभाववुं (निर्भू–), भाभो (मूर्ख, सरखाओ भर्भरा).

त्र्, र्त्, र्थ्, द्र्, र्द्, ध्र्, र्ध् माटे जुओ § ४३.

र्ण्: कान (कर्ण–), पान (पर्ण–), सोनुं (सौवर्ण–), वान (वर्ण–), ऊन (ऊर्ण–), जूनुं (जूर्ण–), चून (चूर्ण–), जीणुं (जीर्ण–).

---

८३ आ बेउ शब्द माटे आ पूर्वे सूचवायुं छे. –अनुवादक

८४ आ बेउ शब्दमां ग अने प मां प्रो. टर्नरे अ नथी लख्यो. त्यां ते पूर्ण प्रयत्न छे. –अनुवादक

८५ प्रो. टर्नर भाजियुं लखे छे, पण ते भजियुं जोइये. –अनुवादक

र्म् : चाम (चर्मन् –), काम (कर्मन् –) कामण (कार्मण –), घाम (घर्म –), धाम (धर्म –), धामण (धर्मण –).

म्र : (अ) शब्दारंभे > म् – : माखण (म्रक्षण –); (आ) शब्दनी वचे > – म्ब् – – म् : आंबा (आम्रक –), तांबुं (ताम्र –), आम (आम्र –).

र्य् : माटे जुओ § ८३.

र्ल् : निलाजरुं (निर्लज्ज –), दूलुं (दुर्लभ –).

र्व् : चाववुं (चर्वति), साव (सर्व –), कावरुं (उश्केरायेलुं कर्वर –) चौवाटं (चतुर् + वृत्त –).

श्र् : सासू (श्वश्रू –), विसामा (विश्राम –), सांत (श्रान्त –), चौरस (चतुरश्र –).

र्श्व् : पार्स (पार्श्व –).

र्ष् : शीश (शीर्ष –), घसारा (घर्ष –)

फरसुं (स्पर्श –), आरशी (आदर्श –). सरसव (सर्षप –) माटे जुओ § ३२.

स्र् : माशी < * माइसासी < मातृस्वस्रिका.

ल् – वाळां यूथ

§ ८५. ल् + **स्पर्शव्यंजन** के म् : **आमां** ल् **परवर्णसादृश्य** (assimilation) **पामे छे.**

ल्ग् : फागण (फाल्गुन –), फाग (फल्गु –), गूगळ (गुल्गुलु –).

ल्प् : काप (कल्प –), कापवुं (कल्पति).

ल्म् : कामस (कल्मष –), गुमडुं (गुल्म –).

§ ८६. (१) ल् + य्, व् के ह्, **अने** र् + ल् : **आमां** य् व् ह् र् **पूर्ववर्णसादृश्य** (assimilation) **पामे छे.**

ल्य् : **माटे जुओ** § ८२.

ल्व् : बील (बिल्व –).

ल्ह् : कोलुं (शियाळ हेम० देशी० कोल्हुआ).

र्ल् : **माटे जुओ** § ८४.

ल्ल् : फूल (फुल्ल –), उलाळ (उल्लति), चील (चिल्ल), गाल (गल्ल –), खाल (चामडी खल्ल –), छाल (छल्लि –), भील (भिल्ल –), झालर (झल्लरी).

(२) अनुस्वार + ल् ए यूथमां अनुस्वार लुप्त थाय छे, जो सळगवुं ए संलग्न – नी साथे संबंध राखतुं होय तो.

व् – वाळां यूथ

§ ८७. (१) **कंठ्य, तालव्य, के मूर्धन्य स्पर्शव्यंजन + व् : आमां व् नुं पूर्ववर्णसादृश्य** (assimilation) **थाय छे.**

क्व् : पाकुं (पक्व –).

ज्व् : उजळुं (उज्ज्वल –), जळवुं (ज्वलति), जर (ज्वर –).

ट्व् : खाट (खट्वा).

(२) दंत्य + व्‌नो बेवडो ओष्ठ्य थाय छे; जुओ. §५१.

त्व्‌: -पण < -त्वन-, रँडापा < *रण्डत्व-, काळप बाळप < -त्व-.
द्व्‌: बार (द्वार-), बे (द्वे), बत्रीस (द्वा-), बीजुं (द्वितीय-).
ध्व्‌: ऊभुं (ऊर्ध्व-).

(३) ल्‌+व्‌: आमां व्‌नुं पूर्ववर्णसादृश्य थाय छे; जुओ §८५.

(४) उष्माक्षर+व्‌: व्‌नुं पूर्ववर्णसादृश्य थाय छे.

श्व्‌: पार्स (पार्श्व-), निसासा (निःश्वास-), सास (श्वास-). ससरा (श्वशुर-).
ष्व्‌: माशी (मातृस्वसिका).
स्व्‌: साथिया (स्वस्तिक-).

(५) र्य्‌, र्व्‌: एमां य्‌ अने र्‌नुं परवर्णसादृश्य (assimilation) थाय छे, जुओ §८२,८४.

(६) ह्व्‌ > ज्भ्‌: जीभ (जिह्वा).

उष्माक्षरवाळां यूथ

§८८. उष्माक्षर+स्पर्श व्यंजननो बेवडो महाप्राण स्पर्श व्यंजन थाय छे.

श्च्‌: पाछी[८६] (पश्चात्), वीछी (वृश्चिक-), तिरछुं (तिरश्च-).
ष्क्‌: सूखुं[८६] (शुष्क-), विखरवुं वखेरवुं (विष्किरति).
ष्ट्‌: दीठुं (दृष्ट-), वुठवुं (वृष्ट-), आठ <(अष्टौ), पीठ (पिष्ट-), रुठवुं (रुष्ट-), नाठुं (नष्ट-), मीठुं (मृष्ट-), मूठी (मुष्टि-), काठुं (कष्ट-दुष्ट).
ष्ठ्‌: अँगूठा (अङ्गुष्ठ-), काठ (काष्ठ), पूठ (पृष्ठ-), कोठ (कोष्ठ-) गोठ (गोष्ठ-), जेठ (ज्येष्ठ-), शेठ (श्रेष्ठिन्‌-), ठाम < *स्थाम- (स्थामन्‌-).
स्क्‌: वखार (वक्षस्कार-), खाम (स्कम्भ-), खांद(ध) (स्कन्ध-).
स्ख्‌: खाळवुं (स्खलयति).
स्त्‌: हाथ (हस्त-), माथुं (मस्तक-), पाथर (प्रस्तर-), साथिया (स्वस्तिक-), भाता(था) (भस्त्र-), साथरा (स्रस्तर-), नाथ[८७] (नाकनी नस्ता), आथ (अस्त-नाणानो कोठार), आथमणुं (अस्तमन-), थर (स्तर-).
स्थ्‌: थाणुं (स्थान-), थावर (स्थावर-), थाळ (स्थाली), थोर (वृद्ध *स्थवर-(स्थविर-), सांथ (संस्थि-).
स्प्‌: फांदा (स्पन्द-).
स्फ्‌: फाटवुं (स्फटते), फार (वधु स्फार-), फरवुं (स्फरति), फुटवुं (स्फुट्यते), अफाळवुं (आस्फाल्यति).

§८९. स्पर्श व्यंजन+उष्माक्षर

---

८६ अत्यारे वपराशमां पछी अने सूकुं छे; काठियावाडमां पछे. -अनुवादक
८७ आपणे त्यां नाकनी नथ कहेवाय छे, ज्यारे बळदनी नाथ. -अनुवादक

(१) क्ष् नो क्ख् थाय छे : लीख (लिक्षा), लाख (लाक्षा), शीख (शिक्षा), आखुं (अक्षत–), ओखणवुं (अवक्षणोति), ओळखवुं (उपलक्षते), खीर (क्षीर–), खोवुं (क्षपण–), खमवुं (क्षमते), खण (क्षण–), साख (साक्ष्य–), तीखुं (तीक्ष्ण–).

तीखुं साथोसाथ तीणुं पण. मराठी अने नेपाळीमां क्ष्णूनी द्विविध प्रक्रिया जोवामां आवे छे. दा. त. मराठी सान (श्लक्ष्ण) साथोसाथ मराठी तीखा (तीक्ष्ण–); नेपाळी सार्नो (श्लक्ष्ण) साथोसाथ नेपाळी तीर्खो. आ तफावत प्राकृतमां[८८] मळी आवे छे के ज्यां पम्ह–(पक्ष्म–) जेम मळे छे तेम तिक्ख–, तिण्ह, सण्ह– जोवामां आवे छे. पिशले मार्कंडेयनी नोंध बतावी छे के तिक्ख–मां मूळ शब्दनो अर्थ छे ज्यारे तिण्ह–मां शब्दार्थमांथी फलित थतो अर्थ छे, ते वस्तु आ खास हिस्सामां तीणुं रूपना पक्षमां जाय छे, ए बीजी कोई प्रांतीय बोलीमांथी उछीनो शब्द छे एम.

नीचेना शब्दो छ– जाळवनारी प्रांतीय बोलीमांथी उछीना आवेला छे : काछ (कच्छा : कक्ष–), रीछ (ऋक्ष–), छुरो (छुर– : क्षुर–), ताछ (तक्ष–), छ ६ (* क्ष्वक्ष्–), खार साथोसाथ छार (क्षार–), ऊस < *ऊछ (उत्तर गुजरातनो के मराठी, < इक्षु–), विछळवुं (विक्षल्–), खुंदवुं साथोसाथ छुंदवुं (क्षुद्–).

(२) त् के प् + स् नो च्छ् थाय छे.

त्स : वाछ (वत्स–), माछो (मत्स्य–), छर (छरो त्सरु–), उछरवुं (उत्सरति).

प्स् : गूछो (गुच्छ– : गृप्स–).

§९०. उष्माक्षर + अनुनासिक

(१) ष्ण्, स्न् नो न्ह् थाय छे.

ष्ण : ऊनुं(न्हुं) (उष्ण–), उना(न्हा)ळो (उष्णकाल–).

स्न् : पानव (प्रस्नव–प्रास्रवो), न्हावुं (स्नाति), न्हाणुं (स्नान–), नेह (स्नेह–).

(२) श्म्, ष्म्, स्म् : माटे जुओ. §५३.

§९१. उष्माक्षर + य्, र् के व्; अने र् + उष्माक्षर : य्, र्, व् नुं प्रथम हिस्सामां पूर्ववर्णसादृश्य अने पछीना हिस्सामां परवर्णसादृश्य (बंने हिस्सामां उष्माक्षर थवानुं) थाय छे. श्य्, ष्य्, स्य्, माटे जुओ §८२; श्र्, स्र्, र्श्, र्ष्, र्स् माटे जुओ §८४; श्व्, ष्व्, स्व् माटे जुओ §८७ (४).

§९२. :क्, :ख्, :प् ना क्क्, क्ख्, प्प् बने छे : चोक प्रा. चउक्क < *चतुःक– (चतुष्क–), दुखवुं (प्रा. दुक्ख– सं. दुःख–), चोपाई < *चतुःपाद (चतुष्पाद–),

गुजराती अने आदिम भारतीय ध्वनिओना संबंधनी तारवणी

§९३. नीचे आपेला कोठामां डाबी बाजूए छपायेल विशेष काळो स्वर ए गुजराती ध्वनि छे, जमणी बाजूना आ. भा. ना छे, जो खास त्यां बीजुं सूचन न होय तो. स्वरोनी नजीकना अंक आ पूर्वे ना १ थी ९२ सुधीना वाक्यखंडो (paragraphs) ना छे. –अनुवादक

८८ पिशल, §३१२

अ=अ १७,२१,२३
इ २३(२),२४(१)
उ २३(३),२४(१)
आ २३(३)
ऋ १८

आ=आ १७
अ १९
ऋ १८
म.भा. अ आ+अ आ २७(१)
म.भा. अआइं ६६ (२)

इ = इ १७,२३(२)
ई २०,२१,२३(३)
ऋ १८

ई = ई १७
इ १९
ऋ १८
ए १७
म.भा. इई +इई २७ (१)
म.भा. इआ २७(३)
म.भा. इउ २७(३)
म.भा. इअं २७(४)
म.भा. इउं २७(४)

उ = उ १७,२१,२३(२)
ऊ २०,२१,२३(३)
ऋ १८
आमि ५७(२)(आ)

ऊ=ऊ १७
उ १९
ऋ १८
म.भा. उऊ+उऊ २७ (१)
म.भा. उआ २७ (५)
म.भा. उअ २७ (५)

ॲ=ए २३ (३)
ऐ २३ (३)
म.भा. अउ २८ (३) (अ),(आ)

ॳ=ए १७
ऐ १७
अय ३० (१)
आ ३१
म.भा. अं १९
म.भा. ॳअ २७ (२) (अ)
म.भा. ॳउ २७ (२) (अ)
म.भा. अॳ २७ (२) (इ)

ऑ=ओ २१,२३(३)
औ २३(३)
म.भा. अउ २८ (३) (अ),(आ)

ओ=ओ १७
औ १७
अव ३०(१),(२)
म.भा. ऑ १९
म.भा. ओअ २७ (२) (अ)
म.भा. अओ २७ (२) (इ)
म.भा. अउ २८(१)

ॲ=म.भा. अइ २८ (२) (अ)

ऐ=म.भा. अइ २८ (२) (अ)
म.भा. अई २८ (२) (अ)
म.भा. अय ३० (३) (अ)
अ ३३

ऑ=म.भा. अउ २८ (२) (आ)

औ=म.भा. अउ २८ (२) (आ)
म.भा. अऊ २८ (२) (आ)
म.भा. अव ३० (२), (३)
म.भा. ओआ २७ (२)
म.भा. ओइ २७ (२) (आ)

क्=क् ५७
क्ृ ७४
त्क् ७५
क्क् ७६(१)
क्क्क् ७८
क्ष् ८४
र्क् ८४
क्य् ८०
क्व् ८७ (१)
:क् ८८
ग्व् ४०

ख्=ख् ५७
त्ख् ७५
ख्ख् ७८
ख्य् ८०
ष्क् ८८
स्क् ८८
स्ख् ८८
क्ष् ८९ (१)
क्ष्ण् ८९ (१)
:ख् ८८

ग्=ग् ५७
द्ग् ७५
ग्ग् ७६
ग्ग्ग् ७८

*

शुद्धिपत्र

पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	चडाई	चढाई
३	१०	गुर्जरो	गुजरो
,,	३५	Dilacts	Dialects
१४	१९	हिं. द्र.	हेम. देशी.
१६	छेल्ली ३०–३१ ए बंने पाद टीप अनुवादकनी छे.		
२१	१८,२०	हिं. द्र.	हेम. देशी.
२२	२३	परिक्षते	परीक्षते
,,	२५,३३,३४	हिं. द्र.	हेम. देशी.
२३	३	,,	,,
२४	१८	मने	अने
३१	४	(assimiation)	(assimilation)
,,	२३,३०	पूर्व-परभाव –	पूर्व-परवर्णसादृश्य –
,,	२४	(:ɒóvɒpov)	(:देन्द्रोन्)
,,	३१	परभाव	परवर्णसादृश्य
३३	१९,२४	,,	,,
३७	२१	(जड्ड –	(जड –
३८	२८	गुजराती	गुजरातीने
४६	२	matic	matic
४८	२६	सांपवुं	सोंपवुं
४९	५	रखावट	रखावट
५१	९	मात्र	मात्रा
,,	२६	बेयडा	बेवडा

५२ थी ५६ मां ज्यां ज्यां HD छे त्यां हेम. देशी. वांचवुं.

*   *   *